भारत और भगवान

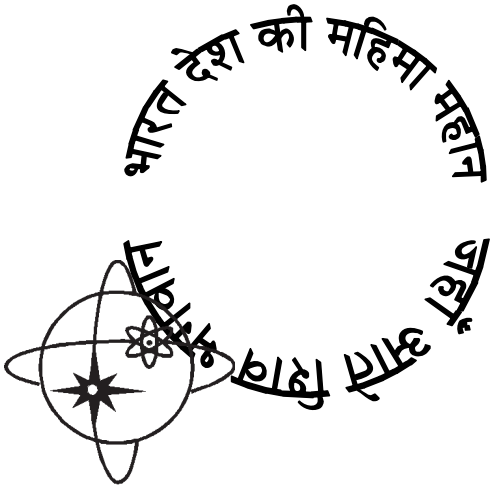

प्रस्तावना

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्हम्।
जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयशी।

''भारत श्रेष्ठाचारी था, अभी नहीं है। भ्रष्टाचारी ही श्रेष्ठाचारी बनते हैं। भारत की नई रचना की कहानी कोई जानते हीं नहीं हैं।... भारत की नॉलेज है ना। प्राचीन भारत की नॉलेज किसने दी ? ... प्रलय भी नहीं होती है। भारत तो अविनाशी खण्ड है। भारत की बहुत महिमा करनी है। भारत सब खण्डों में श्रेष्ठ है। सम्पूर्ण विनाश कभी नहीं होता है।''

सा.बाबा 16.12.03 रिवा.

भारत ज्ञान-सागर, विश्व-पिता परमात्मा का अवतरण स्थान है। ज्ञान सूर्य परमात्मा की अवतरण भूमि भारत विश्व के आगे लाइट हाउस है, जिसके ज्ञान प्रकाश से सारा जगत प्रकाशित है। विश्व-परिवर्तन की निमित्त गीता ज्ञान की अमृत-धारा भारत से ही विश्व में बहती है, भारत अविनाशी भूमि है, भारत सभ्यता का आदि स्थान, सर्व धर्मों के बीज आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना का आदि स्थान है, भारत ही स्वर्ग बनता है। भारत के उत्थान और पतन से विश्व के उत्थान और पतन का गहरा सम्बन्ध है। ऐसी महान भूमि पर जन्म लेना, परमात्मा की पालना में पलना, सत्य ज्ञान को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुर-दुर्लभ सुखद अनुभव करना परम भाग्य है। ऐसी भारत भूमि के महत्व को जानना और सर्व के समक्ष उजागर करना हमारा परम कर्तव्य है, जिससे वे भी इसके महत्व को जानकर अपने जीवन को धन्य-धन्य अनुभव करें।

विश्व का इतिहास और भूगोल भारत के उत्थान और पतन की कहानी है, उसको जानना और भारत भूमि में जन्म लेने का गौरव प्राप्त करना बहुत बड़े स्वमान की बात है।

विषय सूची

प्रथम अध्याय (First Chapter)

भारत और सृष्टि की संरचना
विश्व के उत्थान-पतन की कहानी और उससे भारत का सम्बन्धभारत और स्वर्ग-नरक एवं सुख-दुख
भारत और मानव जीवन
भारत और विश्व-नाटक
भारत का उत्थान और पतन
भारत का उत्कर्ष
भौगोलिक उत्कर्ष
- भारत की भौगोलिक स्थिति
- भारत की सीमाओं की स्थिति - कहाँ और कितनी
- सतयुग-त्रेता युग में भारत की सीमाओं का विस्तार
- द्वापर-कलियुग में भारत की सीमाओं का संकुचन
- वर्तमान भारत और प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप

ऐतिहासिक उत्कर्ष
- कल्प-वृक्ष
- सृष्टि-चक्र
- सतयुग
- श्रीकृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का भारत
- त्रेतायुग
- राम-सीता का भारत
- द्वापर युग
- राजा विक्रमादित्य का भारत
- कलियुग
- पुरुषोत्तम संगमयुग
- ब्रह्मा-सरस्वती और ब्रह्माकुमार-कुमारियों का भारत

भारत का आध्यात्मिक उत्कर्ष अर्थात् आध्यात्मिक समृद्धि
भारत का भौतिक उत्कर्ष अर्थात् भौतिक समृद्धि
भारत का धार्मिक उत्कर्ष - विभिन्न धर्मों की शरण स्थली
भारत का राजनैतिक उत्कर्ष
भारत का सांस्कृतिक उत्कर्ष
भारत का प्राकृतिक उत्कर्षभारत का चारित्रिक उत्कर्ष
भारत और भारतीय सभ्यता
भारत और भक्ति-भावना, कर्म-काण्ड आदि
भारत और सन्यास मार्ग अर्थात् निवृत्ति मार्ग
भारत और काल-चक्र

भारत का गौरवमय भूतकाल
भारत का गौरवमय भविष्य
भारत का गौरवमय मध्यकाल और तमोप्रधान वर्तमान समय
संगमयुग महान अर्थात् भारत का गौरवमय वर्तमान
ब्राह्मण जीवन महान
ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य महान
परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा का साथ महान
भारत देश महान, आबू तीर्थ, पाण्डव भवन की भूमि, देलवाड़ा
मन्दिर की महानता का राज़
भारत और भारत का सम्वत् एवं विश्व के विभिन्न सम्वत्
भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता का राज

द्वितीय अध्याय (Second Chapter)

भगवान की दृष्टि में भारत और भारत की दृष्टि में भगवान
भारत और योग
विश्व-शान्ति और भारत
भारत के प्रति अन्य देशों, धर्मों, सभ्यताओं का दृष्टिकोण
बी.के. एवं नॉन बी.के.भारतवासी विदेशियों का भारत के प्रति दृष्टिकोण
भारत और विभिन्न धर्म एवं कल्प-वृक्ष
विभिन्न धर्मों तथा सभ्यताओं का भारत पर राज्य - क्यों और कैसे?
भारत और विभिन्न सभ्यतायें
भारत की दैवी सभ्यता एवं विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का सम्बन्ध उद्गम एवं विस्तार
भारत और जन्म एवं पुनर्जन्म
भारत और आत्मा का स्वमान एवं स्वाभिमान
भारत और स्थापना-विनाश की प्रक्रिया
महाभारत का भारत
श्रीमत और भारत एवं विश्व
भारत और गीता-ज्ञान
वर्तमान भारत की नीति (Policy) और दूसरे देशों के साथ व्यवहार
भारत और विश्व की राज-व्यवस्था
भारत का विश्व को योगदान और विश्व का भारत को योगदान
भारत और विदेश का तुलनात्मक अध्ययन
भारत और विभिन्न धर्म, देश, सभ्यताओं का अस्तित्व
भारत और पवित्रता-अपवित्रता
विचारणीय प्रश्न और उनके विषय में विचार
सारांश

भारत देश की महिमा महान,
जहाँ आते शिव भगवान ।।

साकार प्रजापिता ब्रह्मा तन में अवतरित हुए परमात्मा पिता ने कहा है - परमात्मा शिव सभी के परमपिता हैं, भारत देश सर्व देशों में महान देश है, आबू सभी तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ है - यह रहस्य सभी को समझाना है।

Q. भारत क्या है?

जैसे स्कूल केवल किसी स्कूल के केवल एक भवन को नहीं कहा जाता है। स्कूल का अर्थ है कि वह भवन हो, जहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी हों और पढ़ाने वाले शिक्षक हों। ऐसे ही अस्पताल केवल अस्पताल के किसी भवन को नहीं कहा जा सकता है परन्तु अस्पताल अर्थात् वह भवन हो, वहाँ रोगी हों और उनके चिकित्सा के लिए डाक्टर हो, उसके लिए साधन-सुविधायें हों। ऐसे ही भारत का अर्थ केवल आज के भारत से नहीं है लेकिन भारत का अर्थ भारत की उस दैवी सभ्यता और दैवी धर्म से है, जहाँ उस दैवी धर्म और सभ्यता का बीजारोपण हुआ और जहाँ तक वह दैवी धर्म और सभ्यता फली और फूली। वर्तमान भारत में उस दैवी धर्म और सभ्यता के चित्र ही अवशेष हैं और उसको मानने वाले अपने को हिन्दू कहलाते हैं। इसलिए जहाँ तक दैवी धर्म और सभ्यता का विस्तार था, जहाँ तक वह फली-फूली वह सब भारत है। वर्तमान भारत तो उसका एक नाम-निशान मात्र ही है।

लौकिक गीता में भी है - यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,

अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्हम्।

भगवान अर्थात परमात्मा। भारत की महानता का राज़ है परमात्मा पिता का भारत में अवतरण है। परमात्मा ने भारत भूमि पर अवतरित होकर भारत भूमि को स्वर्ग बनाया था, सत्य ज्ञान देकर सर्व आत्माओं को ईश्वरीय परिवार का ज्ञान देकर विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ाया था। आत्मिक ज्ञान देकर आत्माओं में विश्व प्रेम की भावना जाग्रत की थी, जिसका प्रभाव विश्व के जड़, जंगम और चेतन तीनों ही प्रकृतियों पर पड़ा और तीनों ही शान्त और सुखदायी बन गई अर्थात् परमात्मा ने आत्माओं के साथ प्रकृति को भी पावन बनाया। दिव्य गीता ज्ञान देकर विश्व से अज्ञान अंधकार को मिटाकर ज्ञान का दिव्य प्रकाश फैलाकर खास भारत और सारे विश्व को स्वर्ग बनाया था। निराकार परमात्मा के साकार रूप में अवतरण के सम्बन्ध में जो उनको राम के रूप में मानते हैं, उनके लिए तुलसीदास ने रामायण में लिखा है -

धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा।

धन्य भूमि वन काननचारी, निरखि निरखि जो भये सुखारी।

परमात्मा पिता ने बताया है -

भारत का दुश्मन कोई व्यक्ति नहीं है। भारत का नम्बरवन दुश्मन है रावण अर्थात् देहाभिमान और देहाभिमान जनित 5 विकार हैं तथा नम्बरवन दोस्त, खुदा है, जो सदा सुख देने वाला है, सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता, भाग्य विधाता है। वही आकर भारत को स्वर्ग बनाता है।

''भारत सचखण्ड था। सचखण्ड नाम क्यों पड़ा ? क्योंकि बेहद के बाप की यह जन्मभूमि है। यह बात और कोई की बुद्धि में नहीं है कि परमपिता परमात्मा को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं और भारत उनकी जन्मभूमि है।''

सा.बाबा 21.08.03 रिवा.

''खुदा दोस्त कहते हैं ना। ... फॉल ऑफ भारत, राइज ऑफ भारत। यह भारत का ही खेल है। राइज होगा सतयुग में और अब कलियुग में फॉल होना है। ... इसलिए बाप समझाते हैं कि भारत भूमि सबसे उत्तम है, जहाँ बाप आकर अवतार लेते हैं।''

सा.बाबा 17.9.2001 रिवा.

परमात्मा ने इस सत्य को भी बताया है कि भारत अविनाशी भूमि है क्योंकि कल्पान्त में विनाश के समय भारत में ही कुछ जनसंख्या बचती है, जिससे नये कल्प के लिए कलम लगती है। विनाश के समय वे योगी आत्मायें ही बचेंगी, जो दैवी गुणों सम्पन्न होंगी अर्थात् नये विश्व अर्थात् स्वर्ग के योग्य होंगी। परमात्मा आकर सत्य ज्ञान देकर आत्माओं को ऐसा आत्मिक शक्ति सम्पन्न, दैवी गुणों से सम्पन्न बनाते हैं, जिससे विनाश के समय पैदा हुई कठिन परिस्थितियों को भी वे आत्मायें सहन करने में समर्थ होती हैं।

नव-विश्व का रचता ज्ञान सागर, पतित-पावन, निराकार परमपिता परमात्मा शिव है, वही आकर नये विश्व की कलम ब्रह्मा तन में प्रवेश कर लगाते हैं। शिव-जयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं।

भारत के शास्त्रों में इस बात के उल्लेख हैं। शास्त्रों में लिखा हुआ है कि विनाश के समय जब सारा विश्व जलमग्न हो गया, तब मतस्यावतार के रूप में अवतरित परमात्मा ने एक नाँव पर बैठे मनु-सत्यरूपा और सप्तऋषियों को भारत के उस भूभाग तक पहुँचा, जो सृष्टि के जलमग्न होने के बाद बाहर आया या बाहर रहा और वहाँ से ही उनके द्वारा सृष्टि की वृद्धि हुई। इस वर्णन में कुछ आटे में नमक के समान सत्य है परन्तु यथावत् पूरा सत्य नहीं है। कुछ जनसंख्या तो बची परन्तु परमात्मा कब भी मतस्य के रूप में अवतार नहीं लेते हैं। वे तो एक साधारण मनुष्य तन में प्रवेश कर विश्व की नई रचना रचते अर्थात् कलम लगाने का कर्तव्य करते हैं।

''शिवबाबा बैठ सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं अर्थात् तुम बच्चों को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। ड्रामा को तो कोई और जानते ही नहीं। भारत का ही यह हार-जीत, सुख-दुख का नाटक है। भारत हीरे जैसा सालवेन्ट था, जो अब कौड़ी जैसा इन्सालवेन्ट है। भारत ही सुखधाम था, अब दुखधाम है। भारत हेविन था, अब हेल है। हेल से हेविन कैसे बनता है, उसके आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सिवाए ज्ञान सागर शिवबाबा के कोई समझा न सके।''

सा.बाबा 31.10.03 रिवा.

परमात्मा कहते है - परमात्मा को गरीब निवाज कहते हैं। भारत सबसे गरीब है इसलिए भगवान भारत में आकर भारत को ही सिरताज बनाते हैं। भगवान के आने से ही भारतीय सम्पदा जो विदेशी लूटकर ले गये, वह पुन: भारत में आ रही है और आने वाली है, जिसके आसार भी देखने में आते हैं।

''निराकार शिवबाबा हमको विष्णुपुरी का मालिक बना रहे हैं। ... भारत को ही विष्णुपुरी बना रहे हैं। अगर यह बुद्धि में रहे तो कितनी खुशी होनी चाहिए। ... बाबा आते ही भारत में हैं और भारत को ही विष्व का मालिक बनाते हैं। ... पहले-पहले भारत में गॉड-गॉडेस का राज्य था।''

सा.बाबा 23.12.06

''बेहद के बाप की सारी दुनिया की आत्मायें बच्चे हैं परन्तु जन्म भारत में लिया है। ... बाप कहते हैं मैं भारत में आता हूँ पढ़ाने। भारत में आता हूँ तो सबका कल्याण हो जाता है। ... भारत ही अभी नर्क है फिर भारत ही स्वर्ग बनना है। ... भारत में ही पहले-पहले सोमनाथ का आलीशान मन्दिर बनाया था।''

सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

''मैं भारत में ही आता हूँ। अपना जन्म-देश सबको प्यारा लगता है ना। बाप को तो सब प्यारे लगते हैं। फिर भी मैं अपने भारत देश में ही आता हूँ। ... तुम पाण्डव भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा कर रहे हो। आखिर विजय तो पाण्डवों की ही होनी है।''

सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

''ज्ञान है दिन और अज्ञान है रात। भक्ति क्या है और ज्ञान क्या है - अभी तुम जानते हो। ... भगवान को भक्तों से मिलना है, भक्ति का फल देने के लिए। ... शिवबाबा भारत में ही आते हैं, बच्चों को भक्ति का फल देने के लिए।''

सा.बाबा 14.8.06 रिवा.

''भारत में हीरे-जवाहरातों के महल थे, उसको कहते ही हैं गार्डन ऑफ अल्लाह। ... पांच हजार वर्ष पहले भी लड़ाई लगी थी, जिसका नाम महाभारत लड़ाई रखा है। ... मैं एक तो निष्कामी हूँ

और दूसरा परोपकारी हूँ। परोपकार करता हूँ भारतवासियों पर, जो हमारी बहुत ग्लानि करते हैं।''

सा.बाबा 10.4.06 रिवा.

''भगवान भारत की झोली कब भरते हैं ... ज्ञान से सद्गति मिल जाती है। भारत को सद्गति बाप ही देंगे। सर्व का सद्गति दाता वह एक है। ... परमात्मा भी ड्रामा में पार्ट बजाता है। वह क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर है।''

सा.बाबा 31.3.06 रिवा.

''बाप भारत में ही आते हैं। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। कब बना, कब पूरा होगा - यह प्रश्न नहीं उठ सकता है। ... तुम अपने को आपेही राजतिलक देते हो। ... मन्मनाभव, जिससे अपने को आपही राजतिलक मिलता है, बाप नहीं देते हैं।''

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

''यह है सबसे बड़ा तीर्थ, जहाँ बेहद का बाप बैठकर बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं। और सबकी सद्गति करते हैं। भारत की महिमा अपरमपार है परन्तु यह भी तुम समझ सकते हो। भारत है वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड। ... भारतवासी ही चाहते हैं कि विश्व में शान्ति भी हो और सुख भी हो। स्वर्ग में दोनो होती हैं।''

सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''जानना तो मनुष्यों को ही है, जानवर तो नहीं जानेंगे। मनुष्य ही बहुत ऊंच हैं, मनुष्य ही बहुत नीच हैं। ... बाप है अविनाशी सर्जन, तो जरूर आयेंगे भी वहाँ, जो भूमि सदैव कायम रहती है। जिस धरती पर भगवान का पाँव लगा, वह धरनी कभी विनाश नहीं हो सकती। यह भारत तो रहता है ना देवताओं के लिए। सिर्फ चेन्ज होता है। बाकी भारत तो है सच खण्ड, झूठ खण्ड भी भारत ही बनता है। भारत का ही आलराउण्ड पार्ट है।''

सा.बाबा 18.5.04 रिवा.

भारत और शिवबाबा एवं ब्रह्मा बाबा

भारत और परमात्मा का निराकार और साकार स्वरूप

शिवबाबा ब्रह्मा तन में आकर पावन दुनिया की स्थापना और पतित दुनिया का विनाश कराते हैं। ब्रह्मा को सभी धर्मों में भिन्न नाम-रूप मानते हैं। क्रिश्चियन धर्म उनको एडम और इस्लाम धर्म में आदम के नाम से जाना जाता है। भारत में साकार और निराकार दोनों रूपों की मान्यता है और परमात्मा को माता-पिता के रूप में भी याद करते हैं।

''भारतवासी पुकारते हैं - तुम मात-पिता हम बालक तेरे ... परन्तु अर्थ नहीं जानते। निराकार को माता कैसे कह सकते हैं। वह इसमें प्रवेश कर एडॉप्ट करते हैं। तो यह ब्रह्मा माता बन जाती है।''

सा.बाबा 20.12.06 रिवा.

''परमपिता परमात्मा बेहद का बाप है, उनका जन्म भारत में ही होता है। बाबा भारत में ही आकर ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना करते हैं। ... परन्तु भारतवासी जिनकी पूजा करते हैं, उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते।''

सा.बाबा 16.12.06 रिवा.

''कोई मरता तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तो जरूर कोई समय स्वर्गवासी हुए हैं। यह खास भारतवासी ही कहते हैं। ... और सब जगह परमात्मा को फादर कहकर बुलाते हैं, यहाँ मात-पिता कहकर बुलाते हैं। ... सिर्फ फादर कहने से मुक्ति का वर्सा मिलता है। वे फिर पीछे आते हैं।''

सा.बाबा 27.11.06 रिवा.

''यह भारत अविनाशी खण्ड है क्योंकि अविनाशी बाप परमपिता परमात्मा की जन्म-भूमि है। ... परन्तु ड्रामा अनुसार किसको पता नहीं है कि यह हमारे गॉड फादर अथवा मात-पिता, पतित-पावन सर्व के सद्गतिदाता का जन्म स्थान है।... तुमको यह नशा रहना चाहिए कि श्रीमत पर हम कल्प-कल्प भारत को पैराडाइज़ बनाते हैं।... यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 3.11.06 रिवा.

''बच्चों का फर्ज है बेहद के बाप को याद करना।... तुम श्रीमत पर विश्व को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारा गायन है, पूजा नहीं हो सकती।... तुमको बड़ा शुद्ध अहंकार होना चाहिए कि हम आत्मायें बाप की मत पर चलकर भारत को स्वर्ग बना रहे हैं।''

सा.बाबा 22.11.06 रिवा.

''शिव जयन्ति भारतवासी मनाते हैं। भारत है सर्व के पतित-पावन बाप का बर्थ-प्लेस। बाप है सबको सुख देने वाला, सर्व को लिबरेट करने वाला। तो भारत कितना ऊंच है। ... बाप जानते हैं ड्रामा अनुसार जब हमारे बच्चे दुखी हो जाते हैं, तब मैं आता हूँ, वर्सा देने।''

सा.बाबा 15.7.06 रिवा.

''भारतवासियों की ही बात है। बाप भी भारत में ही जन्म लेते हैं। बाप कहते हैं - मैं भारत में जन्म लेता हूँ तो जरूर वे ही प्यारे लगेंगे।... मेरा बर्थ प्लेस यह भारत है। हर एक को अपनी धरती का कदर रहता है। ... बाप तुम भारतवासियों को फिर से वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 26.4.06 रिवा.

''अभी तुम संगमयुग पर हो। बाप भी भारत में ही आते हैं। शिवजयन्ति मनाते हैं परन्तु वह कौन

है, कैसे आते हैं, कब आते हैं, क्या करते हैं - वह नहीं जानते।''

सा.बाबा 7.6.04 रिवा.

''आना भी भारत में ही होता है। भारतवासियों में भी किसके तन में आऊं ? क्या प्रजीडेण्ट वा साधू महात्मा के रथ में आयेगा ? ऐसे भी नहीं कि पवित्र रथ में आना है। यह तो है ही रावण राज्य। यह भी बच्चों को पता है कि भारत अविनाशी खण्ड है, उसका कभी विनाश नहीं होता। अविनाशी बाप अविनाशी खण्ड भारत खण्ड में ही आते हैं। किस तन में आते हैं, वह खुद ही बताते हैं।''

सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

''बाप गरीब निवाज है। भारत सबसे गरीब है। मैं आता भी भारत में हूँ, इनको आकर साहूकार बनाता हूँ। भारत की महिमा बहुत भारी है। यह सबसे बड़ा तीर्थ है। भारत बहुत साहूकार था, अब गरीब बना है। ... यह भारत है सबसे प्राचीन। भारत ही हेविन था। ... बाप को भी भारत में ही आना है।''

सा.बाबा 22.4.04 रिवा.

''गाया हुआ है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अब ब्रह्मा अकेला तो नहीं होगा। ब्रह्मा कुमार और कुमारियों द्वारा भारत को गॉर्डन ऑफ दैवी फ्लावर बनाता हूँ। अभी तो यह है कांटों का जंगल।... भारत जो परिस्तान था, सो अब कब्रिस्तान बना है। फिर यह परिस्तान बनेगा। यह चक्र है, जो फिरता रहता है। ... यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 15.1.07 रिवा.

''बरोबर शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा गॉर्डन ऑफ अल्लाह या दैवी फूलों का बगीचा स्थापन कर रहे हैं। ... नये भारत में इन देवी-देवता लक्ष्मी-नारायण का ही राज्य था। ... वास्तव में सभी आत्मायें शिव की सन्तान हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हैं। हर एक आत्मा में अपना-2 पार्ट नूँधा हुआ है।''

सा.बाबा 15.1.07 रिवा.

परमात्मा पिता से भारत को प्राप्तियाँ

परमात्मा भारत में आकर नई दुनिया की स्थापनार्थ जो ज्ञान देते हैं, उससे ही नये विश्व की स्थापना होती है। उस ज्ञान में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, योग, कर्म का विधि-विधान, आदि-आदि विषयों का ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान के आधार पर ही आत्मायें अपने जीवन को परिवर्तन करके नई दुनिया के योग्य बनाती हैं। परमात्मा नई दुनिया की स्थापना के लिए ज्ञान देता है, पुरानी दुनिया का विनाश तो ड्रामा अनुसार स्वत: होता है। परमात्मा आकर जो ज्ञान देते हैं,

उससे भारत, विश्व और विश्व की सर्वात्माओं की ग्रहचारी उतर जाती है और भारत, विश्व और सर्वात्मायें पावन बन जाती हैं।

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।''

सा.बाबा 10.1.69

''यह है प्रवृत्ति मार्ग, सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। वह अलग है। बाबा ने यह भी समझाया है कि अगर शंकराचार्य नहीं आता तो पवित्रता का अंश नहीं रहता। भारत बिल्कुल ही जल मरता। यह भी ड्रामा में नूँध है भारत को थमाने के लिए।''

सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

''यह भारत भूमि निराकार बाप की जन्मभूमि है। अपनी जन्मभूमि पर बहुत प्यार-रिगार्ड रहता है। ... भारत को कहा जाता है भगवान की जन्मभूमि। ... बरोबर भारत को कल्प-कल्प बेहद के बाप का वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

''भारत में ही पारसबुद्धि देवता थे, इस समय पत्थरबुद्धि पतित रहते हैं। ... उसमें भी खास भारत की बात है। ... बृहस्पति की दशा सबसे अच्छी होती है। भारत पर बृहस्पति की दशा सतयुग में थी।''

सा.बाबा 14.7.06 रिवा.

''वृक्षपति बाप आकर मनुष्य मात्र पर बृहस्पति की दशा बिठाते हैं। खास भारत, आम विश्व पर इस समय राहू का ग्रहण लगा हुआ है। ... मैं ही आकर खास भारत, आम सारी दुनिया की गति-सद्गति करता हूँ। ... मेरे लाड़ले बच्चो, तुम्हारे ऊपर अभी वृक्षपति की दशा है। दे दान तो छूठे ग्रहण।''

सा.बाबा 14.7.06 रिवा.

''बाप आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं क्योंकि वह है बीजरूप, वृक्षपति। वह जब भारत में आते हैं तब भारत पर बृहस्पति की दशा बैठती है। ... भारत पर बृहस्पति की दशा थी तो सतयुग था। अभी राहू की दशा में देखो भारत का क्या हाल हो गया है।''

सा.बाबा 25.5.04 रिवा.

''कलियुग से सतयुग कैसे बनता है, यह नॉलेज तुमको बाप अभी ही समझाते हैं। ... भारत का

उत्थान और पतन कैसे होता है, कितना क्लीयर करके बाप समझाते हैं।''

सा.बाबा 28.5.04 रिवा.

''भारत अमरलोक, स्वर्ग था। देवी-देवताओं का राज्य था। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे ना। ... अनेक बार सुना भी है - भगवानुवाच क्योंकि गीता ही भारतवासियों का धर्मशास्त्र है। गीता की तो अपरमअपार महिमा है। सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवत गीता है। ... भारतवासी भी अर्थ को समझते नहीं हैं। ... बाप को भी भूल जाते हैं, तो घर को भी भूल जाते हैं। जो बाप भारत को सारे विश्व का राज्य देते हैं, उनको सब भूल जाते हैं। यह सब राज़ बाप ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - यह विषय वैतरणी नदी रौरव नर्क है। यह खास भारत को कहेंगे। बृहस्पति की दशा भी भारत पर बैठी है, वृक्षपति भी भारतवासियों को ही पढ़ाते हैं। ... अब मैं वृक्षपति आया हूँ भारत पर बृहस्पति की दशा बिठाने। सतयुग में बृहस्पति की दशा भारत पर थी, अब है राहू की दशा।''

सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

''कल्प-कल्प हम कितना वारी इस भारत में आये होंगे, तुम यह नई बातें सुनकर वण्डर खते हो। ... बाप कहते हैं - पुरानी दुनिया को नया बनाना मेरा ही पार्ट है।''

सा.बाबा 19.3.04 रिवा.

''भगवान आकर रक्षा करते हैं माया से, फिर स्वर्ग की राजाई स्थापन करते हैं। ... तुम किसको भी कह सकते हो आओ तो हम आपको सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनायें। ... बाप अविनाशी ज्ञान रतनों से झोली भरते हैं। ... तुम शिव शक्ति सेना हो, भारत की झोली भरने वाले। भारत बहुत साहूकार हो जायेगा।''

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

''तुम जानते हो - बाबा हमारे द्वारा ही भारत को सुखधाम बना रहे हैं। जिसके द्वारा बना रहे हैं, जरूर वही सुखधाम का मालिक बनेंगे। बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 3.2.2001 रिवा.

प्रथम अध्याय (First Chapter)

भारत और सृष्टि की संरचना - तीन लोक, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष और उसकी कलम (Sapling)

सृष्टि की संरचना के विषय में भिन्न-भिन्न धर्मों और सभ्यताओं में अपनी-अपनी मान्यतायें हैं। वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण भी इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न हैं। सृष्टि रचना की रहस्यमय पहेली आजतक विश्व में किसी ने भी हल न की है और न ही करने की सम्भावना है। परमात्मा ही सर्वात्माओं का अनादि पिता है, जिसको ज्ञान का सागर और सृष्टि का रचता भी कहा जाता है, उसने अभी इस सृष्टि की रचना का गुह्य रहस्य बताया है, जो विवेक-संगत और अनुभव गम्य है। उस रहस्य को यथार्थ रीति जानने वाले के मन में इस सृष्टि की रचना के विषय में कोई प्रश्न नहीं रह जाता है। ज्ञान सागर परमात्मा पिता ने जो रहस्य बताया है, उसके अनुसार ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है अर्थात् जिसकी न कभी रचना हुई है और न कभी अन्त होने वाला है क्योंकि वह चक्रवत सतत गतिशील है। सतोप्रधानता की चरम सीमा और तमोप्रधानता की चरम सीमा ही इस नाटक के आदि-अन्त की पहचान है। परमात्मा ने भी कभी इस सृष्टि रूपी नाटक को कब रचा नहीं है परन्तु वह इस नाटक का पूर्ण ज्ञाता है और उस ज्ञान के आधार पर इसको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाता है, इसलिए उसको इसका रचता कहा जाता है।

भारत का इस सृष्टि रचना से क्या सम्बन्ध है, वह रहस्य भी परमात्मा ने बताया है। विश्व के ऐतिहासिक और भौगोलिक गति-विधि का आदि भारत से ही होता है और विश्व के उत्थान-पतन का आधार भी भारत ही है अर्थात् भारत का उत्थान तो विश्व का उत्थान और भारत का पतन तो विश्व का पतन होता है। सृष्टि अनादि-अविनाशी है, उसकी नयी रचना न कब हुई और न ही होने का प्रश्न उठता है तथा न होना ही सम्भव है। परमपिता परमात्मा संगम युग पर अवतरित होकर नये विश्व की अर्थात् स्वर्ग की रचना भारत (वर्तमान भारत) में करते हैं। भारत का भारत नाम और सर्व देशों के नाम विनाश के बाद काल-चक्र में विलीन हो जाते हैं जैसे वृक्ष का बीज वृक्ष के बड़ा होने पर विलीन हो जाता है क्योंकि उस समय सारा विश्व एक ही देश के समान हो जाता है। सतयुग-त्रेतायुग तक विश्व में न कोई दूसरा धर्म होता है और न ही कोई दूसरा देश होता है, इसलिए किसी प्रकार के नामकरण की आवश्यकता नहीं होती है। फिर द्वापर से जब अन्य धर्म और सभ्यतायें जन्म लेती हैं और फलती-फूलती हैं, उनकी राजाई स्थापन होती है, आपस में वैमनस्य पैदा होता है तो वह एकछत्र विश्व की चक्रवर्ती राजाई विघटित होती है और पहचान के लिए विभिन्न राजाइयों के अपने-अपने नाम पड़ना आरम्भ होते हैं। उस एक चक्रवर्ती राजाई से

विघटित होकर जो नई राजाइयाँ बनती हैं, उनके अपने-अपने नाम पड़ते हैं परन्तु जो मूल साम्राज्य होता है, वह भारत के नाम से जाना जाता है और ये भारत के विघटन की क्रिया द्वापर से लेकर कलियुग अन्त तक चलती रहती है। अभी 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ, तब भारत से अलग हुए पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान बना, फिर 1973 में पूर्वी पाकिस्तान भी पाकिस्तान से अलग हो गया और बंगलादेश के नाम से जाना जाने लगा।

बाइबिल में लिखा है क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। बिड़ला मन्दिर में लिखा धर्मराज ने 5000 वर्ष पहले यहाँ स्वर्ग स्थापन किया था।

अन्य देशों और धर्मों के विचारकों और वैज्ञानिकों के द्वारा सृष्टि की संरचना के विषय में अनेक प्रकार थ्योरी बताई गई हैं परन्तु कोई भी थ्योरी विवेक की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है। उसमें कोई न कोई विरोधाभास आ ही जाता है, इसलिए प्राय: सभी समयानुसार फेल होती गई। यथा डार्विन की विकासवाद की थ्योरी, किसी की मान्यता है कि सृष्टि एक आग का गोला था, जो ठण्डा होते-होते उसके बाद जीवन अस्तित्व में आया। किसी की मान्यता है कि सृष्टि में विनाश के समय सम्पूर्ण विनाश होता है, फिर सृष्टि की नई रचना होती है आदि आदि। इन सब बातों पर विचार करें तो अनेक प्रकार के विरोधाभास (Contradictions) सामने आते हैं और अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे सृष्टि की रचना होना सम्भव नहीं है। परमात्मा ने सृष्टि की संरचना के विषय में यथार्थ ज्ञान दिया है और बताया है कि ये सृष्टि अनादि-अविनाशी है अर्थात् इसकी न कभी नई रचना हुई है और न कभी इसका विनाश होने वाला है। परमात्मा आकर ज्ञान देकर और योग सिखाकर आत्माओं को पावन बनाते हैं, जिससे ये पतित सृष्टि पावन स्वर्ग बन जाती है, इसलिए परमात्मा को सृष्टि का रचता कहा जाता है। जब आत्मायें पावन बन जाती हैं तो इस पतित दुनिया का प्राकृतिक आपदाओं, अणु-युद्ध और गृह-युद्ध के रूप में विनाश होता है और उस समय थोड़ी सी आध्यात्मिक शक्ति, दैवी गुणों से सम्पन्न आत्मायें बच जाती है, जिनके द्वारा नये चक्र की आदि होती है। यह भारत चारो युगों में विद्यमान रहता है परन्तु इसके भूभाग का भी रूप परिवर्तन अवश्य होता है।

भारत में ही प्राय: तीन लोकों, चार युगों अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग आदि का वर्णन होता है। भले ही कोई भी तीनों लोकों के अस्तित्व और उसके विषय में यथार्थ रूप से नहीं जानता है, चारो युगों के इतिहास को भी यथार्थ रीति नहीं जानते हैं, जिसको अभी संगमयुग पर परमात्मा आकर बताते हैं।

मनुष्य सृष्टि एक उल्टा वृक्ष है, जिसका बीज परमपिता परमात्मा ऊपर परमधाम में रहते हैं और ये वृक्ष नीचे विस्तार को पाया है। इसका वर्णन गीता में भी है परन्तु इसके विषय में भी यथार्थ ज्ञान न

किसी मनुष्य में और न ही किसी शास्त्र में है, उसको भी परमात्मा ही आकर बताते हैं। भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जो द्वापर और उसके बाद में हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है, वह इस कल्प-वृक्ष का तना है, जिससे अन्य धर्म वंश रूपी शाखायें निकलती हैं और ये वृक्ष विस्तार को पाता है। इस कल्प-वृक्ष की कलम लगाने की प्रक्रिया परमात्मा के द्वारा भारत में ही होती है, इसलिए भारत ही जनसंख्या का केन्द्र बिन्दु है। इसके कारण ही देवी-देवता धर्म को आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है क्योंकि इस धर्म वंश की आत्मायें तीनो कालों और चारो युगों में इस धरा पर विद्यमान रहती हैं।

''शिव है मात-पिता। ... एडम-ईव अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती यहाँ हुए हैं। वहाँ क्रिश्चियन लोग गॉड फादर से प्रार्थना करते हैं। यह भारत तो मात-पिता का गाँव है, उनका जन्म ही यहाँ है। ... नई सृष्टि ब्रह्मा द्वारा ही रची जाती है।''

सा.बाबा 29.11.03 रिवा.

विश्व के उत्थान-पतन की कहानी और उससे भारत का सम्बन्धये सृष्टि भारत के उत्थान और पतन की एक परम रोचक और आनन्दमय कहानी है और सभी देश इसके बायप्लॉट्स हैं। भारत का उत्थान तो विश्व का उत्थान और भारत का पतन तो विश्व का पतन होता है अथवा ये कहें कि विश्व के उत्थान और पतन के साथ भारत का विशेष सम्बन्ध है क्योंकि सृष्टि के आदि में सारा विश्व ही भारत होगा अथवा भारत ही विश्व होगा। स्वर्ग भी भारत ही बनता है और नरक भी भारत बनता है। इस विश्व-नाटक को बाबा ने विभिन्न नामों से सम्बोधित किया है। जैसे - यह एक हार और जीत का खेल है। यह दिन और रात का खेल है अर्थात् ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात का ये खेल है। ये सुख और दुख का एक खेल है, जिसका भारत के साथ विशेष सम्बन्ध है अर्थात् भारत ही सबसे अधिक सुखी बनता है और भारत ही सबसे अधिक दुखी बनता है। भारत केवल भारत भूमि ही नहीं लेकिन भारत अर्थात् भारतवासी आत्मायें अर्थात् भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्मवंश की आत्मायें। बाबा ने भी कहा है - ये सारी कहानी भारत के उत्थान और पतन की कहानी है।

''यह सारा खेल ही भारत पर बना हुआ है। शिव जयन्ति भी यहाँ मनाते हैं। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ, कल्प बाद फिर आऊंगा। भारत ही पैराडाइज़ था। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था।''

सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

''सतयुग में भारत श्रेष्ठाचारी था और सृष्टि के आदि में बहुत थोड़े मनुष्य थे, भारत स्वर्ग था, दूसरे कोई खण्ड नहीं थे। अभी और धर्म बढ़ते-बढ़ते झाड़ कितना बड़ा हो गया है। ... अब इस

तमोप्रधान झाड़ का विनाश और नये देवी-देवता धर्म के झाड़ की स्थापना जरूर चाहिए। ... अभी सेपलिंग लग रहा है।''

सा.बाबा 7.10.06 रिवा.

''भारत ही अविनाशी खण्ड है, बाकी सब हैं विनाशी खण्ड। नई दुनिया में तो सिर्फ भारत ही होता है। ... भारत में जब देवी-देवताओं का राज्य था तो वहाँ और कोई खण्ड नहीं थे, सिर्फ भारतवासी ही थे। ... अभी उनके चित्र रह गये हैं। यादगार तो रहना चाहिए ना।''

सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

अभी ये भारत के उत्थान का समय है, जब ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा इस भारत में आकर इसको स्वर्ग बना रहे हैं और इस पतित सृष्टि का विनाश होने वाला है। ये वही महाभारत का समय है जब भारत महान बनता है।

''चित्रों पर पूरी लिखत होनी चाहिए। भारत फलाने समय से फलाने समय तक श्रेष्ठाचारी था, फिर फलाने समय से भ्रष्टाचारी बना है। ... समझाने से भी बुद्धि में नशा चढ़ेगा। ... यहाँ तो कितनी मेहनत करनी पड़ती है, भारत को स्वर्ग बनाने में। जादूगरी का खेल है ना, इसलिए उनको जादूगर भी कहते हैं।''

सा.बाबा 26.11.03 रिवा.

''गाया हुआ है - भारत अविनाशी खण्ड है अर्थात् अविनाशी बाप का बर्थ प्लेस है। भारत ही स्वर्ग था। हम खुशी से बोलते हैं - 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। स्वर्ग के मालिकों के चित्र तो हैं ना। कहते भी हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत हेविन था। ... फिर से तुमको ज्ञान मिल रहा है। तो अब तुम बच्चों को चेलेन्ज देनी है।''

सा.बाबा 27.11.03 रिवा.

''हम परमपिता परमात्मा से 21 जन्म सतयुग-त्रेता में सुख पाने के लिए वर्सा लेते हैं। बरोबर सतयुग-त्रेता में भारत सदा सुखी था। ... भारत में इन देवी-देवताओं का राज्य था।''

सा.बाबा 2.12.03 रिवा.

''यह सुख-दुख, हार-जीत का खेल बना हुआ है। भारत पर ही खेल है - राम और रावण का। भारत की रावण से हारे हार है और फिर रावण पर जीत पहन राम के बनते हैं। ... राम-रावण का जन्म भारत में ही दिखाते हैं। शिवजयन्ति भारत में ही मनाते हैं।''

सा.बाबा 3.12.03 रिवा.

''भारत ही हेविन था, वही अभी हेल बन गया है, फिर हेल को हेविन बाप के बिगर कोई बना न सके। देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है, यहाँ के मनुष्य तो सम्पूर्ण विकारी हैं, इनको

कहा जाता है पतित। ... इस समय भारत श्रापित है, बहुत दुखी है। इस रावण पर जीत पानी है। गाया जाता है - दे दान तो छूटे ग्रहण। ... पहला दान तो काम विकार का देना है।''

सा.बाबा 18.5.06 रिवा.

''तुम बच्चों को ज्ञान सूर्य का उदय देखना है। राइज़ ऑफ भारत और डाउन फाल ऑफ भारत। भारत ऐसे डूबता है, जैसे सूर्य डूबता है। ... बाप आकर भारत का बेड़ा सेलवेज़ करते हैं। तुम इस भारत को फिर से सेलवेज़ करते हो। ... भारत का फॉल एण्ड राइज़ अर्थात् फॉल एण्ड राइज़ ऑफ भारतवासी। विचार सागर मन्थन करना होता है।''

सा.बाबा 24.4.06 रिवा.

''इसमें भी खास भारतवासियों, आम सारी दुनिया की ज्योति उझाई हुई है। सब पाप-आत्मायें हैं, सबकी क़यामत का समय है। सबको हिसाब-किताब चुक्तू करना है।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

''पाँच हजार साल पहले भारत ही था, जिसमें देवतायें राज्य करते थे। यह है सच्ची-सच्ची कहानी, जो दूसरा कोई बता न सके। ... बड़े अटेन्शन से सुनना और धारण करना है। कहानी तो इजी है, जो गीता में लिखी है।''

सा.बाबा 25.6.04 रिवा.

भारत और स्वर्ग-नरक एवं सुख-दुख

सभी धर्मों में स्वर्ग और नर्क की मान्यता है परन्तु स्वर्ग और नर्क क्या है, कहाँ है, इस सत्य का ज्ञान किसको भी नहीं है, इसलिए हर धर्म की अपनी-अपनी परिकल्पनायें हैं। इस सत्य का यथार्थ ज्ञान परमात्मा ने अभी दिया है कि सतयुग-त्रेता में ये भारत भूमि ही स्वर्ग होता है और द्वापर-कलियुग में भारत ही नरक बन जाता है। सतयुग के आदि काल को ही पूरा स्वर्ग कहा जाता है, त्रेता को स्वर्ग नहीं लेकिन सेमी स्वर्ग कहेंगे और त्रेता के अन्त काल में तो नाम मात्र ही स्वर्ग होगा। सतयुग के आदि में देवी-देवताओं के पास हर चीज सतोप्रधान होगी, साइन्स के सुख-शान्ति के साधन भी अपने सतोप्रधानता के चरमोत्कर्ष पर होंगे क्योंकि कलियुग के विनाश और सतयुग की स्थापना होते-होते साइन्स एवं टेक्नॉलोजी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच जायेगी और कहा जाता है कि अति के बाद अन्त होता है, इसलिए वहाँ से ही ये साइन्स का ज्ञान भी धीरे-धीरे लोप होता जायेगा और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि तक पूरा ही लोप हो जायेगा और अन्त में देवी-देवताओं में जो पवित्रता की शक्ति और दैवी संस्कार नाम मात्र रहे हुए होंगे, वे भी समाप्त हो

जायेंगे और देवतायें वाम मार्ग में चले जायेंगे।

देवताओं के वाम मार्ग में जाने के कारण सृष्टि में कुछ उथल-पुथल भी होगी, जिससे दैवी सभ्यता का नाम-निशान मिट जायेगा। वहाँ से ही नर्क का आरम्भ होता है, जो बढ़ते-बढ़ते कलियुग के अन्त तक पूरा ही नर्क बन जाता है। जब दैवी संस्कार खत्म हो जाते हैं तो आसुरी संस्कार अपना पैर जमाने लगते हैं, जिससे आत्माओं के कर्म-संस्कार गिरने के कारण विकर्म होने लगते हैं और विकर्मों के फलस्वरूप दुख-अशान्ति होने लगती है, जिससे छूटने के लिए भक्ति का आरम्भ होता है। द्वापर में भक्ति मार्ग में आवश्यकता अनुसार विज्ञान के अविष्कार भी आरम्भ होंगे और देवताओं के मन्दिर-चित्र आदि बनना आरम्भ होंगे। देवी देवताओं को किसी नई चीज के अविष्कार की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि वहाँ उनको प्रकृति से सर्व आवश्यकता के साधन स्वत: उपलब्ध होते रहते हैं, इसलिए उनको किसी अविष्कार की इच्छा भी नहीं होगी। वास्तव में देवी-देवताओं में किसी अविष्कार की न इच्छा-आवश्यकता होती है और न ही शक्ति होती है। आवश्यकता ही नहीं होगी तो अविष्कार भी क्यों करेंगे क्योंकि आवश्यकता को ही अविष्कार की जननी कहा जाता है। बाबा ने भी कहा है कि त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे, सेमी स्वर्ग कहेंगे। इस प्रकार देखें तो भारत ही स्वर्ग बनता है और भारत ही पूरा नरक बनता है। भारत के साथ सारी ही दुनिया नम्बरवार समय और स्थिति के अनुसार नरक बन जाती है।

''दुनिया नरक, कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे - यह नरक है, वह स्वर्ग है। ऐसे नहीं कि द्वापर को नरक कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि हैं। अभी हैं तमोप्रधान। तो यह हेल और हेविन संगम पर लिखेंगे।''

सा.बाबा 4.11.03 रिवा.

''अब तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनना चाहिए, मनुष्य सभी हैं देहाभिमानी। जब आत्माभिमानी बनें तब परमात्मा को याद कर सकें। पहले-पहले है आत्माभिमानी बनने की बात। ... ड्रामा अनुसार जब ऐसी हालत हो जाती है, भारत बिल्कुल ही लास्ट खाते में चला जाता है, तब बाप आते हैं। भारत जब पुराना हो, तब फिर नया बने। नया भारत जब था तो और कोई धर्म नहीं था, उसको स्वर्ग कहा जाता है।''

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

प्राय: विश्व के सभी धर्मों में स्वर्ग-नरक का गायन है परन्तु विश्व-इतिहास में भारत ही स्वर्ग बनता है और भारत ही नरक बनता है अर्थात् भारत ही सबसे ऊंच बनता है और भारत ही सबसे गरीब बनता है, नीचे चला जाता है। जब नीचे चला जाता है तब भगवान बाप आकर ऊंचा उठाते हैं, स्वर्ग बनाते हैं।

स्वर्ग-नरक की पहचान क्या है अर्थात् स्वर्ग नरक क्या है, इसको भी जानना आवश्यक है। जब विश्व में जीवात्मायें देही-अभिमानी होते हैं तो उनके जीवन में पवित्रता, सुख-शान्ति होती है, उसको स्वर्ग कहा जाता है। स्वर्ग में सभी मनुष्य दैवी गुणों से सम्पन्न होते हैं, सबमें परस्पर प्यार होता है, जिसके लिए गायन है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते हैं। उस दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है। द्वापर से जब जीवात्मायें देहाभिमानी हो जाते हैं, जिससे उनमें विकारों की प्रवेशता होती है, जिसके फलस्वरूप विकर्म होते हैं और विकर्मों के कारण जीवात्माओं को दुख-अशान्ति की अनुभूति होना आरम्भ हो जाता है, जो बढ़ते-बढ़ते कलियुग के अन्त में अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है, इसलिए उसको रौरव नर्क कहा जाता है।

सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के नाम से राज्य कारोबार होता है और त्रेता में वही राज्य कारोबार राम-सीता के नाम से चलता है। दोनों युगों में सारा विश्व एक ही चक्रवर्ती राजा के अधीन चलता है। द्वापर से विश्व अन्य धर्म आते हैं और विश्व में विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ होती है, जिससे विश्व में अनेक राजाओं-महाराजाओं के नाम राजवंश चलते हैं। भारत में भी अनेक राजवंश के नाम से अनेक राजाईयां हो जाती है, जिससे बाद में परस्पर युद्ध आदि भी होते हैं।

भारत में आदि से अन्त तक मुख्य गद्दी दिल्ली ही रहती है, जो पहले इन्द्रप्रस्थ के नाम से जानी जाती है और बाद में नाम बदलकर दिल्ली हो जाता है। कल्प के आदि अर्थात सतयुग की आदि में दिल्ली की गद्दी पर पहले महाराजा-महारानी श्रीनारायण-श्रीलक्ष्मी होते हैं और अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान हुए। बाद में भारत पर अन्य धर्मवंशों के अनेक राजाओं ने राज्य किया। अन्त में अंग्रेजों का राज्य रहा और उसके बाद भारत में प्रजातन्त्र आया जो अभी चल रहा है। अभी परमपिता परमात्मा फिर से वही स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं।

परमात्मा ने बताया है कि भारत ही स्वर्ग बनता है तो भारत ही नर्क भी बनता है। इसके आधार पर वर्तमान भारत की स्थिति को देखें तो जैसे कर्म भारत में हो रहे हैं, वैसे दुनिया के किसी भी देश में नहीं मिलेंगे और मिलेंगे तो भी इतने नहीं मिलेंगे। जैसे कामवश कन्याओं को अपहरण करके, बलात्कार करके मार देना, लोभवश छोटे-छोटे बच्चों का अपहरण करके, उनको मारकर उनके अंगों का व्यापार करना, मां-बाप का स्वयं ही अपने बच्चों को बेच देना आदि आदि। भारत ही स्वर्ग भी बनता है। भारत के प्राचीन गौरव को देखें तो जो सुख-शान्ति-समृद्धि भारत में थी, वह किसी भी देश में नहीं मिलेगी, जिसके यादगार में भारत में देवी-देवताओं के चित्र हैं, मन्दिर हैं। अभी फिर परमात्मा पिता उसी भारत का निर्माण कर रहे हैं।

''भारत की जय और भारत की ही खय (हार) होती है। कब होती है - यह कोई नहीं जानते हैं। भारत की जय तब होती है जब राज्य-भाग्य मिलता है, जब पुरानी दुनिया का विनाश होता है।

खय करता है रावण। जय करते हैं राम। जय भारत कहेंगे, जय हिन्द नहीं। ... भारत शिवालय, हेविन था। पांच हजार वर्ष पहले देवी-देवताओं का राज्य था। ... सबको जीवनमुक्ति देने वाला वह बाप है। जरूर जो इतनी बड़ी सर्विस करते हैं, उनकी महिमा गानी चाहिए। अविनाशी बाप का बर्थप्लेस है भारत। वही सबको पावन बनाने वाला है। बाप अपने बर्थप्लेस को छोड़कर और कहाँ जा न सके।''

सा.बाबा 12.11.03 रिवा.

''भारत ही सतयुग में दैवी श्रेष्ठाचारी था, फिर वह भ्रष्टाचारी आसुरी राज्य हो गया है। सब कहते हैं पतित-पावन आओ, आकर रामराज्य स्थापन करो। ... भारत कंगाल, भ्रष्टाचारी बन गया है, ऐसे समय पर ही मुझे आना पड़ता है। भारत ही मेरा बर्थप्लेस है। सोमनाथ का मन्दिर, शिव का मन्दिर भी यहाँ हैं। मैं अपने बर्थ प्लेस को ही स्वर्ग बनाता हूँ, फिर वही रावण की मत नरक बन जाता है। ... शिवबाबा, फिर मात-पिता ब्रह्मा-सरस्वती, फिर उनके बच्चे भारत को पावन बनाते हैं।''

सा.बाबा 14.11.03 रिवा.

''तुम सच्चे ब्राह्मणों के दिल में है कि हम सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में बाप की मदद से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। हम फिर से पवित्र बन भारत को स्वर्ग बनाकर राज्य करेंगे। शिवबाबा की मत पर चलने से भारत स्वर्ग बन जाता है।''

सा.बाबा 1.12.03 रिवा.

''जगत अम्बा की महिमा भारत में बहुत है। जगत-अम्बा को भारतवासियों के सिवाए कोई भी जानते नहीं हैं। ... जगत-अम्बा को प्रगट होना पड़े। जरूर थी तब तो गायन करते हौ। भारत की महिमा बहुत है। स्वर्ग भी कहते हैं और यह भी जानते हैं कि भारत ही प्राचीन था, इसलिए जरूर हेविन होना चाहिए। ... भारत में दान-पुण्य बहुत होता है परन्तु अक्सर करके दान करते हैं गुरुओं को।''

सा.बाबा 8.12.03 रिवा.

''ड्रामा में हर एक आत्मा का पार्ट अपना-अपना है। एक जैसा पद सबको नहीं मिल सकता। ... भारत ही हेविन था। ऐसे नहीं कि भारत के बदले जापान खण्ड हेविन हो जायेगा। ऐसे हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 24.12.03 रिवा.

''भारत में जब सूत मूँझ जाता है तब शिवबाबा को आना पड़ता है। बाप के बिना उसे कोई सुलझा न सके। ... तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रचता और रचना की नॉलेज पाकर काम को जीत

जगतजीत बनते हो।... भारत ही स्वर्ग था, अब नरक है। जो काम को जीतेगा, वही जगतजीत बनेंगा।''

सा.बाबा 6.2.04 रिवा.

भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि और प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी जयद्रथ-वध नामक पुस्तक में लिखा है - अधिकार खोकर बैठ रहना ये महा दुष्कर्म है, न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।

इस ध्येय पर ही पाण्डवों का कौरवों से रण हुआ, जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।

इसके आधार पर ही उनकी वह पुस्तक अंग्रेजों ने प्रतिबन्धित कर दी थी। वास्तविकता ये है कि महाभारत युद्ध से भारत की भव्यता नष्ट नहीं हुई बल्कि महाभारत युद्ध के बाद ही भारत भव्य अर्थात् महान बनता है, जो रहस्य उपर्युक्त कवि को तो पता नहीं था, जो पाण्डवपति परमात्मा ने बताया है। इसी सम्बन्ध में पाण्डवपति निराकार परमपिता परमात्मा ने कहा है - अधिकार और कर्तव्य से विमुख होकर बैठ रहना ये महा दुष्कर्म है। जीवन में दोनों का सन्तुलन चाहिए। अपने अधिकार को ध्यान में रखकर दृढ़ संकल्प होकर अपने कर्तव्य पथ पर चलते रहना ही धर्म है। इस ध्येय पर ही पाण्डवों का आसुरी संस्कारों से युद्ध होता है, जो पतन के गर्त में पड़े भारतवर्ष के उत्कर्ष का साधन हुआ। ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि के सर्व राज़ों का ज्ञान दिया है और बताया है कि महाभारत युद्ध का स्वरमप क्या है, पाण्डव कौन है, कौरव कौन हैं। अभी जो महाभारत युद्ध सामने खड़ा है, उसके परिणाम स्वरूप ही भारत स्वर्ग बनने वाला है। पाण्डव तो अहिंसक वृत्ति वाले हैं, उनका किसी से युद्ध न हुआ है और न होने वाला है। पाण्डवों का मानसिक युद्ध है, जो अपनी तमोप्रधान वृत्तियों से होता है और पाण्डवपति परमात्मा की श्रीमत पर चलकर ही पाण्डव उस युद्ध में विजयी बनते हैं और भविष्य में आने वाले स्वर्ग में राजभाग के अधिकारी बनते हैं। परमपिता परमात्मा ने कर्मों का भी ज्ञान दिया है। कर्म करने वाले को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है, इसलिए मनुष्य को कभी भी अपने कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं होना चाहिए।

परमपिता परमात्मा की श्रीमत से, ब्रह्मा बाबा और ब्रह्मा वत्सों की कठिन तपस्या के प्रभाव से ये भारत अर्थात् विश्व स्वर्ग बनता है। सतयुग-त्रेता दो युगों अर्थात् 25 सौ साल तक इस धरा पर देवी-देवताओं का अटल-अखण्ड राज्य चलता है। सभी धन-धान्य से सम्पन्न होते हैं, दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होता है। सारे विश्व अर्थात् भारत में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक ही दैवी सभ्यता होती है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण और त्रेता में राम-सीता का

चक्रवर्ती राज्य होता है, जिसकी गद्दी वर्तमान के भारत में दिल्ली या दिल्ली के आसपास होती है। ''भारतवासियों का बेड़ा डूबा हुआ है। हर बात भारतवासियों के लिए ही है, और कोई खण्ड के लिए नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 23.08.03 रिवा.

''नम्बरवन भ्रष्टाचार है - एक-दो को पतित बनाना। यह है वेश्यालय। कलियुगी भारत को वेश्यालय कहा जाता है। सब विष से पैदा होने वाले हैं। सतयुगी भारत को कहा जाता है शिवालय। शिवबाबा का स्थापन किया हुआ पवित्र भारत।''

सा.बाबा 2.10.03 रिवा.

''भारतवासियों की बुद्धि सबसे विशाल थी, फिर वे ही बिल्कुल पत्थरबुद्धि बन जाते हैं, तब दुख पाते हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार बेसमझ बनना ही है। ... अभी तुमको समझ आई है कि हम ही पूज्य थे, फिर पुजारी बनें। अभी तुम बच्चों को खुशी होती है।''

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

''अभी भारत पर बहुत माया का परछाया पड़ा है, बहुत पतित बन गये हैं ... भारत 16 कला सम्पूर्ण था, भारतवासी देवी-देवता धर्म के थे ... बाप ही आकर भारतवासियों को ऐसा देवी-देवता बनाते हैं। ... भारत जैसा सुखधाम और कोई खण्ड होता नहीं है।''

सा.बाबा 4.7.06 रिवा.

''कल की बात है, भारत स्वर्ग था, हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे। ... भारत जैसा सुख कोई भी पा नहीं सकता। ... अगर सबको पता होता कि भारत सर्व के सद्गतिदाता, दुख से मुक्ति दिलाने वाले शिवबाबा का बर्थ प्लेस है तो उसका बहुत मान होता।''

सा.बाबा 6.7.06 रिवा.

''भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ-प्लेस है, शिव जयन्ति भी यहाँ मनाते हैं। ... भारत में देवी-देवतायें धर्म-श्रेष्ठ कर्म-श्रेष्ठ थे, अब यह धर्म-भ्रष्ट कर्म-भ्रष्ट बन गये हैं। ... सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक यह सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी भारत की है। ... यह सारा नाटक भारत पर ही बना है। भारत ही हेल और हेविन बनता है, और धर्म वालों के लिए ऐसा नहीं कहेंगे। वे तो हेविन में होते ही नहीं हैं।''

सा.बाबा 25.5.06 रिवा.

''भारत को स्वर्ग कहा जाता है, अभी तो नर्क बना है। ... भारत ही सबसे अधिक सुखी था। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 3.6.06 रिवा.

''भारतवासियों से बाप का विशेष प्यार है और भारतवासियों को भी विशेष नाज़ है। नशा है कि स्वर्ग भी विशेष भारत ही बनेगा और बनाने वाला बाप भी भारत में ही आते हैं। स्टोरी भी विशेष तो आदि से अन्त तक भारत की ही है। भारत अविनाशी खण्ड है।''

अ.बापदादा 25.3.95

''जब आत्मायें पवित्र, सतोप्रधान थीं, तब भारत को स्वर्ग कहा जाता है ... अभी कलियुग का भी अन्त है, इसको नर्क कहा जाता है ... बाप भारत में ही आते हैं, निराकार शिव की जयन्ति भी भारत में मनाते हैं। ... पांच विकारों के कारण भारत ने इतना दुख को पाया है। ... भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो प्योरिटी-पीस-प्रॉस्पेरिटी थी, पवित्र गृहस्थ आश्रम था।''

सा.बाबा 18.5.06 रिवा.

''जैसे ईश्वर की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की भी महिमा अपरमअपार है। ... कोई मरता तो कहते स्वर्गवासी हुआ। ... शिवबाबा भारत में ही आकर स्वर्ग की रचना रचते हैं। ... यह सारा खेल तुम भारतवासियों पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 12.5.06 रिवा.

''भारत ही आधा कल्प पूज्य, फिर भारत ही आधा कल्प पुजारी बनता है। ... हम ही पूज्य थे, फिर पुजारी बने हैं। ... बोलो - भारत ही स्वर्ग था, फिर अब भारत नर्क है। ... भारत जैसा पावन खण्ड कोई होता नहीं है।''

सा.बाबा 9.9.05 रिवा.

''बाबा ने कहा था - हर एक चित्र के ऊपर लिखा हुआ हो - 'शिव भगवानुवाच' ... यह भी लिखना चाहिए कि भारत जो स्वर्ग था सो नर्क जैसा कैसे बना, आकर समझो। ... भारत में रक्त की नदियां बहने के बाद फिर दूध की नदियां बहेंगी।''

सा.बाबा 9.9.05 रिवा.

''बाप भारत पर उपकार करके भारत को स्वर्ग बनाते हैं, रावण आकर अपकार कर नर्क बना देता है। यह खेल है सुख-दुख का। ... ड्रामा अनुसार जब टाइम आता है, तब ही मैं आता हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने।''

सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

''सच्ची कमाई एक बाप ही कराते हैं। ... भारत सचखण्ड था, अब झूठ खण्ड बना है। और खण्डों को सचखण्ड-झूठखण्ड नहीं कहा जाता है। ... स्वर्ग के मालिक भारतवासी ही बनेंगे।''

सा.बाबा 14.12.04 रिवा.

''इस समय ईश्वर और माया की चट्टाबेटी है। यह भी भारतवासियों को समझना पड़े। अभी अजुन

बहुत दुख आने वाले हैं। अथाह दुख आने वाले हैं। ... पुरुषोत्तम संगमयुग किसको कहा जाता है, यह भी बाप समझाते हैं। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। ... तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। ... भारत सतोप्रधान था, जिसको ही स्वर्ग कहा जाता है। तो जरूर अभी नर्क है।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

''भारत महान था तो अथाह सुख था, उसका नाम ही था सुखधाम, यह है दुखधाम और जहाँ आत्मायें रहती हैं, वह है शान्तिधाम। वहाँ पवित्र आत्मायें ही रहती हैं। वहाँ कोई अपवित्र आत्मा रह नहीं सकती। ... घर तो हम सबका वही है।''

सा.बाबा 20.1.07 रिवा.

''भारत जो पूज्य था, वही अब पुजारी बन गया है। जो पूज्य होकर गये हैं, उनकी अभी पूजा कर रहे हैं। जो पूज्य घराना था, वही अब पुजारी बन गया है। ... सतयुग में भारत मालामाल था। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई भी नहीं जानते हैं।''

सा.बाबा 22.1.07 रिवा.

भारत और मानव जीवन

वैसे तो ये सृष्टि अनादि-अविनाशी है परन्तु ये सृष्टि का चक्र अर्थात् विश्व-नाटक अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल तक चलने वाला है। हर चक्र के अन्त और आदि के संगम युग पर इस विश्व में एक आमूलभूत परिवर्तन होता है, जब सृष्टि में बड़ी उथल-पुथल होती है। सृष्टि के अनेक भूभाग जलमग्न हो जाते हैं, विश्व की अधिकांश जीवात्माओं के शरीर विनाश हो जाते हैं और आत्मायें परमधाम घर चली जाती हैं, उस समय भारत में ही थोड़ी सी मनुष्यात्मायें बचती हैं, जिनसे फिर इस विश्व में जनसंख्या वृद्धि होती है और जनसंख्या वृद्धि के साथ आवासीय क्षेत्र का विस्तार। इस तरह कहें तो ये अतिश्योक्ति नहीं वरन सत्य है कि नई सृष्टि अर्थात् मानव जीवन की आदि भारत में होती है। ब्रहमा को सृष्टि का रचता भी कहा जाता है और आदि-मानव भी कहा जाता है क्योंकि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा के द्वारा ही नई सृष्टि की रचना करते हैं। ब्रह्मा को ही इस्लाम धर्म में आदम, क्रिश्चियन धर्म में एडम के नाम से जाना जाता है। सृष्टि का आदि-मानव ब्रह्मा है और नये विश्व अर्थात् स्वर्ग का आदि पुरुष श्रीकृष्ण है और इन दोनों का जन्म भारत में ही होता है और दोनों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।

''फिर आओ मनुष्य सृष्टि पर, उसमें ऊंच किसको रखें ? प्रजापिता। यह तो कोई भी समझ सकते हैं कि मनुष्य सृष्टि का जो झाड़ है, उसमें ब्रह्मा हो गया मुख्य। शिव तो है आत्माओं का बाप। ब्रह्मा को रचता कह सकते हैं मनुष्यों का परन्तु किसकी मत पर करते हैं ? बाप कहते हैं मैं ही ब्रह्मा को

एडॉप्ट करता हूँ। ... प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रचते हैं। न्यू मैन द्वारा नई सृष्टि बनाते हैं। वास्तव में सतयुग का पहला बच्चा जो होता है, उनको ही न्यू कहेंगे। ... पुराना मैन ब्रह्मा को न्यू मैन बनाता हूँ।''

सा.बाबा 10.11.03 रिवा.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और प्रेम समाज का एक सूत्र है, जिसके बन्धन में समाज का निर्माण होता है। मानव जीवन भौतिक, धार्मिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, सामाजिक सर्व प्राप्तियाँ होगी तब ही ये मानव जीवन सफल होगा, जीवन में सुख-शान्ति होगी। भारत भूमि की ये विशेषता है कि प्राचीन काल में उसमें ये सभी प्रकार की समृद्धि थी, जिसके अवशेष अभी भी भारतवासियों में हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा आकर सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कराते हैं और वह संस्कार आत्माओं में भरते हैं, जिससे समाज में वे सभी विशेषतायें विद्यमान रहती हैं भले उनकी डिग्री कम होती जाती है। सर्वोच्च मानव जीवन के प्रतीक श्री नारायण और श्री लक्ष्मी का राज्य भारत में ही था और फिर भारत में ही होगा।

सृष्टि रचना के विषय में विश्व में अनेक भ्रान्तियां हैं। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को न समझने के कारण मनुष्य समझते हैं कि इस सृष्टि की कभी न कभी रचना अवश्य हुई होगी परन्तु ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने अभी इस सृष्टि की अनादि-अविनाश्यता का ज्ञान दिया है और इस सृष्टि चक्र का परिवर्तन कैसे होता है, वह रहस्यमय ज्ञान भी दिया है। वास्तव में भारत के शास्त्रों में भी विनाश के समय सम्पूर्ण सृष्टि के विनाश की बात नहीं है। शास्त्रों में भी विनाश के समय मनु-सत्यरूपा, सप्त ऋषियों के बचने का वर्णन है।

इस मनुष्य सृष्टि को कल्प वृक्ष की संज्ञा दी गई है क्योंकि इसमें वृक्ष के समान ही गुण-धर्म हैं और वृक्ष के समान ही ये वृद्धि को पाता है। इसका बीजारोपण अर्थात् कलम (Sampeling) भारत में ही परमपिता परमात्मा द्वारा लगती है अर्थात् इसका फाउण्डेशन भारत में है और विस्तार रूपी शाखायें सारे विश्व में विस्तार को पाई हैं।

''आधा कल्प सुख फिर आधा कल्प दुख, यह चक्र चलता ही रहता है। इसकी इण्ड नहीं होती है। ... अभी तुमको याद आता है कि हम कितने धनवान थे। बहुत धनवान जब देवाला मारते हैं तो याद आता है कि हमारे पास क्या-क्या था, कितना धन था। भारत साहूकार था, पैराडाइज था, अब देखो कितना गरीब है। गरीबों पर ही रहम पड़ता है। ... यह भी नाटक है। ... यह जैसे भारत के उत्थान-पतन की एक कहानी है।''

सा.बाबा 21.1.04 रिवा.

भारत का उत्थान और पतन

ये सारी सृष्टि एक विशाल नाटक है, जो हर 5 हजार साल में पुनरावृत्त होता है। इस नाटक की सारी कहानी भारत पर ही बनी हुई है अर्थात् इसमें भारत का आदि से अन्त तक पार्ट है। और सब देश और खण्ड तो बाई-प्लाट्स हैं अर्थात् उनका समय पर पार्ट चलता है और बीच में वे प्राय: लोप हो जाते हैं। ब्रह्मा तन पधारे शिवबाबा ने भी कहा है कि ये उत्थान और पतन की सारी कहानी भारत पर ही बनी हुई है। भारत का उत्थान तो विश्व का उत्थान और भारत का पतन तो विश्व का पतन हो जाता है। ये दिन और रात का खेल है। पूरे दिन और रात भारत में ही होते हैं। और सभी खण्ड और देश तो जब भारत की रात होती है, तब ही आते हैं और रात खत्म होते ही विलीन हो जाते हैं।

''यह बना-बनाया खेल है। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। तुम भी कल्प-कल्प यही पार्ट बजाते हो। कितनी खुशी की बात है। ... यह सुख-दुख का खेल भी तुम बच्चों के लिए है। बाप कहते हैं - यह आदि सनातन देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है।''

सा.बाबा 21.12.06 रिवा.

''बाबा जानते हैं जिन्होंने कल्प पहले राज्य-भाग्य लिया होगा, वे अब भी लेंगे। यह चक्र तुम्हारी बुद्धि में होना चाहिए। ... यह सारी कहानी भारत की ही है कि कैसे सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं, फिर विनाश होता है। ... तुम बच्चे इस ज्ञान का सुमिरन करते रहो तो बहुत खुशी रहेगी।''

सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

''भारत पहले शिवालय था, शिवबाबा ने शिवालय रचा और भारतवासी ही स्वर्ग में राज्य करते थे ... भारतवासी आपही पूज्य और आपही पुजारी बनते हैं। सीढ़ी उतरते-उतरते वाम मार्ग में चले जाते हैं तो पुजारी बन जाते हैं। ... यह सारा ड्रामा भारत पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 13.12.06 रिवा.

''रचता और रचना का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में होना चाहिए। ... जितना तुम याद करते रहेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। ... यह कहानी सारी तुम भारतवासियों के लिए है।''

सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

''बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा भारतवासियों को ही देते हैं। उनका जन्म भी यहाँ गाया जाता है। यह भी इस ड्रामा में अनादि नूँध है। ... भारत पर सबका लव है। बाप भी भारत में आते हैं।''

सा.बाबा 30.9.06 रिवा.

''खास भारतवासी उल्टे बन जाते हैं ... यह भी ड्रामा बना हुआ है, किसका भी दोष नहीं है। सब ड्रामा के वश हैं, ईश्वर के वश नहीं। ईश्वर से भी ड्रामा तीखा है। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर आऊंगा।''

सा.बाबा 25.9.06 रिवा.

''पतित बनते ही हैं काम-चिता से। क्रोध वा लोभ से पतित नहीं बनते हैं। ... भारत ही वाइसलेस वर्ल्ड था, वह अब विशश बना है। भारत के साथ सारा वर्ल्ड ही विशश है। ... जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं, उनको कभी संशय नहीं आ सकता। ... अब पवित्र रहो, मुझे याद करो तो गारण्टी है कि विश्व के मालिक बनोगे।''

सा.बाबा 11.9.06 रिवा.

''ड्रामा अनुसार भारत वालों को विशेष भाग्य मिला हुआ है, जो भारत में ही भगवान आते हैं और भारत को ही स्वर्ग बनाते हैं।''

अ.बापदादा 25.12.89

''अभी तुम ईश्वरीय गोद में हो। तुम्हारा यह अन्तिम जन्म बहुत अमूल्य है। भारत की खास, दुनिया की आम तुम रुहानी सेवा करते हो। ... बाप आकर तुमको वर्सा देते हैं, फिर रावण श्राप देते हैं। यह खेल है। यह भारत की ही कहानी है।''

सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

''तुम जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा लेते हैं। अभी भारत रावण से श्रापित है, इसलिए दुर्गति हो गई है। यह बड़ा श्राप भी ड्रामा में नूँधा हुआ है।''

सा.बाबा 19.5.06 रिवा.

''भारत जो इतना ऊंच था, वह नीच कैसे बना ? ... ड्रामा की भावी को समझे तो समझ में आये। ... ड्रामा कहने से ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानना चाहिए।''

सा.बाबा 15.6.06 रिवा.

''ड्रामा में नई दुनिया और पुरानी दुनिया, सुख और दुख का खेल बना हुआ है। ... बाप हमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाते हैं कि यह खेल कैसे बना हुआ है। ... इस ड्रामा में हम सब एक्टर्स हैं, यह कोई नहीं जानते। तुम बच्चे समझते हो कि इस ड्रामा में भारतवासियों का ही आलराउण्ड पार्ट है।''

सा.बाबा 13.5.06 रिवा.

''यह खेल बना हुआ है। पावन भारत और पतित भारत। जब पतित बनते हैं तो बाप को पुकारते

हैं। ... भारत स्वर्ग था और सब आत्मायें निराकारी दुनिया में थीं। अब बच्चे जान गये हैं कि ऊंच से ऊंच बाबा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं।''

सा.बाबा 22.4.06 रिवा.

''भारत में भगवानुवाच कहते हैं परन्तु भगवान किसको कहा जाता है, यह नहीं जानते। भगवान तो एक होता है। ... बाप को न जानने के कारण भारत कितना कंगाल बन पड़ा है। अब तुम बच्चे जानते हो भारत में इनकी (लक्ष्मी-नारायण) राजधानी थी। अभी तो नहीं है ना।''

सा.बाबा 10.5.04 रिवा.

''स्वर्ग का कितना गायन है, वहाँ सिर्फ भारत ही था। जो था वह फिर बनना ही है। ... तुमको अभी यह पता पड़ा है कि रावण भारत का दुश्मन है, जिसने भारत को कितना दुखी, कंगात बना दिया है।''

सा.बाबा 12.5.04 रिवा.

''सर्व आत्माओं का बाप एक ही परमपिता परमात्मा है, उनको ही ज्ञान का सागर कहेंगे। देवताओं में भी यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं है। ... भारतवासी जो अभी तमोगुणी हो गये हैं, वे कैसे जान सकते। ... साइन्स घमण्ड वाले समझते हैं कि साइन्स द्वारा भारत स्वर्ग बन गया है। ... कहते भी हैं कि इस समय भारत का पतन है, सतयुग में उत्थान है।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

''भारत पर ही हार और जीत का यह खेल बना हुआ है। भारत ही पावन था। कितनी पीस-प्योरिटी थी। ... तुम किसको भी समझा सकते हो कि भारत जो स्वर्ग था, वह नर्क कैसे बनता है।''

सा.बाबा 4.4.06 रिवा.

''एक बाप ही ग़रीब-निवाज है। भारत जो सबसे साहूकार था, अभी सबसे गरीब बना है, इसलिए मुझे भारत में ही आना पड़े। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। ... ड्रामा का भी पता होना चाहिए। ... भारत जैसी महिमा और कोई खण्ड की हो नहीं सकती।''

सा.बाबा 9.02.06 रिवा.

''अभी तुम बाप से वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुन रहे हो। ... भारत की चढ़ती कला और उतरती कला कैसे होती है, यह सबको समझाना है। सेकेण्ड में भारत स्वर्ग बन जाता है फिर 84 जन्मों में भारत नर्क बनता है। भारत गोल्डन एज से आइरन एज में कैसे आया है - यह सभी भारतवासियों को समझाना चाहिए।''

सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, माया रावण श्राप देती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं शिवालय स्थापन करता हूँ। भारत शिवालय था, अभी वेश्यालय है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। ... अभी भारत कितना भिखारी बन गया है। भारत ही कितना साहूकार था, स्वर्ग में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था।''

सा.बाबा 8.1.05 रिवा.

''भारत में जब सतयुग था तो इसको सचखण्ड कहा जाता था, फिर भारत ही पुराना बनता है तो हर बात, हर चीज झूठी हो जाती है। ... सर्वव्यापी के ज्ञान ने भारतवासियों को बिल्कुल कंगाल बना दिया है। बाप के ज्ञान से भारत फिर सिरताज बनता है।''

सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

''क्रिश्चियन भी कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइज था। भारतवासियों को तो कुछ भी पता नहीं है क्योंकि उन्होंने सुख बहुत देखा है तो दुख भी बहुत देख रहे हैं। तमोप्रधान बने हैं।''

सा.बाबा 16.12.04 रिवा.

''पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है। सतयुग के सुख हैं ही भारत के भाग्य में। ... जब भारतवासी गिरते हैं, तब दूसरे धर्म वाले नम्बरवार आते हैं। भारत गिरते-गिरते एकदम पट पर आ जाता है, फिर चढ़ना है।''

सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

''भारत की ही बात है। बाप आते ही भारत में हैं। भारत ही इस समय पतित बना है, भारत ही पावन था। ... भारत को सचखण्ड कहा जाता है। झूठखण्ड ही फिर सचखण्ड बनता है। सच्चा बाप ही आकर सचखण्ड बनाते हैं।''

सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं - भारत में ही घोर अंधियारा हुआ है, अब भारत में ही सोझरा चाहिए। तुम अज्ञान नींद में सोये पड़े थे, बाप आकर फिर से जगाते हैं। ... सब बातों का अर्थ समझना चाहिए ना। यह है सबसे बड़ी पढ़ाई।''

सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

''हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिर शूटिंग होती जाती है परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती रहती है। ... भारत वाइसलेस था, अभी विशश है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा ? यह बाप ही समझाते हैं। भगवानुवाच - मामेकम् याद करो। ... गीता में भी है - हे बच्चो,

तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

''भारतवासी ही बहुत सतोप्रधान थे, वे ही फिर बहुत जन्मों के अन्त में तमोप्रधान बने हैं। ... जो पहले-पहले देवता थे, वे ही सब धर्मों से जास्ती गिरे हैं। भल भारत की महिमा करते हैं क्योंकि बहुत पुराना है। विचार किया जाये तो इस समय भारत बहुत गिरा हुआ है। उत्थान और पतन भारत का ही है अर्थात् देवी-देवताओं का ही है। ... भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता है कि हम किस धर्म के हैं। ... भारत क्या था, अभी क्या बना है, वह बाप बैठ समझाते हैं। ... बाप कल्प-कल्प तुम बच्चों को ही समझाकर ईश्वरीय सम्प्रदाय बनाते हैं।''

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

''इन भूतों की प्रवेशता के कारण भारत का क्या हाल हो गया है। भारत जो सोने-हीरों आदि से भरा हुआ बड़ा मटका था, वह अब खाली हो गया है। कहते हैं - क्रोध के कारण पानी का मटका भी सूख जाता है। भारत का भी ऐसा हाल गया है। पांच भूतों ने भारत को बिल्कुल कंगाल बना दिया है। ड्रामा कैसा बना हुआ है, वह बाप बैठ समझाते हैं। अभी भारत कंगाल हो गया है, इसलिए बाहर से कर्जा लेते रहते हैं। भारत के लिए ही बाप समझाते हैं। ... कहते हैं भारत में 33 करोड़ देवतायें थे, परन्तु उनमें आठ रतन पास विद ऑनर होंगे, उनको प्राइज़ मिलेगी।''

सा.बाबा 26.6.04 रिवा.

''अभी तुम बच्चों की बुद्धि में ड्रामा का सारा राज़ बैठा हुआ है। ... बाप का है ही एक मन्त्र। बाप ने भारत में ही आकर ये मन्त्र दिया था, जिससे तुम देवी-देवता बने थे। ... कोई कहते बाबा पहले क्यों नहीं ये राज़ सुनाया। अरे, पहले कैसे सुनायेंगे। कहानी शुरू से लेकर नम्बरवार सुनायेंगे ना। ... सभी आत्माओं का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। ... यह सारा ड्रामा में नूँध है, तुमको सिर्फ पैगाम पहुँचाना है।''

सा.बाबा 31.5.04 रिवा.

''भारत में आज से 5 हजार वर्ष पहले तुम पहले सूर्यवंशी देवी-देवता थे। बरोबर भारत स्वर्ग था। ... भारत श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ था, रावण राज्य ने भारत की महिमा ही खलास कर दी। भारत की महिमा बहुत है तो निन्दा भी बहुत है। भारत बिल्कुल धनवान था, अब बिल्कुल कंगाल बना है।''

सा.बाबा 1.5.04 रिवा.

''इस समय अमेरिका है सबसे हाइएस्ट। बृहस्पति की दशा बैठी हुई है परन्तु उसके साथ राहू की दशा भी बैठी हुई है। ... विनाश तो सबका होना है। भारत जो सबसे साहूकार था, अब भारत गरीब है।''

सा.बाबा 25.1.07 रिवा.

''भोलानाथ किसी मनुष्य को नहीं कहा जाता, भोलानाथ शिवबाबा को ही कहेंगे। ... बिगड़ी भी भारतवासियों की है तो भारत की बिगड़ी को बनाने वाला भी जरूर भारत में ही आयेगा ना। ... भारतवासी यह भी समझते हैं कि भारत जीवनमुक्त था, जनक को जीवनमुक्ति मिली।''

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

''आज के इन्सान को ... यह है भारत की आज की हालत। दूसरे गीत में फिर भारत की महिमा भी करते हैं। ... भारत 100 प्रतिशत समझदार था, जो आज 100 प्रतिशत बेसमझ बन गया है। ... पूरे बेसमझ को पूरा समझदार बनाने वाला है एक बाप।''

सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

''कल्प-कल्प यह नेचुरल कैलेमिटीज आनी ही हैं। और सब खण्ड खत्म हो जायेंगे, बाकी एक भारत ही रह जायेगा। ... यह नेचुरल खेल बना हुआ है। ... यही भारत सुखधाम था, जो अभी दुखधाम है। भारत में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था।''

सा.बाबा 5.1.07 रिवा.

भारत का उत्कर्ष

विश्व के समस्त इतिहास और भूगोल पर विचार करें तो भारत जैसा उत्कर्ष किसी भी देश का नहीं है। भारत के प्राचीन उत्कर्ष के यादगार स्वरूप आज भी भारत में देवी-देवताओं के मन्दिर हें, चित्र हैं। जिसके लिए परमात्मा पिता ने भी कहा है - भारत के देवी-देवताओं के मन्दिर बनाकर पूजा होती है, ऐसी पूजा विश्व के किसी भी धर्मपिता, राजनेता, महापुरुष की नहीं होती है। भारत के उत्कर्ष के विषय में एक कवि ने कहा है -

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल जहाँ
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगा-जल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है,
ऋषि भूमि है वह कौन, भारतवर्ष है।

''भारत महान देश है - यह आजकल का स्लोगन है और भारत की ही महान आत्मायें गाई हुई हैं। तो भारत महान अर्थात् भारतवासी आत्मायें महान। तो हर समय अपनी महानता से भारत महान आत्माओं का स्थान देवात्माओं का स्थान साकार रूप में बनायेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.90

''यदा यदाहि ... मैं भारत में ही आता हूँ। भारत की महिमा अपरम्पार है। ... कितना वण्डरफुल

हार-जीत का यह बेहद का खेल है, जो बाप ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 19.5.04 रिवा.

''नई दुनिया में सिर्फ भारत ही था। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई बन न सके। फिर भारत जैसा अपवित्र भी कोई नहीं बनता है। जो पवित्र बनता, वही फिर अपवित्र बनता है, फिर पवित्र बनता है। ... भारत में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म था तब अथाह धन था।''

सा.बाबा 20.5.04 रिवा.

भारत का भौगोलिक उत्कर्ष

भारत भौगोलिक स्थिति के दृष्टिकोण से विशाल विश्व के विभिन्न देशो रूपी वृक्ष का तना है अर्थात् भारत से ही विघटित होकर विभिन्न देशों का अस्तित्व सामने आया है क्योंकि पहले सारा विश्व एक ही था, जिसका केन्द्र-बिन्दु वर्तमान भारत था। काल चक्र के हिसाब से भारत विश्व की भौगोलिक स्थिति की धूरी है, जिसके आसपास सारा विश्व स्थित है। विनाश के समय भारत भूमि का ही कुछ भूभाग जलमग्न होने से बचता है, जहाँ पर कुछ जनसंख्या बचती है, जो बाद में विस्तार को पाती है और समयानुसार अन्य भूखण्ड और देश भी अस्तित्व में आते हैं। भारत परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि है, जो अविनाशी हैं, इसलिए भारत भूमि भी अविनाशी है। बाबा ने भी कहा है ये भारत अविनाशी परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि है, इसलिए इसका कभी विनाश नहीं हो सकता परन्तु इसमें भी परिवर्तन अवश्य होता है, जिसके लिए बाबा ने कहा - तुम जो कुछ इन आंखों से देखते हो, वह कुछ भी रहेगा नहीं। कल्प बाद फिर वह अस्तित्व में आयेगा।

इस सत्य पर विचार करें तो देखेंगे कि काल-चक्र के हिसाब से भारत तीनों कालों और चारो युगों में रहता ही है, भले भारत के भूभाग का स्वरूप परिवर्तन हो जाता है। विनाश के समय समुद्रीय तटों का अधिकांश भूभाग जलमग्न होकर सागर में विलीन हो जाता है, जो समयान्तर में फिर ऊपर आता है। कुछ भूभाग प्राकृतिक आपदाओं भूकम्प आदि में परिवर्तन हो जाता है अर्थात् मुख्य भाग के कट जाता है, जो प्रकृति की परिवर्तन की प्रक्रिया के अनुसार समयानुसार पुनः संगठित होता है। समयानुसार सीमाओं का विस्तार भी होता है, तो समयानुसार विघटन की प्रक्रिया के कारण सीमाओं का संकुचन भी होता है परन्तु भारत तीनों कालों और चारो युगों में विद्यमान रहता है अर्थात् भारत और विश्व का केन्द्र-बिन्दु इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली और दिल्ली के आसपास का कुछ भूभाग विनाश के समय भी रहता ही है, जो बाद में धीरे-धीरे परिवर्तन होता जाता है।

सतयुग में पृथ्वी की धूरी आकाश के साथ 90 अंश के समकोण पर थी, द्वापर की उथल-पुथल के बाद वह एक तरफ झुक गई और झुक कर 23.5 अंश के कोण पर हो गई, जो

पुन: कल्पान्त में विनाश के समय 90 अंश के समकोण पर हो जाती है। पृथ्वी की धूरी के इस परिवर्तन के कारण पृथ्वी के वायुमण्डल और भौगोलिक स्थिति में आमूलभूत परिवर्तन होता है, जिसका प्रभाव विशेष लाभ भारत को मिलता है।

संगम युग पर विनाश के समय अणु-युद्ध और उसके कारण उत्पन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण पृथ्वी की स्थिति में अमूलभूत परिवर्तन होता है। उस समय मनुष्य विकारी से निर्विकारी बनते और योगबल के प्रभाव के कारण भूकम्प आते, ज्वालामुखी फटते, उथल-पुथल होती, जिसके कारण पृथ्वी जो 23.5 अंश के कोण पर झुकी हुई है, वह सीधी होकर 90 अंश के कोण पर स्थित हो जाती है, जिससे पृथ्वी के वातावरण में, जलप्रवाह में विशाल परिवर्तन होता है, जिससे पृथ्वी का स्वरूप बदल जाता है, नदियों का प्रवाह बदल जाता है, तत्वों के प्रभाव में परिवर्तन हो जाता है और पृथ्वी का ये भौगोलिक परिवर्तन आत्माओं के सुख के लिए होता है। कई भूभाग जो आज संगठित हैं, वे विघटित हो जाते हैं और जो विघटित हैं, वे संगठित हो जाते हैं।

ऐसे ही जब द्वापर युग के आदि में मनुष्य निर्विकारी से विकारी, पतित बनते हैं तो भी विश्व में कुछ विशेष उथल-पाथल होती है, भूकम्प आदि आते है, जिसके कारण पृथ्वी, जो अपनी धूरी पर 90 अंश के समकोण पर थी, वह फिर 23.5 अंश झुक जाती है। जिससे सागर के जल स्तर में परिवर्तन होता है, नदियों के बहाव में परिवर्तन होता है, भू-भागों के संगठन और विघटन में परिवर्तन होता है। कुछ पुराने भू-भाग जल मग्न हो जाते हैं और कुछ नये भू-भाग समुद्र तल के ऊपर आ जाते हैं। अनेक भू-भाग विघटित हो जाते हैं। उसी परिवर्तन और उथल-पुथल में दैवी सभ्यता के अवशेष, जो 2500 वर्ष के बाद बचे हुए थे, वे भी सागर के या पृथ्वी के गर्भ में विलीन हो जाते हैं और दैवी सम्भ्यता का इस धरा पर नाम-निशान विलुप्त हो जाता है और नई सभ्यताओं का प्रादुर्भाव होता है। उस समय परिवर्तन अवश्य होता है परन्तु ड्रामा अनुसार आत्माओं को दुख नहीं होता है क्योंकि उस समय तक जीवात्माओं के द्वारा कोई पाप कर्म तो होता नहीं है। हाँ, जो पावन से पतित बनते, उसके फल स्वरूप थोड़ी मानसिक अशान्ति अवश्य होती है। फिर धीरे 2 विकर्म बढ़ते हैं और विश्व में दुख-अशान्ति की वृद्धि होती है। मनुष्य की मानसिक स्थिति का तत्वों पर गहरा प्रभाव होता है और समयानुसार तत्व भी आत्माओं की मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं।

अभी भी भारत की भौगोलिक स्थिति को देखें तो देखते हैं अन्य देशों की अपेक्षा भारत की स्थिति सामान्य है। यहाँ दिन और रात में अधिक अन्तर नहीं है, मौसम में भी अपेक्षाकृत सामान्यता है। भल गरीबी होते भी भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि किसी भी परिस्थिति में जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध हो ही जाते हैं परन्तु कर्म और फल के विधान को नकारा नहीं जा

सकता है, वह भी अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है, जिसके लिए परमात्मा पिता ने कहा है भारत ही सतोप्रधान बनता है और भारत ही तमोप्रधान बनता है।

द्वापर के पहले प्राय: सारा ही विश्व भारत था परन्तु उस समय भारत नाम नहीं था। नाम तो जब एक से अधिक होते हैं तो परिचय के लिए रखना पड़ता है। द्वापर से जब विश्व अन्य सभ्यतायें अस्तित्व में आती हैं और उनमें लोभ के कारण स्वार्थपरता बढ़ती है तो उस स्वार्थपरता के कारण विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हुई और विभिन्न देश अस्तित्व में और तब सृष्टि के केन्द्रीय क्षेत्र का नाम भारत पड़ा।

भारत की सीमाओं की स्थिति - कहाँ और कितनी ?

सतयुग-त्रेता में सारा विश्व में एक ही चक्रवर्ती राजा का राज्य होता है, भले और भी छोटी-छोटी राजाइयां होती हैं, इसलिए वहाँ भारत नाम की भी आवश्यकता नहीं होती है। त्रेता के बाद जब दूसरे धर्म स्थापन हुए, मनुष्यों में देहाभिमान बढ़ने के कारण विकारों की प्रवेशता हुई, जिससे आपस में भेदभाव पैदा हुआ, सत्ता का लोभ बढ़ा और सत्ता की खींचातान हुई, जिससे विभाजन की बात पैदा हुई। जो राजाई इन्द्रप्रस्त (वर्तमान दिल्ली) की जो चक्रवर्ती राजाई से अलग हुई, उसने अपनी राजाई का अलग नामकरण किया और दिल्ली की चक्रवर्ती राजाई थी उसका नाम भारत पड़ा। जैसे वर्तमान में भारत स्वतन्त्र हुआ तो एक भारत के दो भाग हो गये और पाकिस्तान का जन्म हुआ, पाकिस्तान से बंगलादेश बना। दूसरे देशों के भी ऐसे ही नामकरण हुए। ऐसे विभाजित होते-होते भारत की सीमा जो सारे एशिया खण्ड में विस्तृत थी, वह दिल्ली के आसपास सिमिटती गई।

सतयुग-त्रेता में पूरा एशिया खण्ड ही भारत था परन्तु उस समय भारत नाम नहीं था। भल एक चक्रवर्ती राजा के साथ देवी-देवताओं की विभिन्न छोटी-छोटी राजाइयां भी थी, स्वेच्छा और प्रेम से एक ही चक्रवर्ती राज्य से सम्बद्ध थी, जिसकी राजधानी दिल्ली थी।

सृष्टि-चक्र के आदि में सारा ही विश्व एक था, जहाँ एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा थी, इसलिए कोई सीमा आदि नहीं थी।

''गॉड फादर हेविनली किंगडम स्थापन कर रहे हैं फिर भारत हेविन बन जायेगा। इसको कहा जाता है कल्याणकारी युग। यह बहुत से बहुत 100 वर्ष का युग है। ... भारत सतयुग में सुखधाम था, कलियुग में दुखधाम है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होनी है। गॉड एक है, वर्ल्ड भी एक है। नई वर्ल्ड में पहले है भारत। अभी भारत पुराना है, जिसको फिर नया बनना है। ... अभी भारत के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। सतयुग में पार्टीशन होता नहीं।''

सा.बाबा 31.10.03 रिवा.

''ईश्वर की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की भी महिमा अपरमअपार है। सारा मदार पवित्रता पर है। ... इस समय भारत बेगर है, सतयुग में प्रिन्स था। ... 5 हजार वर्ष पहले भारतवासी सतयुग में विश्व के मालिक थे, और कोई पार्टीशन आदि नहीं था।''

सा.बाबा 4.7.06 रिवा.

आदि सनातन दैवी सभ्यता और भारत की सीमायें

कल्पान्त में जब महाविनाश होता है और सृष्टि की अधिकांश आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम चली जाती हैं, तब भारत में ही थोड़ी सी आत्मिक शक्ति सम्पन्न आत्मायें बचती हैं, जिनसे इस सृष्टि की, भारत के आदि सनातन देवी देवता धर्म की अर्थात् आदि सनातन दैवी सभ्यता की कलम लगती है। उस समय सारा ही विश्व एक होता है, एक ही चक्रवर्ती राज्य होता है। भल उस समय अन्य आठ बड़ी राजाई भी होती हैं परन्तु सभी एक चक्रवर्ती राज्य के साथ संगठित होती हैं। एक चक्रवर्ती राज्य के संगठित होने के कारण किसी प्रकार सीमा-भेद नहीं था। ''भारत में सिर्फ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था और कोई खण्ड आदि नहीं था। तुम विचार करो भारत के कितने थोड़े टुकड़े में देवतायें होते हैं। जमुना के किनारे पर ही परिस्तान था, जहाँ लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे।''

सा.बाबा 17.12.04 रिवा.

''यहाँ क्या-क्या चीजें हैं, वहाँ यह कुछ भी नहीं होगा। सिर्फ भारत ही होगा। यह रेल आदि भी नहीं होगी। यह सब खत्म हो जायेंगे। वहाँ रेल की दरकार ही नहीं। छोटा सा तो शहर होगा। रेल तो चाहिए दूर-दूर गांव में जाने के लिए।''

सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

सतयुग-त्रेता युग में भारत की सीमाओं का विस्तार

सतयुग आदि से लेकर त्रेतायुग के अन्त तक जनसंख्या वृद्धि के साथ आवासीय क्षेत्र का सतत विस्तार होता है, जिसको दूसरे शब्दों में कहें कि भारत की सीमाओं का विस्तार होता है क्योंकि उस समय तक जो भी विस्तार होता है, वह एक ही चक्रवर्ती राजा के राज्य से सम्बन्धित होता है, जिसकी राजधानी वर्तमान भारत में दिल्ली या उसके आसपास होती है।

विनाश के बाद इस विश्व में 9,16,108 आत्मायें बचती हैं, जिनसे नये कल्प का शुभारम्भ होता है अर्थात् पहले श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के सिंहासन पर बैठने के समय सारे विश्व में 9,16,108 मनुष्यात्मायें ही होती हैं। फिर धीरे-धीरे विश्व में जनसंख्या बढ़ती है और जनसंख्या

वृद्धि के साथ राज्य का भी विस्तार होता है और भारत की सीमायें विस्तार को पाती हैं। भारत की सीमाओं के विस्तार की ये प्रक्रिया त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि तक चलती है। उस समय भल सारा विश्व एक था और किसी देश का आज के समान नाम आदि नहीं था परन्तु जनसंख्या और राजाई की दृष्टि से भारत की सीमायें पूरे एशिया खण्ड में फैली हुई थीं अर्थात् सारा ही एशिया खण्ड अर्थात् विश्व भारत था। दूसरे खण्ड और देश बाद में अस्तित्व में आये हैं।

द्वापर-कलियुग में भारत की सीमाओं का संकुचन

त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम समय में भी इस धरा पर कुछ विशेष उथल-पुथल होती है और विश्व का भौगोलिक रूप परिवर्तन होता है तो ऐतिहासिक परिवर्तन भी होता है। पहले जो एशिया खण्ड एक था, सब जगह सुखदायी वातावरण था, सुख-शान्ति का राज्य था। त्रेतायुग के अन्त और द्वापर युग के आदि में जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो इस धरा पर कुछ विशेष परिवर्तन होते हैं, भूकम्प आदि आते हैं, जिससे जो एशिया खण्ड एक सुखदायी खण्ड था, उसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। एशिया खण्ड भौगोलिक दृष्टि से विघटित हो जाता है। उस समय तक जो जनसंख्या थी, जो राजाइयां चलती थी , वे नदियों, पहाड़ों आदि के कारण एक-दूसरे से अलग हो जाती हैं। द्वापर से देहाभिमान के कारण मनुष्यों में स्वार्थपरता बढ़ती है, विकारों की प्रवेशता होती है, अपने-पराये का भेद बढ़ता है, अन्य धर्मों की भी स्थापना होती है, जिससे उस धर्मवंश की आत्मायें इस धरा पर आने लगती हैं और विश्व में विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। एक के बाद एक राजाई मुख्य राजाई अर्थात् भारत से कटती जाती है और अपनी राजाई का भिन्न नामकरण करते हैं और केन्द्रीय राजाई का नामकरण भारत के रूप में पड़ता है। ये विघटन की क्रिया कलियुग के अन्त तक सतत चलती रहती है। 1947 में भारत जब स्वतन्त्र हुआ तो इसी स्वार्थपरता के आधार पर भारत का विभाजन होकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो देश बन गये। बाद में पाकिस्तान के भी दो भाग हो गये, जिससे पूर्वी पाकिस्ता बंगलादेश के नाम से अलग देश हो गया। हिन्दुस्तान को अभी भी भारत के नाम से जाना जाता है और यही विश्व का केन्द्रबिन्दु है।

वर्तमान भारत और प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप

प्राचीन भारत सारा ही विश्व था परन्तु वर्तमान भारत सृष्टि का केन्द्र-बिन्दु तो है परन्तु विश्व अनेक देशों में विभाजित हुआ है। प्राचीन भारत के समय विश्व में सदाबहार मौसम था, प्रकृति मनवांच्छित फल देती थी परन्तु वर्तमान भारत में अनेक प्रकार की प्राकृतिक उथल-पुथल होती

रहती है, सूखे-अकाल की समस्यायें हैं। प्राचीन भारत में जनसंख्या नदियों के किनारों पर आबाद थी परन्तु वर्तमान भारत में सागर के तटों, पहाड़ों, नदियों के किनारों आदि सब जगह जनसंख्या का विस्तार है।

ये बड़े स्वमान की बात है कि हमने उस देश में जन्म लिया है और उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है, जो देश विश्व का सिरताज था और फिर सिरताज बनने वाला है।

* विश्व की जनसंख्या का केन्द्र बिन्दु भारत है और भारत में भी दिल्ली के आसपास का क्षेत्र, पहले इन्द्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। पहले भारत में ही स्वर्ग बनता है और उस समय जनसंख्या भी 9,16,108 के लगभग होती है। धीरे-धीरे जनसंख्या का विस्तार होता है, जिसके अनुसार भारत की भौगोलिक सीमाओं का भी विस्तार होता है और वह विस्तार सतयुग आदि से लेकर त्रेता अन्त तक चलता रहता है। द्वापर-कलियुग में भी जनसंख्या का विस्तार तो सतत होता रहता है परन्तु भारत की सीमायें संकुचित होती जाती हैं क्योंकि द्वापर से अन्य धर्म स्थापक आने आरम्भ हो जाते हैं और अपने-अपने धर्म की स्थापना करते हैं, उस धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आती रहती हैं परन्तु मनुष्यों में देहाभिमान की प्रवेशिता के कारण 5 विकार प्रवेश करते हैं, जिससे विश्व में विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है और उसके आधार पर पहचान के लिए देशों के नामकरण की प्रक्रिया आरम्भ होती है, जिससे मूल भारत की सीमायें संकुचित होती जाती हैं, जो कलियुग के अन्त में वर्तमान भारत की सीमाओं तक संकुचित होते-होते अपनी आदि स्थिति में पहुँच जाती हैं। ये भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन की प्रक्रिया अनादि काल से चल रही है और अनन्त काल तक चलती रहने वाली है। कल्प-कल्प इसकी पुनरावृत्ति होती है।

जैसे वृक्ष के विस्तार के साथ उसके फल-फूल-पत्तों की पालना अर्थ खाना-पानी के लिए वृक्ष की जड़े विस्तार को पाती हैं, ऐसे ही जनसंख्या की वृद्धि अर्थात् मनुष्य सृष्टि रूपी कल्प-वृक्ष का केन्द्र बिन्दु भारत है, जहाँ से जनसंख्या सारे विश्व में विस्तार को पाती है। जैसे जैसे जनसंख्या की वृद्धि होती है, उसके साथ ही भारत की सीमाओं का विस्तार भारत के चारो ओर सुदूर तक होता रहता है, जो त्रेता के अन्त तक चलता है। त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि से विश्व में जनसंख्या वृद्धि तो होती है परन्तु सीमाओं का जो विस्तार सतयुग-त्रेता में एकछत्र साम्राज्य के रूप में विस्तार को पाया था वह विभाजित होकर विभिन्न देशों रूपी शाखाओं के रूप में विस्तार को पाता है, जिससे भारत की सीमाओं का संकुचन आरम्भ हो जाता है। जनसंख्या का विस्तार तो कलियुग के अन्त अर्थात् महाविनाश तक पाता रहेगा परन्तु भारत की सीमाओं का संकुचन होता जाता है।

भारत का ऐतिहासिक उत्कर्ष

ये सृष्टि एक स्वर्ग-नरक, हार-जीत, राम-रावण, सुख-दुख, उत्थान-पतन का विराट नाटक है। इस विश्व-नाटक की सारी कहानी भारत पर ही बनी हुई है अर्थात् आदि से अन्त तक का पार्ट भारत में ही चलता है, और सब धर्म और देश तो बाइ-प्लाट्स हैं अर्थात् वे बीच में खत्म भी हो जाते हैं अर्थात् बीच में उनका पार्ट नहीं होता है। भारत इस विश्व-नाटक की धूरी है, उसके चारो तरफ ही ये विश्व-नाटक घूमता है। भले ही हर देश, धर्म, सभ्यता के अपने अपने इतिहास हैं परन्तु जहाँ विश्व के इतिहास की बात आती है, वहाँ भारत का इतिहास ही मुख्य है। यह विश्व-नाटक चक्रवत् हूबहू पुनरावृत्त होता है। इस चक्र को चार भागों में बांटा हुआ है। अन्य देशों का इतिहास तो इस चक्र के कुछ ही भाग में चलता है परन्तु भारत का इतिहास पूरे चक्र में चलता है। इस चक्र को चार भागों में बांटा गया है। सतयुग-त्रेतायुग को स्वर्ग कहा जाता है और द्वापर-कलियुग को नरक कहा जाता है। इसलिए इसको स्वर्ग-नर्क का खेल कहा जाता है। सतयुग-त्रेता में राम परमात्मा का स्थापन किया हुआ राज्य चलता है और द्वापर-कलियुग में माया रावण अर्थात् देहाभिमान के वशीभूत आत्माओं का राज्य चलता है, इसलिए इसको राम और रावण का खेल भी कहा जाता है। सतयुग-त्रेता में सारे विश्व में एक ही देवी-देवता धर्मवंश होता है, द्वापर से और धर्म आने भारत का इतिहास 5000 वर्ष अर्थात् पूरे कल्प का है। और किसी देश, धर्म या सभ्यता का इतिहास 5000 वर्ष का नहीं है। उन सबका इतिहास 2500 वर्ष से कम का ही है क्योंकि वे सभी धर्म और सभ्यतायें द्वापर के बाद ही स्थापन होते हैं अर्थात् अस्तित्व में आती हैं। अभी स्कूल-कालेजों में जो विश्व का इतिहास पढ़ाया जाता है, वह तो सृष्टि-चक्र के आधे भाग अर्थात् द्वापर-कलियुग के समय के एक अंश का ही है क्योंकि उससे पहले का मनुष्यों को कुछ पता नहीं है क्योंकि द्वापर के आदि में भी कोई इतिहास लिखा नहीं जाता था। ये लिखना आदि तो बहुत बाद में आरम्भ हुआ है।ज्ञान सागर परमात्मा पिता ने अभी इस सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है अर्थात् सारे सृष्टि-चक्र का इतिहास बताया है और इसके आदि-अन्त का सारा ज्ञान दिया है। सृष्टि-चक्र के इतिहास के सम्बन्ध में बाबा ने कल्प-वृक्ष और सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है, जिसको समझने के बाद ही विश्व के यथार्थ इतिहास की जानकारी होती है। इस सम्बन्ध में परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसका संक्षिप्त वर्णन यहाँ करते हैं।

''बाप आते हैं भारत को फिर से गरीब से साहूकार बनाने। ... तुम बच्चों को नशा है कि हमारा भारत बहुत साहूकार था। ... कोई की 2500 वर्ष की, कोई की 500 वर्ष की परन्तु तुम्हारी हिस्ट्री है 5 हजार वर्ष की।''

सा.बाबा 9.8.06 रिवा.

सतयुग

श्रीकृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का भारत

''भारत में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था। ... अभी मौत की पूरी तैयारी कर रहे हैं। बरोबर 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक यह वही महाभारत लड़ाई है।''

सा.बाबा 6.10.03 रिवा.

''भारत में श्रेष्ठाचारी महाराजा-महारानी होकर गये हैं। सतयुगी देवी-देवतायें डबल सिरताज थे। पवित्रता का ताज भी था और रतनजड़ित ताज भी था। ... श्रेष्ठाचारी भारत को स्वर्ग कहा जाता है, वही राज्य अब भ्रष्टाचारी हो गया है। अब बाप कहते हैं - मैं आया हूँ भ्रष्टाचारी राज्य को श्रेष्ठाचारी राज्य बनाने के लिए।''

सा.बाबा 25.10.03 रिवा.

नये कल्प की आदि संगमयुग की समाप्ति और सतयुग के आदि से ही कही जायेगी। सतयुग का पहला राजकुमार श्रीकृष्ण होता है, जो सिंहासन पर बैठने के बाद श्रीनारायण कहलाते हैं। श्रीकृष्ण की महिमा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी के रूप में गाई जाती है। संगमयुग के अन्त में जब महाभारी महाभारत लड़ाई होती है, प्राकृतिक आपदाओं आदि के द्वारा सृष्टि के परिवर्तन के लिए महाविनाश की प्रक्रिया होती है, तब पृथ्वी का अधिकांश भूभाग जलमग्न हो जाता है और भारत का कुछ उत्तरी भूभाग बचता है, जिसमें कुछ जनसंख्या बचती है, जहाँ से नई सृष्टि का शुभारम्भ होता है। इस तरह सतयुग के आदि में केवल भारत ही होता है और भारत ही स्वर्ग बनता है। जब चक्रवर्ती महाराजा-महारानी श्रीनारायण और श्रीलक्ष्मी सिंहासन पर बैठते हैं तो उस समय सात अन्य राजाइयां भी होती हैं, जो स्वेच्छा और प्रेम के साथ चक्रवर्ती महाराजा के साथ चलते हैं और विश्व में एक राज्य, एक भाषा, एक मत, एक धर्म होता है और विश्व में पूर्ण सुख, शान्ति, सम्पन्नता होती है। विश्व में ये सुख, शान्ति, सम्पन्नता युक्त सतयुगी साम्राज्य 1250 वर्षों तक चलता है। इस विश्व को पूर्ण स्वर्ग कहा जाता है।

पहले-पहले विश्व में 9,16,108 मनुष्य जीवात्मायें इस धरा पर होती हैं। उसके बाद धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होती है, पृथ्वी के नये भूभाग अस्तित्व में आते हैं या नये भूभागों में जनसंख्या का विस्तार होता है और भारत के राज्य की सीमाओं का विस्तार होता जाता है। इस राज्य के लिए गायन है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते हैं। इस राज्य के लिए ही एक कवि ने कहा है -

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा, वह भारत देश है मेरा।

सतयुग में मनुष्य की औसत आयु 150 वर्ष होती है और 1250 वर्ष में एक मनुष्यात्मा 8 जन्म लेती है। इस दैवी स्वराज्य को स्वर्ग कहा जाता है, जिसको प्राय: सभी धर्मों में भिन्न नामों से याद करते हैं।

''नई दुनिया में सिर्फ भारत खण्ड ही होगा, सो भी छोटा होगा। बाकी सब चले जायेंगे परमधाम में। ... पुरानी दुनिया के विनाश की भी पहले से ही नूँध है। ... तमोप्रधान पृथ्वी पर देवतायें पैर धर न सकें। जब चेन्ज होगी, तब पाँव धरेंगे।''

सा.बाबा 19.12.06 रिवा.

''भारतवासी यह नहीं जानते कि राधे-कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का आपस में क्या सम्बन्ध है।''

सा.बाबा 3.11.06 रिवा.

''भारतवासियों के लिए कहते हैं - तुम कितने साहूकार समझदार थे, इन लक्ष्मी-नारायण का सारे विश्व पर राज्य था। ... भारत में कृष्ण जयन्ति मनाते हैं। वास्तव में कृष्ण-लीला कुछ है ही नहीं। ... जयन्ति मनानी है शिवबाबा की, जो सबको हेल से हेविन में ले जाते हैं।''

सा.बाबा 28.9.06 रिवा.

''पहले-पहले सिर्फ भारत ही था, यह कोई नहीं जानते हैं। ... कहते भी हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत हेविन था। ... भारत जैसा दानी खण्ड और कोई नहीं होता है। ... अभी भारत रावण से श्रापित है, इसलिए दुर्गति हो गई है।''

सा.बाबा 19.5.06 रिवा.

''भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था, जिसको स्वर्ग सचखण्ड कहा जाता था। अब भारत फिर से सचखण्ड बन रहा है। भारत की महिमा बड़ी जबरदस्त है क्योंकि भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ-प्लेस है।''

सा.बाबा 19.6.06 रिवा.

''कहते भी हैं - क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। पांच हजार वर्ष पूरे हो जाते हैं। ... बाप वर्सा देते हैं, माया वर्सा छीन लेती है। यह अनेक बार खेल हो चुका है और होता रहेगा। इसका अन्त नहीं है।''

सा.बाबा 20.6.06 रिवा.

''विकार भी अधर्म है ना। सब अधर्मों का विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने मुझे आना पड़ता है। भारत में जब सतयुग था तो एक ही धर्म था, वही धर्म फिर अधर्म बनता है। ... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। अपने को आत्मा निश्चय करना है।''

सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

''इन लक्ष्मी-नारायण ने कौन से कर्म किये जो ऐसा जन्म मिला ? यह बाप बैठ समझाते हैं। ... बाप कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति भी समझाई है। ... ये सब बातें वे ही समझ सकते हैं, जिन्होंने शुरू से भक्ति की होगी।''

सा.बाबा 17.8.04 रिवा.

''सतोप्रधान भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। भारत बहुत उत्तम था, अभी कनिष्ट है। ... बेहद के बाप से बेहद का वर्सा भारत को मिलता है, इसलिए उसको सतयुग को कहा जाता है शिवालय।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

''वास्तव में आत्मा को काल खाता नहीं है। ड्रामा अनुसार जब समय होता है तो आत्मा चली जाती है। ... सतयुग में भारतवासियों की आयु भी बड़ी थी क्योंकि योगी थे। ... आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। काल कुछ भी नहीं है। ... सतयुग में यथा राजा-रानी आयु पूरी कर शरीर छोड़ते हैं, तथा प्रजा का भी ऐसा ही होता है परन्तु पद का पर्क है।''

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो बरोबर भारत में हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस था, अब नहीं है। ... यथार्थ नाम भारत है, हिन्दुस्तान नाम रांग है। वास्तव में भारत का धर्म आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है। ... भारत अब झूठ खण्ड है, फिर सतयुग में होगा सच खण्ड। भारत कभी विनाश को नहीं पाता है।''

सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''भल यहाँ आदमशुमारी निकालते हैं परन्तु वह भी एक्यूरेट नहीं निकालते हैं। आत्मायें कितनी हैं, वह सही हिसाब कभी निकाल नहीं सकते। अन्दाज लगाया जाता है कि सतयुग में कितने मनुष्य होंगे क्योंकि वहाँ सिर्फ भारत ही रह जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम विश्व के मालिक बन रहे हैं।''

सा.बाबा 1.6.04 रिवा.

''भारत सच-खण्ड था, जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, उस समय और कोई खण्ड नहीं था। मनुष्य यह नहीं जानते कि स्वर्ग कहाँ है ?''

सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

''बाबा बार-बार समझाते रहते हैं कि बाप को याद करो तो किचड़ा निकल जाये। वे सन्यासी तो हठयोग सिखलाते हैं। ऐसे मत समझना कि हठयोग से तन्दुरुस्ती अच्छी होती है, वे कभी बीमार

नहीं पड़ते। नहीं, वे भी बीमार पड़ते हैं। भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, सबकी बड़ी आयु, सब हेल्दी-वेल्दी थे। ... भारत को ऐसा किसने बनाया ?''

सा.बाबा 15.3.04 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। सतयुग में फिर यह लक्ष्मी-नारायण ही होंगे। वहाँ सिर्फ भारत ही होता है।''

सा.बाबा 27.2.04 रिवा.

त्रेतायुग

राम-सीता का भारत

जब सतयुग के 1250 वर्ष पूरे हो जाते हैं तो सतोप्रधानता की कलाओं में कुछ कमी आ जाती है और जो प्रकृति 16 कला सम्पूर्ण थी, वह 14 कला रह जाती है, आत्मिक शक्ति की कलायें भी गिर जाती है, जिसके कारण राज सत्ता में कुछ परिवर्तन होता है और जो गद्दी सतयुग में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के नाम से जानी जाती है, उसका नाम बदल जाता है और वह श्रीसीता-श्रीराम के नाम से प्रख्यात होती है। सतयुग में जो आठ राजाइयां होती हैं, वे बढ़कर त्रेतायुग में 12 हो जाती हैं क्योंकि जनसंख्या वृद्धि हो जाती है, राज्यों का भी विस्तार हो जाता है। वहाँ पर भी मनुष्य पूर्ण सुख, शान्ति, सम्पन्न होता है। दुख-अशान्ति का नाम निशान नहीं होता है परन्तु सुख की कलायें अवश्य गिर जाती हैं और उस दुनिया को 14 कला सम्पूर्ण अर्थात सेमी-स्वर्ग कहा जाता है।

पवित्रता की कलायें गिरने के कारण त्रेतायुग में मनुष्य की औसत आयु भी घट जाती है। सतयुग में औसत आयु 150 वर्ष होती है, वह त्रेता में घटकर 100 साल रह जाती है, जिसके कारण 1250 वर्ष में एक मनुष्यात्मा के 12 जन्म होते हैं।

त्रेता के अन्त तक कोई दूसरा धर्म स्थापन नहीं होता है, मनुष्य में आत्मिक ज्ञान होता है, इसलिए आत्मा का अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण अधिकार होता है। उस समय तक पूरा विश्व एक ही था। कोई दूसरा धर्म-देश न होने के कारण भारत का भी भारत के रूप में अलग नाम नहीं होता है क्योंकि वहाँ भारत कहने की भी आवश्यकता नहीं होती है।

राम-सीता के राज्य के लिए भी गायन है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते थे। सभी प्रेम-प्यार से रहते थे। इसीलिए गायन है - दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य काहू नहिं व्यापा।

इस प्रकार सतयुग और त्रेता को मिलाकर स्वर्ग कहा जाता है, उसको ही ब्रह्मा का दिन

भी कहा जाता है। त्रेतायुग के बाद द्वापरयुग आता है अर्थात् ब्रह्मा की रात आरम्भ होती है।

द्वापर युग

राजा विक्रमादित्य का भारत

त्रेतायुग के अन्त और द्वापरयुग के आदि के संगमयुग पर जब देवतायें वाममार्ग में जाते हैं अर्थात् आत्माभिमानी से देहाभिमानी बनते हैं, सृष्टि में योग-बल से भोग-बल की सृष्टि का आरम्भ होता है तो प्रकृति की रुष्टता के कारण सृष्टि रंगमंच पर कुछ प्राकृतिक आपदायें आदि आती हैं, जिसके कारण पृथ्वी पर कुछ उथल-पुथल होती है। पृथ्वी जो अपनी धूरी पर जो 90 अंश पर सीधी थी, वह साढ़े तेईस अंश झुक जाती है, जिससे जल-प्रवाह बदल जाता है और जो एशिया खण्ड और सारा विश्व एक देश के रूप में था, उसमें नदियों, पहाड़ों और सागर के जल-स्तर के कारण विभाजन हो जाता है और एशिया खण्ड कई देशों में विभाजित हो जाता है। उस विभाजन के कारण विभिन्न राजाइयाँ अलग-अलग हो जाती हैं, उनके अलग-अलग नाम पड़ जाते हैं और जो मुख्य राजाई, जिसकी गद्दी दिल्ली थी, उसके अन्तर्गत जो साम्राज्य होता है, वह भारत के नाम से जाना जाता है। पहले जो एक राजाई थी, जिसके अन्तर्गत 12 अन्य राजाइयां थी, जिनमें परस्पर प्रेमभाव था, पृथ्वी पर सदा बहार मौसम था, उसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। भारत के विभाजन की ये प्रक्रिया बाद में भी चलती रहती है अर्थात् बाद में उसमें भी विभाजन होता जाता है और नये-नये देशों का जन्म होता जाता है, उनका भिन्न नामकरण होता है, जिससे दिनोदिन भारत का मुख्य साम्राज्य की सीमायें संकुचित होती जाती हैं।

मनुष्य देहाभिमानी बनता है तो उसमें काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार आ जाते हैं, जिससे उसके कर्म गिरते हैं, जिसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति का आरम्भ होता है, जिससे मुक्ति पाने के लिए मनुष्यों में भक्ति भावना जाग्रत होती है और उस द्वापरयुगी भारत के प्रथम राजा विक्रमादित्य होते हैं, जिन्होंने सोमनाथ के मन्दिर का निर्माण किया और भक्ति के लिए उसमें शिवलिंग की स्थापना की, जहाँ से भक्ति मार्ग का आरम्भ होता है।

उस समय भी भारत में अपेक्षाकृत सुख, शान्ति, सम्पन्नता थी। भारत में किसी प्रकार की कमी नहीं थी परन्तु पवित्रता की कलायें गिरने आत्मायें देहाभिमानी बन जाती हैं, जिससे सतयुग-त्रेता में जो योगबल से सन्तानोत्पत्ति होती थी, वह भोगबल के रूप में परिवर्तन हो जाती है अर्थात् आत्मायें सन्तानोत्पत्ति के लिए कामोपभोग में प्रवृत् होता है, जिसके कारण आत्मायें मानसिक अशान्ति का अनुभव करती हैं और उससे छूटने के लिए भक्ति आदि का सहारा लेती हैं, जहाँ से भक्तिमार्ग का आरम्भ होता है। अहंकार और स्वार्थपरता के कारण भारत में भी अनेक

राजाओं ने सिर उठाया और अनेक राजाइयाँ बन गई परन्तु पहले-पहले इन राजाइयों की स्थापना में किसी प्रकार का रक्तपात नहीं हुआ। स्वेच्छा से विभाजन होता गया।

कलियुग

पृथ्वीराज चौहान का भारत

भारत में दिल्ली गद्दी पर अन्तिम हिन्दू राजा के रूप में पृथ्वीराज चौहान का राज्य रहा। उस समय तक विश्व में इस्लाम, बौध, क्रिश्चियन, मुसलमान आदि अन्य कई धर्मों की स्थापना हो गई थी। उसमें सबसे पहले भारत के पश्चिमी भाग में इस्लाम धर्म की स्थापना हुई, जहाँ उसका विस्तार हुआ और बौध धर्म की स्थापना भारत में हुई और उसका विस्तार भारत के पूर्वी और उत्तरी भूभाग में हुआ।

भारत की समृद्धि से प्रभावित लोभ के वशीभूत मोहम्मद गोरी ने 17 बार भारत पर चढ़ाई की और 16 बार पृथ्वीराज चौहान ने उसको हराने के बाद भी उसको क्षमादान देकर वापस लौटा दिया परन्तु 17वीं बार पृथ्वीराज हार गया और मोहम्मद गोरी उसको बन्दी बनाकर अफगानिस्तान ले गया और भारत के केन्द्र दिल्ली में हिन्दू साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। अफगानिस्तान ले जाकर मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज की आंखे फोड़ दी। अन्धे होने के बाद भी पृथ्वीराज ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया और मोहम्मद गोरी को मार दिया। उसके सम्बन्ध में तो सभी जानते ही हैं।

इसी तरह यूनान के शासक सिकन्दर महान ने विश्व-विजय के लक्ष्य से भारत पर आक्रमण किया और भारत के उत्तरी राज्य के राजा पोरस से उसका युद्ध हुआ, जिसमें भले ही कारणवश पोरस हार गया परन्तु उसने अपनी वीरता और स्वाभिमान का परिचय देते हुए सिकन्दर का दिल जीत लिया, जिससे सिकन्दर ने पोरस को उसका राज्य वापस दे दिया और वहाँ से ही वापस चला गया।

''मनुष्य जानते नहीं हैं कि रावण क्या है, राम क्या है। यह बेहद की कहानी है। ... राम जरूर सुख देने वाला होगा, रावण जरूर दुख देने वाला होगा। भारत में रावण राज्य है तो उसको शोक-वाटिका कहा जाता है। ... इस रावण ने सबको दुख दिया है, खास भारत को।''

सा.बाबा 19.10.03 रिवा.

बाबा ने कहा है - स्वर्ग भी भारत ही होता है तो पूरा नर्क भी भारत ही बनता है। कलियुग के अन्त में जब भारत तमोप्रधान बनता है तो सारी दुनिया ही तमोप्रधान बन जाती है। भल जो आत्मायें परमधाम से आती हैं, उनमें कुछ पवित्रता होती है, जिससे उनको सुख होता, उनकी मान-

मर्यादा होती है। कलियुगी भारत के इतिहास पर भी विचार करें तो भी यहाँ की सभ्यता में, आत्माओं में कुछ मूलभूत विशेषतायें और गुण आज भी विद्यमान हैं, जो अन्य सभ्यताओं, धर्मों और देशों में नहीं मिलते हैं। भले ही तमोप्रधानता में भी कुछ विशेष बातें भारत में हैं, जिनके कारण यहाँ दुख-अशान्ति अधिक होती है। यथा बेईमानी, काम-वासना की प्रधानता आदि-आदि। काम-वासना के वशीभूत तमोप्रधानता की अनेक घटनायें होती रहती हैं। काम-वासना के वशीभूत बलात्कार करना, फिर उनको मार देना। बेईमानी, रिश्वतखोरी के कारण भारत में अनेक प्राकृतिक सम्पदायें होते हुए भी इतनी उन्नति नहीं कर सका, जबकि जापान आदि कई देशों ने बहुत उन्नति की है। इस सम्बन्ध में कुछ बातों पर यहाँ विचार करते हैं।

इसी प्रकार मुगल शासक बाबर से पहले पश्चिमी और मध्य एशिया के अनेक मुसलमान शासक भारत की समृद्धि से आकर्षित होकर भारत पर आक्रमण करते रहे और यहाँ से प्रचुर धन-सम्पदा लूट कर ले गये। उनमें अफगानिस्तान के शासक मोहम्मद गजनवी, मध्येशिया के तैमूरलंग, ईराक के नादिरशाह आदि ने भी भारत पर आक्रमण किया और यहाँ की विपुल धन-सम्पदा को लूट कर अपने देश ले गये।

मुगल वंश के शासक बाबर ने भारत पर आक्रमण करके यहाँ ही अपनी राजाई स्थापन की, जिसके वंशधर अंग्रेजों के समय तक दिल्ली की गद्दी पर शासन करते रहे। भले बीच-बीच में उथल-पाथल भी होती रही और अन्त में भारत में अंग्रेजों का राज्य चला।

बहादुरशाह जफर का भारत

बहादुर शाह जफर मुगल साम्राज्य का अन्तिम बादशाह था। वह एक अच्छा शायर था। स्वतन्त्रता संग्राम में जब अंग्रेजों ने उसको कैद कर लिया और एक अंग्रेज ने उपहास में उससे कहा कि और कुछ शायरी कर लो, तब उसने ये शायरी कही -

जब तलक हिन्दओं में बू रहेगी हिन्दोस्तान की, लण्दन के तख्ते-ताज पर चलती रहेगी तेग हिन्दोस्तान की।

ये भारत भूमि का प्रभाव और स्वतन्त्रता के दीवानों का एक उदाहरण है। यद्यपि उस समय सभी राजा-महाराजा, नबाब आदि अपने ऐश-आराम में लीन थे और अंग्रेजों के शासन के आधीन थे फिर भी समय पर पर खून अपना प्रभाव दिखाता ही है।

''भोलानाथ भण्डारी शिव को कहते हैं अर्थात् भण्डारा भरपूर करने वाला। कौन सा भण्डारा ? क्या धन-दौलत, सुख-शान्ति का ? बाप आये ही हैं पवित्रता-सुख-शान्ति का भण्डारा भरपूर करने। कलियुग में पवित्रता-सुख-शान्ति का देवाला है।''

सा.बाबा 31.10.03 रिवा.

इस विषय में कुछ उदाहरण भारत की चारित्रिक समृद्धि के अन्तर्गत लिखा गया है। कलियुग के भारत के इतिहास में महाराणा प्रताप और अकबर का भारत, शिवाजी और औरंगजेब आदि का युद्ध होता रहा और भारत का धीरे-धीरे पतन होता गया। अन्त में भारत पर अंग्रेजों का शासन हुआ, जिन्होंने कूटनीति से भारत की विपुल सम्पदा को अपने देश में पहुंचा दिया।

अंग्रेजों के समय का भारत

कोलम्बस (1492), वास्कोडिगामा (1497) के दृष्टिकोण का भारत

भारत की सम्पन्नता से प्रभावित होकर ही कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने भारत की खोज के लिए पुरुषार्थ किया।

मेक्स मूलर ने अपनी जीवन कहानी में लिखा है यदि हम सम्पूर्ण विश्व की खोज करें, ऐसे देश का पता लगाने के लिए, जिसे प्रकृति ने सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली और सुन्दर बनाया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर संकेत करूँगा।

अशोक का भारत
चन्द्रगुप्त का भारत
महाराणा प्रताप और अकबर का भारत
शिवाजी और औरंगजेब का भारत
गुरु तेगबहादुर का बलिदान और संकल्प
गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों का दृढ़ संकल्प
कबीर, मीरा, शंकराचार्य, विवेकानन्द का भारत
झांसी रानी, भगत सिंह का भारत
महात्मा गांधी का भारत

(राजपूतानियों का जौहर, रानी कर्मवती की राखी, महाराणा प्रताप के साथ लड़ाई और अकबर के सेनापति के विषय में अनेकानेक बातें भारत की महानता और चरित्र की महानता के उदाहरण हैं)

आदि-आदि अनेकानेक राजाओं, महापुरुषों की गौरव गाथा भारत की महानता का परिचय देती है, जिसको सब जानते हैं और उसको यहाँ लिखने या वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है।

''भारत के इस समय के मनुष्यों और भारत के प्राचीन मनुष्यों में ह्यूज कन्टॉस्ट है ना। ... मोहम्मद गज़नवी कितने ऊंट भरकर ले गये। भारत में अथाह धन था। ... देवी-देवताओं के हीरे-जवाहरों के मन्दिर बनाते थे। तुम ही पूज्य राव थे, फिर तुम ही 84 जन्म ले पूरे रंक बने हो।

ऐसी-ऐसी बातें घड़ी-घड़ी सुमिरन करनी चाहिए।''

सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

वर्तमान भारत और प्राचीन भारत का ऐतिहासिक स्वरूप एवं दोनों का सम्बन्ध

सतयुग-त्रेता में भारत स्वर्ग था, जो द्वापर-कलियुग में नर्क बन गया परन्तु अभी कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगमयुग है, जब परमात्मा द्वारा सतयुग की स्थापना हो रही है और कलियुग के विनाश की भी तैयारी हो रही है। सृष्टि-चक्र के नियमानुसार स्वर्ग से ही नर्क बनता है और नर्क से ही स्वर्ग की स्थापना होती है अर्थात् परमात्मा नर्क में ही आकर इसको स्वर्ग बनाते हैं।

''बरोबर तुम्हारा भारत पावन श्रेष्ठाचारी था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, जिसकी ही महिमा गाते हो - सर्वगुण सम्पन्न ... अहिंसा परमोधर्म। वहाँ सब सुखी थे। ... बाप कहते हैं - मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो।''

सा.बाबा 30.10.03 रिवा.

अभी तक स्कूल-कालेजों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, उसमें बताया जाता है कि आर्य अर्थात् सुधरे हुए मनुष्य भारत में मध्य-एशिया से आये परन्तु सत्यता ऐसी नहीं है। सत्यता का ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा ने अभी दिया है। विश्व और भारत में ये जो मान्यता है और उनमें जो भावना नीहित है, वह सरासर गलत है और भ्रान्तिपूर्ण है। ये मान्यता किसी दुर्भावना से प्रेरित है। ये भ्रान्ति भारतवासियों को भ्रमित करने और उनके स्वाभिमान को दबाने के लिए यहाँ शासन करने वाले विदेशी शासकों द्वारा फैलाई गई है, जिससे वे निष्कण्टक होकर यहाँ राज्य कर सकें।

वास्तविकता ये है कि जब विश्व में द्वापर से विघटन की प्रकिया आरम्भ हुई तो मूल भारतवासी जिनको भारत की सभ्यता और भारत की मान्यताओं से प्रेम था, देवी-देवताओं के वंशज थे, दैवी धर्म की मान्यताओं में विश्वास और श्रृद्धा रखने वाले थे, वे विघटन के समय उस देश को छोड़कर भारत में आ गये और उनका ये पलायन स्वभाविक ही था परन्तु इसका ये अर्थ नहीं है कि आर्य मध्येशिया से भारत में आये और भारत में आर्य नहीं थे, भारत असभ्य था। भारतीय सभ्यता सबसे प्राचीन सभ्यता है और सभी सभ्यताओं की जननी है। भारत में ही दैवी सभ्यता का अभ्युदय निराकार परमपिता परमात्मा के द्वारा हुआ और पहले भारत में ही दैवी सभ्यता फली-फूली और विस्तार को पाई और भारत से आर्यों ने अन्य भू-भागों में अर्थात् मध्येशिया, पश्चिमी एशिया तक इस दैवी सभ्यता का विस्तार किया, जिससे ही बाद में अन्य सभ्यताओं का जन्म हुआ। द्वापर से जब विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हुई और अन्य सभ्यताओं का

उदय हुआ भारत में विदेशी शासकों ने आकर राज्य किया, तब ये बात तो भारतीयों के स्वमान को गिराकर अपने महत्व को भारतीयों के ऊपर थोपने के लिए फैलाई गई है और भारत के स्कूल-कालेजों में पढ़ाकर उनके स्वमान को गिराने और उन पर अपने राज्य को कायम रखने के लिए अंग्रेजों ने की है। अभी भी जैसे भारत जब स्वतन्त्र हुआ तो पाकिस्तान के भूभाग में रहने वाले हिन्दू उस भू-भाग अर्थात् पाकिस्तान को छोड़कर भारत में आ गये तो इसका अर्थ ये नहीं हो सकता है कि भारत में हिन्दू नहीं थे, वे पाकिस्तान से यहाँ आये। ऐसे ही ये सत्य नहीं है कि आर्य मध्येशिया से भारत में आये। भारत में आदि काल अर्थात् कल्पान्त से दैवी सभ्यता है और अन्त तक रहती है। भारत की सभ्यता ही सनातन सभ्यता है अर्थात् जो सारे कल्प के चक्र में रहने वाली है।

जैसे जनसंख्या अर्थात् सभ्यता और राजाई का केन्द्र-बिन्दु भारत है और उसकी सीमाओं का विस्तार भारत के चारो ओर होता है, वैसे ही धर्म-स्थापना का आदि केन्द्र-बिन्दु भी भारत ही है, भारत में भी आबू पवर्त जो परमात्मा की कर्म-भूमि है और उसका विस्तार भी आबू पर्वत से चारो ओर होता है और हो रहा है अर्थात् उसका विस्तार भारत के चारो ओर देश-विदेश में फैल रहा है। परमात्मा धर्म-स्थापना का ये कर्तव्य कल्प के संगमयुग पर भारत में आकर करते हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग

संगमयुग महान अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती और ब्रह्माकुमार-कुमारियों का भारत

संगमयुग पर परमपिता परमात्मा शिव ब्रह्मा तन में आकर इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया की कलम लगाते हैं, अधर्म की दुनिया से धर्म की दुनिया की कलम लगाते हैं, तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की कलम लगाते हैं। इसके लिए शिवबाबा ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर तमोप्रधान शूद्र गुण-संस्कारों वाले मनुष्यों को एडॉप्ट करके ब्राह्मण बनाते हैं, जो ब्राह्मा ही पुरुषार्थ करके देवताई गुण-संस्कार धारण करके देवता बनते हैं। परमात्मा का ये कर्तव्य भी संगमयुग पर भारत में और भारत में भी आबू पर्वत पर चलता है, इसलिए आबू पर्वत की भूमि महान है। वैसे भी आबू पर्वत को तपस्या भूमि माना जाता है। ब्राह्मण जीवन महान है, ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य महान हैं, परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा का साथ महान है, भारत देश महान, उसमें आबू तीर्थ महान और आबू में भी पाण्डव भवन की धरती महान है, जहाँ परमात्मा ने साकार तन में आकर दिव्य कर्तव्य किया है।

''तुम जानते हो यह भारत अविनाशी खण्ड है। इसमें कब प्रलय होगा नहीं। ... आबू थोड़ेही

सतयुग में होगा, दरकार ही नहीं। ... अन्त में यहाँ बैठे-बैठे तुम सब कुछ सुनेंगे और देखोंगे।''

सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

''अभी तुम हो संगमयुग पर। महिमा सारी संगमयुग की है। पुरुषोत्तम मास भी मनाते हैं ना। ... मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे भारत को पुरुषोत्तम बनाने आता हूँ। ... भारत ही सबसे ऊंच खण्ड था, जहाँ लक्ष्मी-नारायणका राज्य था। ... भारत सारे विश्व का मालिक था, और कोई धर्म नहीं था।''

सा.बाबा 13.12.06 रिवा.

''मैं इस भारत को इन ब्रह्मा-सरस्वती और ब्राह्मणों के द्वारा स्वर्ग बनाता हूँ ... जो भारतवासी अभी नर्कवासी हैं, वे फिर स्वर्गवासी बनेंगे। ... राइज ऑफ भारत देवताओं का राज्य और फॉल ऑफ भारत रावण राज्य। ... यह भारत भूमि सबसे उत्तम है, जहाँ सर्व का लिब्रेटर बाप आकर अवतार लेते हैं।''

सा.बाबा 21.02.06 रिवा.

''चाहे अभी अन्त में भारत कितना भी गरीब वा धूल-मिट्टी वाला बन गया है, फिर भी अपना देश अपना ही होता है। ... आदि स्वर्ग में इसी देश के वासी थे और अनेक बार भारत-भूमि के देशवासी हो। यह मधुवन ब्राह्मणों का छोटा सा संसार है।''

अ.बापदादा 20.2.88

''देलवाड़ा मन्दिर में पूरा यादगार है। बाप भी यहाँ ही आये हैं। इसलिए अभी लिखते हैं - आबू सर्व तीर्थों में, सब धर्मों के तीर्थों में मुख्य है क्योंकि बाप यहाँ ही आकर सर्व धर्मों की सद्गति करते हैं। ... अभी तुम समझते हो - यही भारत स्वर्ग था, जो अभी नर्क है।''

सा.बाबा 25.01.06 रिवा.

''यह पुरानी देहली कब्रिस्तान बनती है, फिर परिस्तान में नई देहली बनना है। ... भारत को फिर से सुखधाम बनाना कितना ऊंच कार्य है। ड्रामा प्लेन अनुसार सृष्टि पुरानी होनी ही है।''

सा.बाबा 15.1.05 रिवा.

''भारत फूलों का बगीचा था। ... ये लक्ष्मी-नारायण भारत के ही मनुष्य थे। ... भारत गोल्डन एज था, तो इन देवताओं का राज्य था। ... तुम बच्चे जानते हो कि यह रामायण की कथा आदि सब भारत पर है।''

सा.बाबा 17.1.05 रिवा.

''भारत 100 परसेन्ट सालवेन्ट, पावन था, वही अभी 100 परसेन्ट इन्सॉलवेन्ट पतित है। ... तुम को अपने तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने में खर्च करना है। जितना करेंगे, उतना ऊंच पद

पायेंगे। ... इसने अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया ना। इसको कहा जाता है महादानी। ... बाप को पूरा फॉलो करना चाहिए। इसमें पहले मन-बुद्धि को सरेण्डर करना होता है।''

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

''ये फिर बेहद के आज और कल का ड्रामा है। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा। ... 5 हजार वर्ष पहले आदि सनातन देवी-देवताओं का धर्म था, ... अभी तो डेविल वर्ल्ड है। डेविल वर्ल्ड की इण्ड और डिटी वर्ल्ड की आदि का अब है संगम।''

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

''जब भारत पर राहू का ग्रहण बैठ जाता है तो भारत गरीब बन जाता है। भारत तो क्या सारे वर्ल्ड पर राहू का ग्रहण है। इसलिए बाप फिर भारत में आते हैं, आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। ... सबको बोलो - हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। यह गीता का एपीसोड चल रहा है, जिसमें भगवान ने आकर राजयोग सिखाया है।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

भारत का आध्यात्मिक उत्कर्ष अर्थात् आध्यात्मिक समृद्धि

भारत आध्यात्म का मूल स्थान है, भारत भूमि को आध्यात्म की जननी कहा जाता है क्योंकि आध्यात्म के मूल स्रोत आत्माओं के परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि भारत है। भारत में देखें तो बड़े मनुष्य तो क्या बच्चे-बच्चे में आध्यात्म की जड़े व्याप्त हैं। मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी और प्रकृति में भी आध्यात्मिकता की सुगन्ध आती है। भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर, राष्ट्रीय फूल कमल आदि भी आध्यात्म की सुगन्ध से सुगन्धित हैं अर्थात् आध्यात्मिकता का सन्देश देते हैं। आध्यात्म का मूल है आत्मा। भारत में प्राय: सभी मनुष्य आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं और आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ करते हैं। आत्मा के कल्याण के लिए परमात्मा का आह्वान करते हैं, उनको याद करते हैं। अन्य देश के धार्मिक प्रवृत्ति वाली आत्मायें भी भारत के आध्यात्म के प्रति आकृष्ट होते हैं। कलियुग में भी भारत के स्वामी विविकानन्द, स्वामी रामतीर्थ आदि अनेक महान आत्मायें भारत के आध्यात्म का सन्देश देने के लिए विदेशों में गये और भारत के आध्यात्म का नाम रोशन किया, भले ड्रामा अनुसार उनको भी आत्मा के अस्तित्व का यथार्थ ज्ञान नहीं था, जैसा परमपिता परमात्मा ने अभी हम आत्माओं को दिया है परन्तु फिर भी आत्मा के अस्तित्व में पूर्ण श्रृद्धा-भावना थी, जिससे वे भारत के आध्यात्म का विदेशों में लोहा मनवानें में समर्थ रहे। ये हमारा परम सौभाग्य है कि हमने ऐसी भारत भूमि में जन्म लिया और परमात्मा ने

हमको आध्यात्म के गुह्य रहस्यों से अवगत कराया और करा रहे हैं।

वर्तमान संगम युग पर आत्माओं के परमपिता परमात्मा, सृष्टि के आदि पिता ब्रह्मा बाबा ने समय-समय पर मुरलियों में विश्व की सभी आत्माओं को याद किया, उनका आह्वान किया, उनके कल्याणार्थ भारत की आत्माओं को प्रेरित करके विदेश में भेजा और अभी भी अव्यक्त रूप में प्रेरित करके आध्यात्म का संन्देश विदेशों में फैला रहे हैं और विदेशों से आत्माओं का आह्वान करके भारत में बुलाकर उनकी पालना कर रहे हैं। आध्यात्म का संस्कार, ज्ञान, गुण, शक्तियां उन आत्माओं में भर रहे हैं।

ये भारत भूमि वह ऋषि भूमि है, जहाँ असंख्य ऋषि-मुनियों ने तपस्या करके अपने तपस्या के प्रकम्पन सारे विश्व में फैलाये, जो विश्व की सर्व आत्माओं के जीवन के आधार बन गये। उनके वे प्रकम्पन आज भी इस भूमि में विद्यमान हैं। अभी संगमयुग पर आध्यात्म के जनक परमपिता परमात्मा के द्वारा रचे हुए ज्ञान-यज्ञ में जन्में ब्रह्मा बाबा और ब्रह्मा वत्सों की तपस्या के प्रकम्पन इस भूमि में विद्यमान हैं और सारे विश्व में विस्तार को पा रहे हैं, जिनके आधार पर ये भारत तो स्वर्ग बनेगा ही परन्तु वे प्रकम्पन और उनके द्वारा दिया हुआ आध्यात्मिक ज्ञान सारे कल्प आत्माओं को वह स्मृति दिलाता रहेगा। परमात्मा और ब्राह्मण आत्माओं की योग-तपस्या के आधार पर ही विश्व की सर्व आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति को पायेंगी। इसलिए परमात्मा और आदि पिता ब्रह्मा बाबा ब्राह्मण बच्चों को प्रेरित करते रहते हैं कि सभी आत्मायें तुम्हारे भाई-बहनें हैं, उन पर तुमको तरस नहीं पड़ता है, उनको दुख-अशान्ति से मुक्त करना तुम्हारा कर्तव्य है।

भारत आध्यात्मिकता का मूल-स्थान और मूल स्रोत है क्योंकि आध्यात्मिकता के जन्म-दाता या मूल स्रोत परमपिता परमात्मा का जन्म-स्थान अर्थात् अवतरण भूमि भारत है। आध्यात्मिकता सुखी जीवन की आधार शिला है। भारत के कण-कण में आध्यात्मिकता की सुगन्ध आती है क्योंकि साकार में आये परमपिता परमात्मा और परमात्मा के साथ परमात्मा के साकार में बने बच्चों ने खास इस भारत भूमि को और आम सारी दुनिया को आध्यात्मिकता के अमृत-जल से सींचा है और सींच रहे हैं। आज भी हम देखें तो बड़े-बड़े विद्वान तो क्या भारत के बच्चे-बच्चे में आध्यात्मिकता की सुगन्ध आती है। भले ही वे गरीब हो गये हैं, उनमें आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, तीनों लोकों आदि का यथार्थ ज्ञान नहीं है परन्तु आत्मा-परमात्मा में अटूट श्रृद्धा और विश्वास है, भावना है। सर्व आत्माओं के प्रति उनके दिलों में दया, स्नेह, प्रेम है, परमात्मा के प्रति उनकी निष्ठा, श्रृद्धा-भावना और विश्वास है। भले ही गरीबी आदि के कारण दुखी हैं परन्तु आध्यात्मिकता की जो सुगन्ध भारत में है, वह किसी भी देश की आत्माओं में न मिलती है और न ही मिल सकती है। भला मिले भी कैसे, आध्यात्म के जन्म-दाता ज्ञान सागर परमात्मा का अवतरण तो भारत में ही

हुआ है। और सभी देश और धर्म तो विस्तार को पाये आध्यात्म रूपी वृक्ष के टाल-टालिया और पत्ते हैं। पत्तों में वह शक्ति कैसे आ सकती है, जो जड़ों और तने में होती है।

भारत से ही आध्यात्मिक मान्यताओं का विदेशों में प्रचार और प्रसार हुआ। कलियुग के समय विदेशों में भारत की आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार के स्तम्भ स्वामी विवेकानन्द ने विश्व-प्रेम से प्रभावित होकर अमेरिका में अपने पहले भाषण में जो शब्द कहे अर्थात् उन्होंने अमेरिका की जनता को भाई एवं बहनों के रूप में सम्बोधित किया, उसका प्रभाव उस समय सुनने वालों पर तो हुआ ही लेकिन आज भी विश्व में उनको याद किया जाता है। ये भारत की आध्यात्मिक समृद्धि, आध्यात्मिक भावना का ही प्रभाव था, ये भारत की आध्यात्मिक शक्ति का ही प्रभाव था, जो अमेरिका के लोग भी उनको अपने भाई-बहनों के समान दिखाई दिये और उनके प्रति प्रेम-भावना जाग्रत हुई। वैसे तो हम किसी भी धर्म-शास्त्र को देखें तो किसी भी धर्म-पिता ने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, तीन-लोकों आदि के विषय में कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है। सभी धर्म-पिताओं ने प्राय: अच्छे गुणों और धारणाओं का ही ज्ञान दिया है। हर धर्म-पिता में किसी न किसी एक आत्मिक गुण की प्रधानता रही। परमात्मा तो सर्व आध्यात्मिक गुणों और शक्तियों के सागर है और जो उनके साकार में बच्चे बनते हैं, उनको उनके द्वारा सर्व आध्यात्मिक गुणों और शक्तियों का वरदान मिलता है, जिस आध्यात्मिक ज्ञान, गुण-शक्तियों को सारे विश्व में फैलाना हम ब्राह्मण बच्चों का परम कर्तव्य है।

गीता आध्यात्म का मूल शास्त्र माना जाता है, जिसका विश्व की प्राय: सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वास्तविक गीता ज्ञान तो ज्ञान-सागर परमात्मा ने ब्रह्मा मुख से कल्पान्त में सुनाया था परन्तु उस समय जो ज्ञान दिया, वह विनाश के बाद प्राय: लोप हो जाता है, इसलिए उसकी कोई लिखत आदि इस दुनिया में नहीं रहती है। द्वापर युग में जब मनुष्य दुखी होने लगते हैं, तो भक्ति आदि आरम्भ करते हैं, उन आत्माओं में कल्पान्त में सुने ज्ञान के आधार पर कुछ स्मृतियां इमर्ज होती हैं और उसके आधार पर अभी जो प्रचलित गीता है, वह लिखी जाती है। उस प्रचलित गीता के विषय में भगवानोवाच्य है कि इस गीता में सत्य तो आटे में नमक के समान है अर्थात् कल्पान्त में भगवान ने जो आध्यात्मिक ज्ञान सुनाया था, जिसके द्वारा खास भारत और आम सारा विश्व स्वर्ग बना था, उसका अंशमात्र ही इस प्रचलित गीता में वर्णन किया गया है और उसमें भी समयान्तर में अनेक प्रकार की असत्यता की मिलावट होती गयी है। प्रचलित गीता में वर्णित सत्य के कुछ अंश यहाँ देते हैं - जैसे गीता में परमात्मा के अवतरण के विषय में लिखा है - यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत:, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहं। ऐसे ही रामायण में भी लिखा है - जब जब होये धर्म की हानी, बाढैं असुर-अधम अभिमानी। ताब-

तब धरि प्रभु मनुज शरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा। ये महावाक्य इस सत्यता को सिद्ध करते हैं कि परमात्मा इस सृष्टि पर सत्य धर्म की स्थापनार्थ भारत में ही अवतरित होते हैं। गीता में भी आत्मा के विषय में भी लिखा है - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः, न चैनं क्लेदन्ति आपो न शोषति मारुतः। न जायते न म्रियते, अजो नित्या शास्वतो अयं, हन्यते न हन्यमाने शरीरे। आदि आदि। ये महावाक्य आत्मा के अस्तित्व और उसके विषय में सत्य को कुछ हद तक सिद्ध करते हैं। आत्मा के यथार्थ गुण-धर्मों के विषय में विचार करें तो कुछ अयथार्थ भी है।

गीता, रामायण, महाभारत में अनेक स्थानों पर इस विश्व-नाटक के पुनरावृत्त के सिद्धान्त की भी पुष्टि की गई है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा पहले भी मैंने तुमको ये ज्ञान दिया था और आज फिर दे रहा हूँ।

ये तो रही भक्ति मार्ग में लिखे गये शास्त्रों की बातें, जिनके विषय में परमात्मा ने कहा है कि शास्त्रों में आटे में नमक के समान सत्य है। सत्य ज्ञान भी विश्व में भारत से ही जाता है और सर्वव्यापी आदि का असत्य ज्ञान भी भारत से विश्व में गया है।

आध्यात्मिकता अर्थात् आत्मा, परमात्मा और इस विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान तो अभी परमात्मा दे रहे हैं। दूसरे किसी भी धर्म-पिता ने या किसी धर्म-शास्त्र में आध्यात्म की इन सत्य बातों के विषय में वर्णन नहीं है और हो भी कैसे सकता है क्योंकि परमात्मा ही ज्ञान का सागर है और इस सृष्टि का बीज रूप है, वह जब इस सृष्टि पर आते हैं तब ही सत्य आध्यात्मिक ज्ञान देकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं और उस धर्म-वंश की आत्माओं को ही ये ज्ञान देते हैं, जिससे ये ज्ञान उन आत्माओं में ही सूक्ष्म रूप में नीहित रहता है और उस सूक्ष्म स्मृति और संस्कार के कारण भक्ति मार्ग में उन आत्माओं में ही ये ज्ञान स्मृति के आधार पर जाग्रत होता है अर्थात् इमर्ज होता है।

भारत में आत्म-कल्याण के लिए अनेक रूप से योग के विषय में वर्णन है। इनमें महर्षि पातन्जलि का पातन्जलि योग दर्शन, कपिल मुनि का सांख्य दर्शन, विवेकानन्द का राजयोग, कर्मयोग, ज्ञान योग, तत्व दर्शन, आदि अनेक हठयोग के शास्त्र हैं। सारे विश्व में भारत के प्राचीन योग की विशेष महिमा है और उसको सीखने और जानने की मांग है, भारत का प्राचीन राजयोग सीखने के लिए विदेश से लोग भारत में आते हैं। भले वे यथार्थ सत्य को नहीं जानते हैं और भारतवासी भी यथार्थ सत्य से अनभिज्ञ हैं। योग का यथार्थ ज्ञान भी अभी ही परमात्मा देते हैं और यथार्थ राजयोग सिखलाकर आत्माओं को पावन बनाते हौ और आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। योग का ये ज्ञान भारत से सभी देशों में जाता है और सभी आत्माओं को उनके समय और स्थिति के अनुसार मिलता है। इसके विषय में भी परमात्मा ने बताया है कि सभी धर्म-

पितायें भी भिन्न नाम-रूप में भारत में आकर परमात्मा पिता से ये योग सीखकर जायेंगे और अपने धर्म वंश की आत्माओं को भी सिखायेंगे, जिसके आधार पर ही वे मुक्ति को पायेंगे और नये कल्प में वे धर्म-पितायें आकर अपने धर्म की स्थापना करेंगे और वे आत्मायें उनके फालोअर्स बनेंगे।

भक्ति दर्शन के भी अनेक शास्त्र हैं। जिनमें भक्ति मार्ग के अनेक कर्मकाण्डों का वर्णन है। जिसके विषय में परमात्मा ने कहा है कि उनमें आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है परन्तु आत्मायें उसको ही आध्यात्मिकता समझते हैं और अन्धश्रृद्धावश उनसे ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की आशा रखते हैं। परमात्मा ने भी इस विषय में कहा है - जिन्होंने बहुत भक्ति की होगी, वे ही आकर पहले ज्ञान लेंगे। परमात्मा भक्ति का फल देने के लिए ही आते हैं। भक्ति का फल है भगवान और भगवान से मिलता है यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान, जिस आध्यात्मिक ज्ञान से ही सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है।

इस प्रकार हम देखें तो जैसे सृष्टि की रचना का बीज भारत में ही अंकुरित होता है, उसी प्रकार आध्यात्मिकता का बीज भी भारत ही अंकुरित होता है, जो वृक्ष बनकर सारे विश्व को छाया और फल प्रदान करता है। जो ज्ञान सूर्य का प्रकाश बनकर सारे विश्व को प्रकाशित करता है। सार रूप में कहें तो यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान तो आत्मा, परमात्म, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान, आत्मा और देह के अलग-अलग स्पष्ट अनुभव को ही कहा जायेगा, जिसकी धारणा से आत्मा में देह से न्यारे होने की शक्ति आ जाती है, आत्मा में आत्मिक गुणों और शक्तियों की वृद्धि होती है। इस सत्य ज्ञान का मूल स्रोत ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही है, जो भारत में ही आकर ये सत्य ज्ञान देते हैं और आत्मा एवं देह का अलग-अलग अनुभव कराते हैं। भारत से ही वह ज्ञान और अनुभव सारे विश्व में फैल्ता है और उसको ही भक्ति मार्ग में गीता ज्ञान के नाम से जाना जाता है। ये आध्यात्मिक ज्ञान भारत भूमि की विशेषता है।

''बाबा के पास ऐसे-ऐसे बच्चे भी हैं, जो कहते बाबा जब जरूरत पड़े तो मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाज़िर हैं। ... बाबा कहते - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं, हम आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे।''

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

''भारत में ही डबल सिरताज वालों की पूजा होती है। लाइट है पवित्रता की निशानी। ... अब तुम पुरुषार्थी हो, इसलिए तुम पर लाइट नहीं दे सकते हैं। देवी-देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं। ... अन्दर में यह नशा रहना चाहिए कि हमको परमपिता परमात्मा डबल सिरताज बनाते

हैं। ... सिंगल ताज वाले डबल ताज वालों को पूजते हैं।''

सा.बाबा 28.10.06 रिवा.

''भारत में ही अनेक मत-मतान्तर हैं। और कोई खण्ड में इतने मत-मतान्तर नहीं हैं। ... रिद्धि-सिद्धि भी बहुत है ... इसमें मनुष्य खुश होते हैं। यह तो है स्प्रीचुअल नॉलेज। रुहानी बाप रूहों से बात करते हैं। ... अभी तुमको हीरे जैसा अनमोल जन्म मिला है, फिर उसको कौड़ियों के पिछाड़ी क्यों गँवाते हो।''

सा.बाबा 17.5.06 रिवा.

''भारत अविनाशी खण्ड है और इसका असुल नाम है भारत खण्ड है। भारत को कहा जाता है - स्प्रीचुअल खण्ड। ... भारत अविनाशी खण्ड है, उसको ही स्वर्ग, हेविन कहते हैं। ... परमात्मा को स्वर्ग का रचयिता, हेविनली गॉड फादर कहा जाता है।''

सा.बाबा 24.4.06 रिवा.

''अभी तुम समझते हो कि कैसा वण्डरफुल खेल है। भारत का कितना डाउनफाल हो जाता है। डाउनफॉल ऑफ भारत अर्थात् डाउनफॉल ऑफ भारतवासी। ... अभी तुम मास्टर बीजरूप बनते हो। याद के साथ स्वदर्शन चक्र भी फिराना है। तुम भारतवासी स्प्रीचुअल लाइट-आउस हो, सबको घर का रास्ता बताते हो।''

सा.बाबा 5.4.06 रिवा.

''भारत महान आप महान आत्माओं के कारण ही गाया जाता है। किसी भी देश में इतनी महान आत्माओं का गायन या पूजन नहीं होता है। ... किसी भी देश में उस देश की इतनी महान आत्माओं के मन्दिर हों, यादगार हों, गायन-पूजन हो, वह कहाँ भी नहीं होगा।''

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 1

''बाप से भारतवासियों को कल्प-कल्प स्वर्ग का वर्सा मिलता है। ... भारत में जब प्योरिटी थी तो भारत का सितारा चमकता था। अब तो घोर अंधियारा है।''

सा.बाबा 13.12.04 रिवा.

''रुहानी बाप यह रुहानी नॉलेज भारत में ही आकर देते हैं। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत ही स्वर्ग था तो सिर्फ हमारा ही राज्य था और कोई धर्म नहीं थे। न्यु वर्ल्ड थी। नई देहली कहते हैं ना। देहली का नाम असल देहली नहीं था। परिस्तान कहते थे। वहाँ न पुरानी और न नई देहली होगी। परिस्तान कहा जायेगा। देहली को केपिटल कहते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा।''

सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

''वास्तव में भारत का धर्म आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है परन्तु धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट होने के कारण अपने को देवता नहीं कह सकते। यह भी ड्रामा की नूँध है। नहीं तो बाप कैसे आकर फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना करे। ... यह 5 हजार वर्ष का खेल है। ... यह नॉलेज होती ही है एक रुहानी बाप के पास, उनको ही ज्ञान-ज्ञानेश्वर कहा जाता है।''

सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र आदि हैं वह सब खत्म हो जायेंगे। बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं, वह कभी जलने वाली नहीं है। ... तुमको नॉलेज मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो। ... यह ज्ञान आपेही प्राय:लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 22.7.04 रिवा.

भारत का भौतिक उत्कर्ष अर्थात् भौतिक समृद्धि

जहाँ डाल-डाल सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा,
वह भारत देश है मेरा।

आज कलियुग के अन्त में भी जो देवी-देवताओं के सुसज्जित चित्र देखने में आते हैं, देवी-देवताओं के मन्दिर बने हुए हैं और बनते रहते हैं, वे सब भारत की प्राचीन सभ्यता और उसके भौतिक उत्कर्ष के जीते-जागते प्रमाण हैं। बाबा ने भी कहा है - ऐसे देवी-देवताओं के सजे हुए चित्र किसी धर्म और देश में देखने को नहीं मिलते हैं और न किसी धर्म-स्थापक, महात्मा, राजनेता आदि के ऐसे मन्दिर बनाकर पूजा होती है। भले ही वह राजा क्यों न हो।

भारत ही स्वर्ग था, भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत में देवी-देवताओं के सोने चांदी के रतन जड़ित महल थे, जिनकी यादगार में द्वापर युग में भक्ति मार्ग में जब भक्ति आरम्भ हुई और मन्दिर आदि बनाना आरम्भ हुआ तो जो मन्दिर बनाये गये, वे भी हीरे-जवाहरातों से सुसज्जित बनाये गये। भारत की सुख-समृद्धि से ही प्रभावित होकर लोभ के वशीभूत होकर यूनान के शासक सिकन्दर महान, अफगानिस्तान के शासक मोहम्मद गोरी, मोहम्मद गजनवी, मध्येशिया के तैमूरलंग, ईराक के नादिरशाह आदि ने आक्रमण किया और भारत की विपुल भौतिक धन-सम्पदा लूट कर अपने देश में ले गये। उन्होंने आकर भारतीय सभ्यता को भी प्रभावित किया। यहाँ के मन्दिरों आदि को तोड़ा।

अन्त में अंग्रजों का भारत पर आधिपत्य हुआ और उन्होंने भारत की वाह्य धन-सम्पदा को तो लूटा ही परन्तु भारत की भूगर्भ सम्पदा का भी भरपूर दोहन किया और सारा धन अपने देशों में लेकर गये। आज भी विश्व का सबसे कीमती हीरा कोहिनूर ब्रिटेन में है और उसको वहाँ

ले जाकर उसको दो भागों में विभाजित किया गया है। जिसके विषय में जैसे जानकारी है, उस अनुसार कोहिनूर का एक भाग वहाँ की रानी के ताज में जड़ा हुआ है और एक भाग वहाँ के शाही म्युजियम में रखा गया है। सतयुग-त्रेता में भारत की दैवी सभ्यता और दैवी साम्राज्य का वर्तमान भारत की सीमाओं के बाहर विस्तार तो हुआ परन्तु वह विस्तार शान्तिपूर्ण और सर्व की सुख-समृद्धि के लिए ही किया गया। भारत में भी अनेक प्रतापी राजा-महाराजा हुए परन्तु किसी भी महाराजा-राजा ने किसी दूसरे देश पर आक्रमण करते उसकी धन-सम्पदा को लूटकर या दोहन करके भारत में नहीं लाया गया। दैवी सभ्यता का विस्तार भी किया तो भी वहाँ की धन-सम्पदा को वहीं के लोगों की सुख-समृद्धि के लिए ही प्रयोग किया गया क्योंकि भारत में पहले से ही विपुल धन-सम्पदा थी और उस समय के राजाओं और प्रजा में किसी तरह की लोभ-वृत्ति भी नहीं थी। सभी सुख-शान्ति में थे और अपनी सम्पन्नता से सन्तुष्ट थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में और भारत के देवी-देवताओं के ही मन्दिर बनाकर पूजा होती है। किसी भी धर्म-पिता या राजाओं के न तो मन्दिर बनते हैं और न ही उनकी पूजा होती है। सभी धर्म-पिताओं को उनके धर्म की मान्यताओं के अनुसार स्थान (मस्जिद, गिरजाघर, मठ आदि) बनाकर याद किया जाता है परन्तु भारत में देवी-देवताओं के मन्दिर बनाकर पूजा की जाती है। भारत के मन्दिरों में भी विपुल धन-सम्पदा थी, जो बाहर के लुटेरे राजायें लूटकर अपने देशों में ले गये।

''शिव जयन्ति भारत में ही मनाते हैं परन्तु भारतवासियों को यह पता ही नहीं है कि बाप कब आया था। ... कलियुग में भारत इन्सॉलवेन्ट है, सतयुग में भारत सॉलवेन्ट होता है। उस समय और कोई खण्ड नहीं होते।''

सा.बाबा 23.11.06 रिवा.

''आज से 5000 वर्ष पहले भारत हेविन था, भारत की बहुत महिमा थी। सोने-हीरों के महल थे ... भारत ही सबसे ऊंचे से ऊंचा खण्ड था। वास्तव में सबका यह तीर्थ है क्योंकि पतित-पावन बाप का बर्थ प्लेस है। ... जब सूर्यवंशी राज्य था तब यह विकार नहीं थे, भारत वाइसलेस था। ... यह भारत शिवबाबा का स्थापन किया हुआ शिवालय था।''

सा.बाबा 29/31.10.06 रिवा.

''ये विमान आदि बनाने वाले वे संस्कार ले जायेंगे, फिर आकर वहाँ विमान बनायेंगे। यह विमान आदि भारतवासी भी बना सकते हैं, कोई नई बात नहीं। यह साइन्स तुमको वहाँ फिर सुख के लिए काम आयेगी।''

सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

''यह है बेहद की लंका। पृथ्वी के चारो तरफ पानी है। ... भारत तो नामीग्रामी है। और खण्डों में इतने हीरे-जवाहर नहीं होते हैं। ... सतोप्रधान से सतो होते हैं तो दो कला कम हो जाती है। वास्तव में त्रेता को स्वर्ग नहीं कहा जाता है। बाप आते हैं तुम बच्चों को स्वर्गवासी बनाने।''

सा.बाबा 16.7.04 रिवा.

''पांच हजार वर्ष पहले भारत हेविन था। भारत की बहुत महिमा है। भारत में हीरे-सोने के महल थे। ... भारत में सूर्यवंशी डिनायस्टी का राज्य था। बाकी आत्मायें शान्तिधाम में थीं। ... वास्तव में भारत सभी का तीर्थ स्थान है क्योंकि पतित पावन बाप का जन्म-स्थान है।''

सा.बाबा 23.02.06 रिवा.

''भारत ही अविनाशी खण्ड है। भारत ही स्वर्ग बनता है। ... भारतवासी ही फिर नर्कवासी बनते हैं, फिर वे ही स्वर्गवासी बनेंगे। और सभी खण्ड विनाश हो जायेंगे, बाकी भारत ही रहेगा। भारत खण्ड की महिमा अपरमअपार है। ... भारत जितना सुखी, धनवान, पवित्र और कोई खण्ड है नहीं।''

सा.बाबा 14.4.05 रिवा.

''बाप तुम बच्चों को ज्ञान रतनों से सजाते रहते हैं। ... भारत कितना सिरताज था, सब भूल गये हैं। ... कितनी बड़ी-बड़ी मणियां राजाओं के ताज में रहती थीं।''

सा.बाबा 7.1.05 रिवा.

''आज भारत का यह हाल है, कल भारत क्या होगा! ... वहाँ तो महलों में कितने हीरे-जवाहर आदि होते हैं। ... एक सोमनाथ के मन्दिर से ही कितना लूटा है।''

सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''यह पढ़ाई है। पढ़ाई में जो अच्छा होगा, वह दूसरों को भी पढ़ा सकेंगे। ... बाप भारत में ही आते हैं तो भारत में ही ये कॉलेज खुलते रहते हैं। आगे चलकर विदेश में भी खुलते जायेंगे। ... स्वर्ग कोई डूबता थोड़ेही है। भारत में कितना अथाह धन था। एक ही सोमनाथ के मन्दिर से मुसलमानों ने कितना धन लूटा। भारत को ही स्वर्ग कहा जाता है।''

सा.बाबा 06.9.04 रिवा.

''स्वर्ग में तो अथाह धन था, एक मन्दिर से ही कितना धन ले गये। भारत में ही इतना धन था, बहुत खजाना भरपूर था। ... बाप तुमको सारे विश्व का मालिक बना देते हैं। धरती आसमान सब अपने हो जाते हैं। कोई भी हद नहीं रहती। भारत अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 27.8.04 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो - पहले-पहले यह भारत बहुत भरपूर खण्ड था, अब खाली होने के कारण हिन्दुस्तान नाम रख दिया है। पहले भारत धन-दौलत, पवित्रता, सुख-शान्ति सबसे भरपूर था।''

सा.बाबा 23.3.04 रिवा.

भारत का धार्मिक उत्कर्ष अर्थात् धार्मिक समृद्धि

विभिन्न धर्मों की शरण स्थली

प्राय: विश्व के सभी धर्मों और सभ्यताओं की जन्म-स्थली भारत-भूमि ही है अर्थात् एशिया खण्ड ही है, जहाँ पहले देवी-देवताओं का राज्य था अथवा कहें कि सभी धर्मों रूपी वृक्ष का जड़ और तना भारत भूमि और भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है। द्वापर युग से पहले विश्व में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही था और विश्व के विघटन की प्रक्रिया के पहले विश्व की जनसंख्या का विस्तार एशिया खण्ड में ही था, उसमें विभिन्न राजायें-महाराजायें भी थे परन्तु वे सभी राजायें दिल्ली के एक चक्रवर्ती राजा को ही एकाधिपति राजा मानते थे और एक ही देवी-देवता धर्म की मान्यताओं, नियम-संयम को मानने और पालन करने वाले थे। इस प्रकार पूरा ही विश्व भारत या दिल्ली राज्य के अन्तर्गत था और सारे विश्व में एक ही देवी-देवता धर्म था। इस प्रकार विश्व के सभी धर्मों की स्थापना और उनके धर्म-स्थापकों का जन्म अर्थात् प्रवेशता इस भारत भूमि या एशिया खण्ड में ही हुआ है तथा उनके धर्म-स्थापक की प्रवेशिता आदि सनातन देवी-देवता धर्म की किसी विशेष आत्मा के शरीर में ही हुई है। ये धर्म-स्थापक की आत्मा की प्रवेशिता और धर्म-स्थापन का राज़ भी ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने भारत में ही आकर बताया है। भारत प्राय: सभी धर्मों की शरण स्थली भी रहा है।

बौध धर्म की स्थापना भारत में हुई और बाद में सम्राट अशोक ने, जिसने कलिंग युद्ध से द्रवित होकर बौध धर्म स्वीकार कर लिया, अपने पुत्र और पुत्री को बौध धर्म के प्रचारार्थ चीन आदि देशों में भेजा। इस्लाम धर्म की स्थापना एशिया के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में हुई, क्रिश्चियन धर्म के स्थापक क्राइस्ट का जन्म एशिया के मध्य-उत्तरी भाग में हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि हर धर्म का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में भारत से है ही।

सन्यास धर्म के धर्म-स्थापक शंकराचार्य, सिख धर्म के धर्म-स्थापक गुरु नानक देव आदि का जन्म स्थान भी भारत भूमि ही है और उसका विस्तार भी भारत में है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक धर्म मठ-पंथ भी भारत में स्थापित हुए, जो धर्मों के कल्प-वृक्ष की छोटी-छोटी टाल-टालियों के रूप में विस्तार को पाये हुए हैं।

अभी भी भारत में प्राय: सभी धर्मों को मान्यता है। भारत की राजनीति में सभी को समान

रूप से अधिकार है। सभी को धार्मिक स्वतन्त्रता है। इसलिए भारत के संविधान में भारत को धर्म-निर्पेक्ष देश कहा गया है अर्थात् धर्म-भेद से ऊपर। सभी धर्म वालों को अपने धर्म को शान्ति पूर्ण और स्वेच्छा से प्रचार-प्रसार करने की भी स्वतन्त्रता है।

इस सबका मूलाधार है कि भारत भूमि में ही सब धर्मों के अनादि पिता परमात्मा शिवबाबा , आदि पिता ब्रह्मा बाबा और उनके सहयोगी बच्चों ने तपस्या करके इस धरा पर आदि सनातन धर्म की स्थापना की, जिससे सभी धर्मों का जन्म हुआ। द्वापर युग से अनेक ऋषि-मुनियों ने तपस्या करके खास इस भूमि को और आम सारी विश्व को अपनी तपस्या के पवित्र प्रकम्पनों से सरचार्ज किया है। यहाँ सृष्टि के आदि से अन्त तक अनेक पवित्र आत्मायें रहीं हैं, जिनकी तपस्या का प्रभाव इस विश्व में शान्ति स्थापन करने में सहयोगी रहा है।

वैसे तो देवी-देवता धर्म, जो आज हिन्दू नाम से जाना जाता है, किसी देश में जाकर धर्म को फैलाने का पुरुषार्थ नहीं किया है। इस धर्म की स्थिति तो ये है कि जो एक बार किसी धर्म में कैसे भी परिवर्तित हो गया, उसको वापस अपने धर्म में लौटना भी मुश्किल है। परन्तु वास्तविकता को देखें तो आज जो ईश्वरीय सन्देश को लेकर भारत से भाई-बहनें दूसरे देशों में जा रहे हैं, वह भी एक आदि-सनातन धर्म का प्रचार और प्रसार ही है परन्तु ये धर्म का प्रचार-प्रसार दूसरे धर्मों के समान नहीं है। ये तो सर्वात्माओं के कल्याणार्थ है, उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए है। हमारा ये ईश्वरीय ज्ञान आध्यात्मिक होते हुए भी इससे धर्म की भी स्थापना होती है और राज्य की भी स्थापना होती है, इसलिए इसको रिलीजियो-पोलिटीकल ज्ञान कहा जाता है।

भारत का राजनैतिक उत्कर्ष

भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था, जो आधा कल्प तक चला और भविष्य आधा कल्प चलने वाला है। सतयुग में महाराजा-महारानी और त्रेता में राजा-रानी दोनों साथ-साथ गद्दी पर बैठते थे। धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता दोनों एक ही हाथ में होती है, इसलिए वहाँ राजा को किसी वज़ीर आदि की राय लेने की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए वहाँ राजा-रानी को कोई वज़ीर आदि होता नहीं है। सतयुगी त्रेतायुगी राजाओं के मन्दिर बनाकर आज भी पूजा होती है, ऐसी पूजा किसी भी धर्म और देश के राजा-महाराजा की नहीं होती है।

आज सारे विश्व में प्रजातन्त्र है परन्तु भारत राजशाही में ही खुशहाल होता है। परमात्मा पिता कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग पर आकर राजयोग सिखाकर राजाई की स्थापना करते हैं, जो राजाई आधे कल्प तक चलती है और वहाँ राजाओं को डबल ताज होते

हैं। एक रतनजड़ित और दूसरा पवित्रता का। त्रेता के बाद वही राजाई प्रथा द्वापर में भी चली आती है परन्तु द्वापर से पवित्रता का ताज गुम हो जाता है। वह राजाई प्रथा कलियुग अन्त तक चलती है, कलियुग के अन्त में थोड़े समय के लिए प्रजातन्त्र आता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि परमात्मा ही खास भारत और सारे विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं।

भारत के प्राचीन राजाओं के लिए प्रजा पुत्र के समान थी अर्थात् वे पुत्र के समान प्रजा की सुख-समृद्धि के लिए ध्यान रखते थे, प्रजा के दुख को अपना दुख समझते थे भले सतयुग-त्रेता में तो किसी प्रकार का दुख होता नहीं है परन्तु राजाओं का प्रजा पर पुत्रवत् प्यार रहता था। प्रजा भी राजा को अपने पिता के समान मानती थी, पिता के समान राजा के प्रति श्रृद्धा-भावना रखती थी।

कलियुग के अन्त में भी राजस्थान में कई ऐसे उदाहरण है, जिनमें प्रजा ने राजा के लिए स्वेच्छा से अपनी जान दे दी। कई स्त्रियों ने अपने सगे सम्बन्धियों को राज्य की रक्षा के लिए स्वेच्छा से बलिदान कर दिया। इसका एक उदाहरण राजस्थान के उदयपुर राज का है कि पन्ना धाई ने राजकुमार उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र को बलिदान कर दिया। भारत में इस राजा-प्रजा के प्रगाढ़ सम्बन्ध की नींव परमपिता परमात्मा संगमयुग पर ही डालते हैं। उस राजाई की स्थापना परमपिता परमात्मा अभी कर रहे हैं।

''परिस्तान देहली को ही कहा जाता है। बड़ी गद्दी देहली ही होगी। ... यह दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। ... पार्ट तो जरूर बजाना ही है। जैसे ड्रामा में कल्प पहले पार्ट बजाया है, वैसे ही बजायेंगे। भारतवासी ही राज्य करते थे। भारतवासी ही देवी-देवता धर्म वाले हैं।''

सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

''भारत गिरा है तो सब गिरे हैं। भारत ही रेस्पान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने के लिए। ... यह हार-जीत की कहानी भी सारी भारत की ही है। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज वाले राजायें बनते हैं।''

सा.बाबा 9.8.05 रिवा.

''बाप आकर सतोप्रधान दुनिया बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम भारतवासी ही फिर नई दुनिया में आकर राज्य करेंगे, वहाँ और कोई धर्म नहीं होगा। ... तुम भारतवासियों को ही बाप की पहचान मिलती है। अभी तुम बाप की पहचान सबको देते जाते हो।''

सा.बाबा 1.4.05 रिवा.

''भारत को बेहद का वर्सा था और किसको ये वर्सा होता नहीं। भारत को ही सचखण्ड कहा जाता है और बाप को ट्रुथ कहा जाता है। ... ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है, जो भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते हैं। भारत ही पहला देश है। ... नया भारत था, अब पुराना भारत कहेंगे। ... भारत में

बेहद का राज्य था, ये लक्ष्मी-नारायण बेहद का राज्य करते थे।''

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

''मैं भारत में ही आऊंगा। सारे विश्व में भारत जैसे एक गांव है। ... तुम समझते हो नई दुनिया में सिर्फ भारत ही था। भारत सारे विश्व का मालिक था।''

सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''भारत में ही देवतायें होकर गये हैं। ... यह है बेहद की बड़ी स्टेज। इस स्टेज पर पहले एक्टर्स पार्ट बजाने के लिए भारत में, नई दुनिया में आते हैं। ... बच्चे जानते हैं बरोबर ये लक्ष्मी-नारायण भारत में राज्य करते थे। और कोई धर्म नहीं था। और धर्म बाद में आये हैं। ... सोमनाथ का मन्दिर कितना बड़ा बनाया।''

सा.बाबा 7.10.04 रिवा.

''पाँच हजार वर्ष पहले भारत क्या था, अथाह सुख थे, कितना जबरदस्त धन था। ... ज्ञान-विज्ञान, ज्ञान और याद के कितने बडे जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं। सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो।''

सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

''सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराना यहाँ स्थापन होता है। ... इस समय भारत पर राहू की ग्रहचारी है। पहले थी वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा। यथार्थ नाम है वृक्षपति। तुम सतयुग में देवता थे, विश्व पर राज्य करते थे।''

सा.बाबा 7.8.04 रिवा.

''भारत में विराट रूप बनाते हैं परन्तु उसमें न ब्राह्मणों की चोटी है और न चोटियों का बाप है। भारत का कोट ऑफ आर्म्स त्रिमूर्ति का बनाते हैं परन्तु अर्थ समझते नहीं हैं। नहीं तो भारत का कोट ऑफ आर्म्स त्रिमूर्ति शिव का होना चाहिए।''

सा.बाबा 20.5.04 रिवा.

भारत का सांस्कृतिक उत्कर्ष एवं भारतीय साहित्य

भारतीय संस्कृति को देखें तो भारत में सतयुग आदि से स्त्री-पुरुष को समान अधिकार होते हैं। सतयुग-त्रेता तक वह समान अधिकार वाली संस्कृति चलती है। द्वापर से समाज पुरुष प्रधान हो जाता है परन्तु संगमयुग पर परमात्मा बहनों को फिर से ऊंचा उठाकर समान अधिकार वाली संस्कृति की पुनर्स्थापना करते हैं। कला-संस्कृति सतयुग से ही राजाओं के दरबारों में और प्रजा में चलता आता है।

साहित्य किसी भी देश, सभ्यता, व्यक्ति का दर्पण होता है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान

न होते हुए भी भारतीय साहित्य के वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत ..... आदि सभी शास्त्रों में त्याग-तपस्या, नियम-संयम, दान आदि का ही महत्व दर्शाया गया है। प्राय: सभी शास्त्रों में अधर्म पर धर्म की विजय का ही वर्णन किया गया है। सभी मुख्य शास्त्रों में मुक्ति-जीवनमुक्ति के पुरुषार्थ की बात ही कही गई है, उसके लिए हर लेखक ने अपनी रीति से अपनी बात को कहा है परन्तु उनमें किसी भी रीति से भोग-वासना के लिए उत्साहित नहीं किया गया है। भले कुछ शास्त्र उपन्यास के समान ही हैं परन्तु उनके पात्रों में राक्षसी प्रवृत्ति होते हुए भी उनकी अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा-भावना, त्याग-तपस्या, उनमें दान की प्रवृत्ति प्रबल दिखाई गई है। जैसे बलि की दानवीरता, कर्ण की दानवीरता, भीष्म पितामह की दृढ़ प्रतिज्ञा आदि आदि। दरवाजे पर कोई भिखारी आये और वह खाली हाथ जाये, उसको भारतीय संस्कृति में पाप माना जाता है।

प्राचीन भारत के राजाओं के जीवन के विषय में जो वर्णन है, उसमें भी इस तथ्य को दिखाया गया है कि उनके जीवन में ऋषियों के समान त्याग-तपस्या, सेवाभाव, निरहंकारीपन था। द्वापर युगी राजाओं के विषय में भी जो वर्णन है, उसमें भी हम देखते हैं कि उनमें कोई न कोई विशेष आत्मिक गुण अवश्य रहा है, जो उनकी महानता का आधार बना है। जैसे हर्षवर्धन का दान, राजकुमार गौतम का दया भाव, अशोक जैसे वीर राजा ने दूसरे राजा के साथ युद्ध किया और जीत भी पायी परन्तु अन्त में उसका हृदय दया से द्रवित हो गया और उसने अपना सारा जीवन धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया आदि आदि।

भारत विभिन्न दर्शनों और मान्यताओं का देश है, जिनमें अद्वेतवाद, द्वेतवाद, द्वेताद्वेतवाद, सांख्य-दर्शन, तत्व-दर्शन, भक्ति-दर्शन, नीतिशास्त्र, वेद-उपनिषद.... आदि आदि मुख्य हैं। भारत को विभिन्न धर्मों, विभिन्न सभ्यताओं, विभिन्न दर्शनों, विभिन्न मान्यताओं का संगम कहें या कहें कि भारत विभिन्न धर्मों, विभिन्न सभ्यताओं, विभिन्न दर्शनों, विभिन्न मान्यताओं का उद्गम स्थान हैं, जहाँ से ये धर्म, सभ्यतायें, दर्शन आदि निकले हैं और विश्व में प्रवाहित हुए हैं या फले-फूले हैं।

प्राकृतिक उत्कर्षभारत का प्राकृतिक समृद्धि अर्थात् प्राकृतिक सौंदर्य

भारत उपमहाद्वीप के तीन तरफ समुद्र है और उत्तर में हिमाच्छादित हिमालय पर्वत, जो विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत है। हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में प्रहरी का काम करता है, उत्तर से आने वाली ठण्डी हवाओं को रोकता है और भारत के प्राकृतिक सौंदर्य में विशेष योगदान देता है अर्थात् भारत की प्राकृतिक स्थिति को विशेष सुन्दर बनाते हैं। दुनिया में काश्मीर को इस धरा पर स्वर्ग की संज्ञा दी गई है और लाखों विदेशी, उसको देखने के लिए आते हैं। भले भारत के

बंटवारे के बाद आज काश्मीर की स्थिति कुछ चिन्ताजनक हो गई है। हिमालय से निकलने वाली नदियों का जल विशेष जीवनशक्ति से परिपूर्ण होता है और जीवन की रक्षा करने वाला अर्थात जीवन शक्ति को बढ़ाने वाला है क्योंकि हिमालय में अनेक प्रकार के खनिज हैं, जो वहाँ से बहने वाले जल को विशेष रोग-निरोधक और शक्तिवर्धक बना देते हैं।

सतयुग तो सतयुग ही था, उसका तो कहना ही क्या परन्तु आज भी भारत में प्राय: सभी प्रकार के मौसम सामान्य रूप में होते हैं। सतयुग की तो कल्पना ही करके दिल खुश हो जाता है और सभी देशों और धर्मों में स्वर्ग का वर्णन मिलता है। जहाँ के लिए गायन है कि प्रकृति मनवांच्छित फल देती है। वास्तविकता को देखें तो भारत में जीवन निर्वाह की सभी चीजें प्रकृति द्वारा मिली हुई हैं, जिससे भारत को किसी देश पर निर्भर नहीं होना पड़ता है।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय स्वतन्त्रता सेनानी भारत के राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत की प्राकृतिक, नैतिक, भौतिक समृद्धि के विषय में अपनी भारत-भारती नामक पुस्तक में बड़ा अच्छा वर्णन किया है। उसकी कुछ पंक्तियां यहां उद्धृत करते हैं।

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल जहाँ,
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है,
ऋषिभूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।

भारत में समयानुसार सभी ऋतुओं का मौसम होता है परन्तु सभी में विशेष अन्तर नहीं होता है। भारत के तीन तरफ सागर, उत्तर में पर्वतराज हिमालय और सारे देश में विभिन्न नदियां होने के कारण मौसम सुखदायी रहता है।

भले ही सृष्टि तमोप्रधान हो गई है, जिसका विशेष प्रभाव भारत में भी है क्योंकि भारत ही स्वर्ग था और ड्रामा अनुसार अभी भारत को ही नरक बनना है परन्तु अभी भी भारत की प्रकृतिक स्थिति बहुत सुखदायी है। भारत ऐसा देश है, जहाँ गरीबी होते भी आत्मनिर्भर रह सकता है क्योंकि जीवन की आवश्यकता की सभी चीजें यहाँ उपलब्ध हैं, पैदा होती हैं।

भारत का चारित्रिक उत्कर्ष

परमपिता परमात्मा ही ज्ञान, गुणों, शक्तियों का सागर है और इस सृष्टि का बीजरूप है। परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है और वही आत्माओं में ज्ञान, गुण, शक्तियों से सम्पन्न श्रेष्ठ दैवी चरित्र का बीजारोपण भारत में करता है, जहाँ पर ये बीज अंकुरित होकर सारे विश्व में विस्तार को पाते हैं। इस ज्ञान, गुण शक्तियों के आधार पर यहाँ की आत्माओं का जो चरित्र निर्माण

हुआ है, जिसके आधार पर ही नये विश्व स्वर्ग की स्थापना हुई है, जिस स्वर्ग को सभी धर्मों और देशों में भिन्न नामों से याद किया जाता है। उस श्रेष्ठ चरित्र की सुगन्ध मनुष्यात्मायें तो क्या भारत में पशु-पक्षियों में भी विद्यमान है। स्वर्ग के लिए गायन है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते थे। द्वापर युगी ऋषि-मुनियों के आश्रमों में शेर आदि हिंसक जानवर भी हिंसक वृत्ति को छोड़कर शान्ति से आकर बैठते थे। भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है, जिसकी प्रजनन क्रिया भी विषय-भोग से नहीं है। मोर की महिमा शिवबाबा भी अपने महावाक्यों में करते हैं।

परमपिता परमात्मा ने जिस श्रेष्ठ चरित्र का बीजारोपण भारत में किया और ब्रह्मा बाबा ने उस श्रेष्ठ चरित्र का उदाहरण बनकर दिखाया, उसको सिंचित करके विस्तार किया, वह श्रेष्ठ चरित्र वंशानुवंश सारे कल्प में चलता आ रहा है। जिस श्रेष्ठ चरित्र का पाठ परमात्म ने पढ़ाया अर्थात् जिन श्रेष्ठ गुणों प्रेम, दया, स्नेह, क्षमाभाव, निर्भयता, स्वाभिमान आदि का बीजारोपण परमपिता परमात्मा और आदि पिता ब्रह्मा बाबा ने आत्माओं में किया, उसका प्रभाव अभी संगम पर तो होता ही है, उसके आधार पर ही सतयुग-त्रेता युग में स्वर्ग की स्थापना होती है। वह दैवी श्रेष्ठ चरित्र सतयुगी-त्रेतायुगी देवताओं में तो होता ही है, जिनकी भक्ति मार्ग में मन्दिर बनाकर पूजा होती है, महिमा गाई जाती है परन्तु वह चरित्र वंशनुवंश आगे भी चलता रहता है और द्वापर-कलियुग में भी आत्मायें उसके प्रभाव से अछूते नहीं हैं। इतिहास को देखें तो उस श्रेष्ठ चरित्र का प्रभाव द्वापर-कलियुग में भी भारत के सभी राजाओं-महाराजाओं और प्रजा के जीवन में प्रतिबिम्बित होता हैं। भारत के किसी राजा-महाराजा ने अपने राज्य की सीमाओं के विस्तार के लिए किसी देश पर चढ़ाई करके खून-खराबा नहीं किया और न किसी देश की सम्पत्ति को लूटकर भारत में लाया। जनसंख्या के विस्तार के साथ सतयुग-त्रेतायुग में भारत की सीमाओं का विस्तार भी किया तो हर स्थान की सम्पत्ति को वहाँ की सुख-समृद्धि के लिए उपयोग किया।

परमात्मा अविनाशी है, ये भारत भूमि अविनाशी है, परमात्मा के द्वारा बीजारोपण किया हुआ श्रेष्ठ चरित्र का बीज भी इस भारत भूमि में अविनाशी है।

सतयुग-त्रेतायुग में तो भारत स्वर्ग था और यहाँ पर सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण दैवी चरित्र वाले देवी-देवताओं का राज्य था, जिस स्वर्ग को हर धर्म में किसी न किसी रूप याद अवश्य किया जाता है। भारत के उन देवी-देवताओं के चरित्र का कुछ अंश उनके बाद में आने वाले मनुष्यों में भी रहा है।

भारत के सभी राजाओं में उच्च चरित्र के लक्षण प्रेम, दया, क्षमाभाव, निर्भयता, स्वाभिमान आदि था, जो कलियुग के अन्त तक देखने में आता है। सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग में तो किसी प्रकार के युद्ध आदि की बातें होती ही नहीं है। वहाँ सभी आपस में प्रेम भाव से रहते हैं। विश्व

में सबसे श्रेष्ठ चरित्र सतयुग के लक्ष्मी-नारायण और उस समय के मनुष्यों के ही होते हैं, जो भारत में ही हुए थे। श्रेष्ठ चरित्र के कारण ही भारत के देवी-देवताओं की मन्दिर बनाकर पूजा होती है। उनकी चरित्र की महिमा सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म के रूप में गाई जाती है। उस स्वर्ग को सभी धर्मों में भिन्न नाम-रूप से याद किया जाता है।

''लक्ष्मी-नारायण को देखने में ही खुशी आ जाती है। ... तुम लक्ष्मी-नारायण बनते हो। मनुष्य कितना प्यार करते हैं। हर होलीनेस और हिज़ होलीनेस उनको कहा जाता है। ... भारत शिवालय, सम्पूर्ण निर्विकारी था, अब सम्पूर्ण विकारी है। अब तुम कहेंगे - हम ईश्वरीय सन्तान हैं। ... तुम बच्चों में दैवी मैनर्स होने चाहिए। तुम देवताओं से भी ऊंच हो।''

सा.बाबा 4.12.03 रिवा.

परमपिता परमात्मा ने भारत भूमि पर जिस श्रेष्ठ चरित्र का बीजारोपण किया, जिसके आधार पर स्वर्ग की स्थापना हुई, उस श्रेष्ठ चरित्र के अंश वंशनुगत द्वापर और कलियुग के राजाओं में भी चलते आये हैं। भारत के शासकों में अन्य देशों के शासकों के समान क्रूरता, निर्दयता, लोभ आदि नहीं रही। उदाहरणार्थ - दिल्ली के अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान के विषय में इतिहास साक्षी है कि अफगानिस्तान के शासक मोहम्मद गोरी, जिसने 17 बार दिल्ली पर चढाई की और पृथ्वीराज चौहान ने 16 बार उसको हराया और बन्दी बनाने के बाद छोटा-मोटा दण्ड देकर मुक्त कर दिया परन्तु जब उसने 17वीं बार भारत पर चढ़ाई की तो पृथ्वीराज चौहान हार गया और मोहम्मद गोरी ने उसको बन्दी बना लिया। बन्दी बनाने के बाद उसने पृथ्वीराज चौहान की आंखे गरम सूजे से फोड़ दी तथा उसको बन्दी बनाकर अफगानिस्तान ले गया। फिर भी पृथ्वीराज चौहान और उसके दरबारी कवि चन्द्रबरदाई ने अपनी वीरता और बुद्धिमत्ता का अद्वितीय परिचय दिया तथा भारत का नाम रोशन किया।

भारत के महान सम्राट अशोक का कलिंग के राजा के साथ युद्ध हुआ, लाखों लोग मारे गये, अशोक की विजय हुई फिर भी अशोक को विजय का हर्ष न होकर उसका हृदय उस विशाल रक्तपात से द्रवित हो उठा और उसने बौध धर्म को स्वीकार कर लिया और बौध धर्म का प्रचार मध्य-पूर्व एशिया में किया। अपने पुत्रऔर पुत्री को धर्म प्रचार अर्थ उन देशों में भेजा।

ऐसे ही उदयपुर के शासक महाराणा प्रताप के विषय में है - जब अकबर ने महाराणा प्रताप पर चढ़ाई की तो पहले उसका सेनापति एक मुसलमान था। लड़ाई में उसकी दो लड़कियों को महाराणा प्रताप के सैनिक पकड़कर महाराणा प्रताप के सामने ले आये, तब महाराणा प्रताप ने उनको कहा कि ये तुम्हारी बहनों के समान हैं और इनको सुरक्षित छोड़कर आओ और वे उनको उसी प्रकार छोड़कर आये। इसके फलस्वरूप ही जब दूसरी बार अकबर ने चढ़ाई की तो

महाराणा प्रताप की वीरता और श्रेष्ठ चरित्र से प्रभावित उस मुसलमान सेनापति ने सेनापति बनकर लड़ने से मना कर दिया। उसके मना करने के बाद ही अकबर ने मानसिंह को सेनापति बनाकर महाराणा प्रताप के साथ युद्ध किया।

जौहर राजस्थान की राजपूतानियों के उच्च चरित्र की विश्व में अद्वितीय मिसाल है। अनेक बार राजस्थान वीरांगनाओं ने अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए एक साथ जिन्दा चिता में जलकर जौहर किया।

छत्रपति शिवाजी, महात्मा गांधी आदि के चरित्रों के विषय में भी विश्व के लोगों की श्रृद्धा और भावना है।

इस सबका राज़ भी परमात्मा ने हमको बताया है। वास्तविकता ये है कि परमपिता परमात्मा का अवतरण भारत में होता है, जो सर्व गुणों और शक्तियों का अखुट भण्डार है, वही आकर यहाँ की आत्माओं में श्रेष्ठ चरित्र का प्रत्यारोपण करते हैं। ब्रह्मा बाबा के चरित्र और ब्रह्मा वत्सों के चरित्र को हम देखें तो हमको पता चलता है कि कैसे परमात्मा ने उनमें श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण किया है और कर रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता के समय भारत का दो भागों में विभाजन हो गया, उसके बाद भी दो-ढाई साल तक ब्रह्मा बाबा और ब्रह्मा वत्स पाकिस्तान में ही रहे और जब वे पाकिस्तान छोड़कर भारत में आये तो वहाँ के लोगों ने रोकर उन सभी को विदाई दी। ये ब्रह्मा बाबा और ब्रह्मा वत्सों के चरित्र, त्याग-तपस्या का ही प्रभाव था। आज शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की श्रीमत अनुसार भारत के भाई-बहनें सारे विश्व में श्रेष्ठ चरित्र का उत्थान कर रहे हैं। हम विदेशों में अन्य धर्मों की तरह धर्म-प्रचार या प्रसार के लिए नहीं जाते हैं परन्तु सारे विश्व की आत्माओं के साथ भ्रातृत्व भावना से उनको सत्य ज्ञान, सत्य चरित्र, सत्य कर्मों का ज्ञान देने जाते हैं, जिससे वे भी अपने जीवन को श्रेष्ठ-सुखमय बना सकें, अपने परमपिता से अपना वर्सा ले सकें। विदेश में जाने वाले भाई-बहनों को बापदादा की श्रीमत है कि तुम कभी लेने की भावना न रखना, सदा दाता के बच्चे देने जा रहे हैं, ऐसी भावना से उनकी सेवा करना।

ज्ञान सागर शिवबाबा ने इन सब बातों का राज़ भी समझाया है, उस राज़ को ध्यान में रखें तो किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं होता है।

फिर भी परमात्मा के महावाक्य हैं कि जो जितना सतोप्रधान बनता है, वह उतना ही गिरता भी है। भारत ही स्वर्ग बनता है तो पूरा नर्क भी भारत ही बनता है। सृष्टि-चक्र के उस नियमानुसार वर्तमान भारत में विकारों का प्रभाव भी अधिक है। विकारों के वशीभूत अनेक प्रकार के अनैतिक कर्म भी कर रहे हैं तो उसका फल भी दुख-अशानति के रूप में भोग रहे हैं।

''भारत महान है, भारत स्वर्ग है, भारत ऊंचा है। तो भारतवासी तो ऊंचे हैं ही लेकिन भारतवासी

महादानी हैं, डबल विदेशियों को चान्स देते हैं। ... बाप विश्व कल्याणकारी है। बेहद का बाप बेहद में ही रहता है।''

अ.बापदादा 6.3.97 पार्टी

''भारतवासी ही ऊंच करेक्टर वाले बनते हैं। ... उनके करेक्टर्स का वर्णन करते हैं। यह तुम बच्चे ही समझते हो। ... सुखधाम में सिर्फ भारतवासी ही होते हैं, बाकी सब शान्तिधाम में जाते हैं।''

सा.बाबा 15.9.05 रिवा.

विचारणीय है कि उस समय भारत क्या था, कैसा था, कहाँ था ?

भारत और भारतीय सभ्यता

भारत की आदि दैवी सभ्यता, मध्यकालीन एवं वर्तमान सभ्यता एवं उसकी विशेषतायें

भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है और उसकी कुछ विशेष विशेष्तायें हैं, जो प्राय: अन्य सभ्यताओं में नहीं हैं, जिससे वह अन्य सभ्यताओं से भिन्न और श्रेष्ठ है। अपने विधि-विधानों, कार्य व्यवहार की श्रेष्ठता के कारण प्राचीन भारतीय सभ्यता के देवी-देवताओं के मन्दिर बनाये गये हैं। उनके नियम-संयम, चरित्रों, का कीर्तन, गायन-पूजन होता है।

भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है और सभी सभ्यताओं की जननी है। भारत की सभ्यता का इतिहास 5000 वर्ष पुराना है, अन्य सभी सभ्यताओं का उद्गम द्वापर युग के बाद में ही हुआ है, इसलिए उन सबका इतिहास 2500 वर्ष से कम का ही पुराना है। विश्व की सभी सभ्यताओं का जन्म भारतीय सभ्यता से ही हुआ है, इसलिए सभी सभ्यताओं में भारतीय सभ्यता के कुछ अंश विद्यमान हैं परन्तु सम्पूर्ण और सुसभ्य सभ्यता भारत की ही है। भारतीय सभ्यता में अनेक ऐसी विशेषतायें हैं, जो मानव जीवन की सुख-शान्ति के लिए वरदान हैं। जैसे - भारतीय सभ्यता में जीवन काल को आयु के हिसाब से 4 भागों में बांटा गया है - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास। ये प्रावधान आदि से काल से चला है परन्तु समय अनुसार उसके स्वरूप में कुछ परिवर्तन अवश्य होता रहा है। आज भल वे विधि-विधान तो नहीं हैं परन्तु उनके महत्व के प्रति अभी भी लोगों में भावना है।

भारतीय सभ्यता में प्राकृतिक सुरम्य स्थानों को तीर्थों के रूप में विकसित किया गया, जिससे मनुष्य वहाँ आकर साधना करें, त्याग, तपस्या करके जीवन में सुख-शान्ति का अनुभव करें। जब कि अन्य सभ्यताओं में ऐसे सुरम्य स्थानों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया

गया है, जिससे लोग वहाँ आकर ऐश-आराम, मौज-मस्ती करें।

भारतीय सभ्यता में परस्पर प्रेम के कारण कई पीड़ियों तक एक साथ एक परिवार में रहते थे, जिसके कुछ उदाहरण आज भी भारत में हैं। वैसे भी पारिवारिक जीवन की प्रथा जैसी भारतीय सभ्यता में है, वैसी अन्य सभ्यताओं में नहीं है।

भारतीय सभ्यता ने हर धर्म की आत्मा को बिना किसी भेदभाव के स्वीकार किया है, शरण दी है। आज भी भारत में धर्म-निर्पेक्षता का सिद्धान्त प्रचलित है। भले ही धर्म-निर्पेक्षता का यथार्थ अर्थ सिद्धान्त को अपनाने वाले ही नहीं समझते हैं। धर्म-निर्पेक्षता का अर्थ ये नहीं कि धर्म को ही न माना जाये। धर्म में ही शक्ति होती है। धर्म-निर्पेक्षता का यथार्थ अर्थ है कि अपने धर्म में रहते सर्व धर्मों को सम्मान देना।

भारत में मेहमान को देवता के समान माना जाता है। 'अतिथि देवो भव' कहा गया है अर्थात् अतिथियों का देवताओं के समान सम्मान करते हैं। जहाँ अधिक अतिथि लोग आते हैं, उस घर को भाग्यशाली माना जाता है।

आज भी भारत के किसी ग्राम में कोई असहाय या राही रात को द्वार पर आ जाये तो वे उसको आदर सत्कार से शरण देते हैं। भले ही आज शहरों में विदेशी सभ्यताओं का प्रभाव है और समय भी कलियुग का तमोप्रधान अन्तिम समय है, फिर भी गांवों में इसके अंश विद्यमान हैं।

इस सबका राज़ भी ज्ञान सागर शिवबाबा ने हमको बताया है। भारतीय सभ्यात के प्राण परमपिता परमात्मा शिव हैं, जो सर्वात्माओं के अनादि पिता हैं और आदि पिता ब्रह्मा बाबा हैं, जो सर्व जीवात्माओं के आदि पिता है। इसलिए ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर कहा जाता है। दोनों पिताओं या कहें कि मात-पिता ने मिलकर इस सभ्यता को जन्म दिया है। शिवबाबा ने ब्रह्मा तन में आकर हम सभी को ब्रह्माकुमार-ब्रह्मा कुमारी बनाकर जीवन के श्रेष्ठ नियम-संयम सिखाकर श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सिखाई है। संगम युग पर शिवबाबा ने ब्रह्मा तन के द्वारा जो नियम-संयम, सिखाये वे ही आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। जो जितना अच्छी रीति उन नियम-संयमों का पालन करता है, उतना ही उसका ये ब्राह्मण जीवन सुसभ्य, सुखमय, शान्तिमय होता है। ब्रह्मा बाबा का जीवन ही हमारा आदर्श है। उन्होंने जो कर्म किये, जो सिद्धान्त अपनाये, नियम-संयमों का पालन किया और ब्राह्मण बच्चों को सिखाये, वह ब्राह्मण कल्चर बन गई और वे नियम-संयम ही ब्राह्मणों के लिए आदर्श बन गये हैं। इसलिए शिवबाबा ने भी कहा है कि तुमको कोई नया कदम नहीं रखना है। जो ब्रह्मा बाबा ने किया, वही तुमको करना है। उनके कदमों पर कदम रखकर चलना है। उनको ही कापी करना है। इन सिद्धान्तों, नियम-संयमों को अपनाकर अनेक विदेशी भाई बहनें भी ब्राह्मण कल्चर को अपनाकर अपना जीवन सफल कर रहे हैं और अपने-

अपने देशों में रहते भी अपने को सम्मानित (Graceful) अनुभव कर रहे हैं तथा अपने को भारतवासी या ब्राह्मण कहने में गर्व अनुभव करते हैं।

वर्तमान में परमात्मा के द्वारा सिखाये गये ये नियम-संयम ही भविष्य दैवी सभ्यता के आधार स्तम्भ हैं और भविष्य की दैवी सभ्यता के आधार बनेंगे, जिसके आधार पर वह दैवी सभ्यता 2500 साल तक विस्तार को पाती रहेगी, फलती-फूलती रहेगी और उसके बाद भक्ति मार्ग में भी वे नियम-संयम अंशमात्र में काम करते रहेंगे।

सतयुग-त्रेतायुग के बाद भारतीय सभ्यता में जो तीर्थ, व्रत, यम-नियम आदि बनाये गये, वे आत्मिक कल्याण और दैहिक कल्याण दोनों रूपों से हितकर हैं और बनाने वाले ऋषि-मुनियों ने दोनों ही हित देखकर बनाये हैं। भल ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर हम अभी समझते हैं कि उनसे आत्मा की और विश्व की कोई चढ़ती कला नहीं होती है बल्कि उतरती कला ही होती है परन्तु गहराई से देखें तो देखेंगे कि उन नियम-संयम को अपनाने से कलाओं के उतरने की गति मन्द अवश्य होती है।

भारतीय सभ्यता में मनुष्यात्मायें तो क्या विश्व के सभी जीव-जन्तुओं को भी सम्मान दिया गया है, उनको दुख देने, मारने को भी पाप की दृष्टि से देखा गया है। हिंसक-मांसाहारी व्यक्ति को समाज में अच्छा नहीं माना जाता है। इसके कारण ही अनेक धार्मिक प्रवृत्ति वाले मनुष्य चीटिंयों और चिड़ियाओं को भी खाना डालते हैं। अनेक धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति खाने से पहले अपने इष्ट देवता को भोग लगाते हैं, अन्य प्राणियों अर्थ कुछ न कुछ निकालते हैं फिर भोजन स्वीकार करते हैं।

भारत के सभी त्योहार किसी न किसी आध्यात्मिक रहस्य को लेकर बनाये गये हैं, किसी व्यक्ति विशेष के जन्म या मृत्यु से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। जिनमें शिव-जयन्ति, होली, रक्षाबन्धन, दुर्गा पूजा, दशहरा, दीपावली मुख्य हैं। इन सबका राज़ अभी परमपिता परमात्मा ने बताया है।

भारतीय सभ्यता में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही सम्मान दिया गया है और स्वर्ग में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण, श्रीसीता-श्रीराम को साथ-साथ सिहांसन पर बिठाते हैं, जिसको भक्ति मार्ग में भी चित्रों या मन्दिरों में दिखाया गया है। भारतीय सभ्यता में पवित्रता की महानता के कारण सन्यासियों और कन्याओं को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

भारतीय कोड विल में शादी को एक पवित्र बन्धन माना गया है और किसी भी शुभ कार्य में दोनों का होना आवश्यक होता है।

‘‘भारत विश्व का मालिक था, अभी कंगाल है। फिर से इन माताओं के द्वारा भारत विश्व का

मालिक बनता है। मैजारिटी माताओं की है इसलिए बन्दे मात्रम् कहा जाता है।''

सा.बाबा 1.11.03 रिवा.

सन्यासियों के विषय में परमात्मा के महावाक्य हैं कि सन्यासियों ने खास भारत और आम सारे विश्व को विकारों की अग्नि में जलने से बचाया है, उनके कारण विश्व का पतन धीरे-धीरे हुआ है।

भारतीय सभ्यता में वैवाहित जीवन में भी पर-स्त्री गमन, बहु-स्त्री गमन को बुरा माना जाता है। स्त्रियों के लिए भी पर-पुरुष गमन या पर-पुरुष की ओर विकारी दृष्टि रखने वाली को व्यभिचारिणी कहा जाता है और अपमानित दृष्टि से देखा जाता है। भारतीय सभ्यता में द्वापर युग से जब सृष्टि में भोगबल से सन्तान उत्पत्ति की प्रथा चली तब से भी स्त्री के लिए पतिव्रता और पति के पत्निव्रता होना ही श्रेष्ठ जीवन की मान्यता रही है। इस सत्य की सफलता का भी श्रेय संगमयुगी जीवन को ही है, जब आत्माओं ने परमात्मा के साथ अव्यभिचारी याद का व्रत पालन किया और संस्कारों में वही बीज सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक आत्माओं में चलता आ रहा है।

भारतीय लोगों को अंग्रेज दास बनाकर अन्य देशों में ले गये और उनसे अनैतिक रूप से कार्य कराया परन्तु फिर भी उस सब को सहन करते हुए उन्होंने वहाँ भी अपनी सभ्यता का प्रचार-प्रसार किया और उन देशों की उन्नति में सहायक बनें। विदेशी सभ्यताओं के लोग भारतीय सभ्यता से प्रभावित होकर भारत में आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति, भारतीय समृद्धि से प्रभावित होकर धन प्राप्ति, योग आदि सीखने के लिए आये और आज भी आते रहते हैं। आज के इस वैज्ञानिक युग में अभी कुछ भारतीय विदेशों में साइन्स आदि की शिक्षार्थ जा रहे हैं, जो साइन्स ही आगे आने वाली सतयुगी दुनिया में काम आयेगी।

भल विदेशियों ने भारतीयों के साथ दासता का व्यवहार किया परन्तु परमात्मा ने हमको उनके प्रति भाई-भाई की दृष्टि रखकर प्रेम का पाठ पढ़ाया है और उस भ्रातृत्व प्रेम की भावना से उनके कल्याणार्थ ब्रह्माकुमार भाई-बहनें विदेश में जा रहे हैं और उनकी सेवा कर रहे हैं। विदेश में जाने वाले भाई बहनों को परमात्मा की श्रीमत है कि तुम उनसे कुछ लेने का संकल्प नहीं रखना, तुम दाता के बच्चे हो, इसलिए उनको कुछ देना है ऐसा समझकर ही उनकी सेवा करना। तुम्हारे पास जो है, वह विश्व की किसी भी आत्मा के पास नहीं है, इसलिए सभी को देना तुम्हारा कर्तव्य है।

विदेशी ब्रह्मा कुमार-कुमारी भाई बहनों का भारत भूमि, भारतीय सभ्यता से गहरा प्यार है और अपने जीवन को ब्राह्मण कल्चर के अनुरूप बना रहे हैं। विदेशी ब्रह्मा कुमार-कुमारी भाई-बहनें अपने को भारतीय कहने में गर्व अनुभव करते हैं और ब्राह्मण कल्चर से उनका बहुत प्यार

है।

भारत में सतयुग और त्रेतायुग तक विवाह के लिए स्वयंवर प्रथा थी परन्तु समाज में एक पत्नि प्रथा थी। स्वयंवर की वह प्रथा द्वापर तक चलती रही लेकिन विकारों की प्रवेशिता और शक्ति के परीक्षण के आधार पर राजाओं में बहु-पत्नि प्रथा भी आ गई। उससे समाज में अशान्ति बढ़ी और समाज में स्वयंवर के स्थान पर सामाजिक नीति-रीति से विवाह की पद्यति आरम्भ हुई। बाद में तमोप्रधानता के कारण सामाजिक व्यवस्था की सुविधा के लिए हिन्दू कोड बिल आदि की भी रचना हुई।

भारतीय सभ्यता में द्वापर से चली भक्तिमार्ग की रीति-रस्में, नियम-संयम हमारे सामने हैं परन्तु देवी-देवताओं की क्या रीति-रस्में, नियम-संयम, जीवन-व्यवहार होगा, उसके विषय में लोगों को कुछ भी पता नहीं है। बाबा ने हमको उसके विषय में कुछ इशारे दिये हैं और कहा है कि वहाँ की रीति-रस्में वहाँ चलकर देखेंगे, अभी तुमको सम्पूर्ण कर्मातीत बनने का पुरुषार्थ करना है। जब उसको स्वर्ग कहते हैं तो वहाँ की रीति-रस्म जरूर कलियुग से भिन्न होगी।

वर्तमान में ब्राह्मण कल्चर या ब्राह्मण जीवन की रीति-रस्में, नियम-संयम, जीवन-व्यवहार जो बाबा ने सिखाया है, वही आत्म-कल्याण के लिए हितकर है और वे नियम-संयम, रीति-रस्में, जीवन-व्यवहार ही दैवी सभ्यता का आधार होगा अर्थात् उसके अनुरूप ही रीति-रस्में, नियम-संयम, जीवन-व्यवहार देवताओं का होगा, जो समयान्तर में परिवर्तन भी अवश्य होगा। ब्राह्मण जीवन ही सारे कल्प के रीति-रस्मों, नियम-संयम, जीवन-व्यवहार का बीज है। यहाँ से ही सारे कल्प के संस्कारों का बीजारोपण होता है, जो समयानुसार वहाँ फलता-फूलता है, विस्तार को पाता है। ये ब्राह्मण जीवन सारे कल्प के संस्कारों का आधार है और ये ब्राह्मण कल्चर अर्थात् ब्राह्मण सभ्यता सारे कल्प में सभी सभ्यताओं का आधार है, जिसके आधार पर ही सभी सभ्यतायें देश, काल और परिस्थितियों के आधार पर विस्तार को पाती हैं क्योंकि सभी धर्मों और सभ्यताओं का उद्गम भारत की प्राचीन सभ्यता से ही होता है।

सतयुग में राजा-प्रजा, दास-दासी की सतोप्रधान रीति-रस्में थी, जो कलियुग में तमोप्रधान बन गई, उसका बीजारोपण भी अभी यहाँ ही होता है। अभी जो जैसा पुरुषार्थ करता है, उस अनुसार ही उसका सतयुग में पद होता है अर्थात् राजा, प्रजा, नौकिर-चाकर, दास-दासी आदि बनते हैं। भल वहाँ दास-दासी नाम नहीं होगा, व्यवहार में घृणा भाव या दृष्टि में भेद-भाव नहीं होगा परन्तु नम्बरवार पद अवश्य होंगे। हर आत्मा के स्वभाव-संस्कार जैसे होंगे, उस अनुसार कर्म करने में उनको कोई हिचक आदि नहीं होगी। सब स्वेच्छा से खुशी से अपना कर्म करेंगे भले वह दास-दासी का हो या राजा-प्रजा का हो। वहाँ के जीवन व्यवहार में प्रेम-भाव प्रधान होता है।

त्रेता अन्त तक दैवी सभ्यता का विस्तार सारे एशिया खण्ड और अफ्रीका के उत्तरी भूभाग और योरोप के पूवी-दक्षिणी भूभाग तक फैल जाता है। द्वापर से जब वाम मार्ग में जाते हैं तो अर्थ-क्वेक होने के कारण नदियों के बहाव, सागर के जल स्तर के कारण वे सभ्यता के अनेक भूभाग अलग हो जाते हैं और अनेक खण्डों का निर्माण होता है। उन खण्डों में जो जनसंख्या रह जाती है, उससे अनेक धर्मवंश वंशों का जन्म और विस्तार होता है। जो मूल देवी-देवता धर्म के होते हैं, वे भारत की मूल गद्दी के सम्पर्क में ही रहते हैं।

''भारत सबसे महान और भाग्यवान है। चाहे धनवान और देश हैं लेकिन फिर भी महान भारत ही गाया जाता है। भाग्यविधाता भाग्य की लकीर खींचने के लिए भारत में ही आता है। ... सभी देश वाले आपके मेहमान होकर आते हैं। ... सदा भाग्यविधाता बाप और भाग्यवान मैं - यह रुहानी नशा रहता है।''

अ.बापदादा 31.3.90 सेवाधारी

''एक रतन भी स्वर्ग का मालिक बना सकता है। गाते भी हैं भारत हमारा बहुत ऊंच देश है। तुम जानते हो हमारा भारत जो स्वर्ग था, अब नर्क बन गया है। ... देहली में कितने बार नये महल बने होंगे।''

सा.बाबा 8.12.06 रिवा.

उत्कृष्ट भक्ति अर्थात् नवधा भक्ति अर्थात् अव्यभिचारी भक्ति भी भारत में ही होती है क्योंकि संगमयुग पर आत्मायें परमात्मा के साथ अव्यभिचारी सम्बन्ध स्थापित करती हैं। अन्धश्रृद्धा युक्त् भक्ति, काशी-कलवट आदि की प्रथा भी भारत में ही होती है। ज्ञान-भक्ति की सब रस्मों का बीज संगमयुग पर भारत में ही पड़ता है। मुक्ति-जीवनमुक्ति की बात भी भारत में ही विशेष रूप से चलती है, जिसके लिए भक्ति आदि करते हैं।

''भारत में ही तुम परमात्मा को मात-पिता कहकर बुलाते हो। ... भारत को ही मदर कन्ट्री कहा जाता है क्योंकि यहाँ ही शिवबाबा मात-पिता के रूप में पार्ट बजाते हैं।''

सा.बाबा 8.7.05 रिवा.

''बाप का फर्ज है पतितों को पावन बनाना। ड्रामा नुसार मुझे सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देनी है। ... भारत में ही लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता, ऐसे नाम बहुतों के हैं, और धर्म वालों के ऐसे-ऐसे नाम नहीं सुनेंगे। ... यहाँ के लक्ष्मी-नारायण नाम वाले मन्दिरों में जाकर सतयुगी लक्ष्मी-नारायण के आगे माथा टेकते हैं।''

सा.बाबा 26.12.06 रिवा.

भारत और भक्ति-भावना, कर्म-काण्ड आदि

भारत और सन्यास मार्ग अर्थात् निवृत्ति मार्ग

जैसे ज्ञान की आदि भारत से होती है, नई दुनिया की आदि भारत से होती है, वैसे भक्ति की आदि भी भारत से ही होती है। द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत विकर्म करना आरम्भ करते हैं और उसके फलस्वरूप दुख का आरम्भ होता है तो उस दुख से छूटने के लिए भक्ति का आरम्भ भी भारत से ही होता है। भक्ति मार्ग में पहले सोमनाथ का मन्दिर बनाते हैं और अव्यभिचारी भक्ति करते हैं।

भारत में ही नवधा भक्ति करते हैं तो गला भी काटने को तैयार हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप साक्षात्कार आदि होता है। भक्ति में मुक्ति के लिए काशी-कलवट की प्रथा भी भारत में थी। इस प्रकार भक्ति की प्रथा भी भारत से ही आरम्भ होती है और विश्व में फैलती है। भक्ति भी बाद में तमोप्रधान हो जाती है और अन्धश्रृद्धा के वश पत्थर-भित्तर सबको पूजने लगते हैं।

''भक्ति में नीचे उतरते आते हैं, ज्ञान से तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। ... भक्ति भी पहले बहुत अच्छी होती है। जैसे स्वर्ग पहले बहुत अच्छा होता है, फिर आहिस्ते-आहिस्ते कला कम होती जाती है।''

सा.बाबा 24.7.06 रिवा.

''भक्ति तो भारत में जितनी होती है, उतनी और कहाँ नहीं होती। ... जो देवताओं के पुजारी हैं, वे ही यहाँ आकर ब्राह्मण बनेंगे। ... कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा होगा, वे ही फिर पढ़ेंगे। ... भारतवासियों जैसी भक्ति कोई नहीं करते हैं।''

सा.बाबा 24.7.06 रिवा.

''भारतवासी आत्मायें खास बुलाती हैं कि आकर पतितों को पावन बनाओ। ... सतयुग-त्रेता में भक्ति मार्ग होता नहीं। ज्ञान मार्ग भी नहीं कहेंगे। ज्ञान तो मिलता ही है संगम पर, जिससे तुम 21 जन्म प्रालब्ध पाते हो। ... तुमको अभी ज्ञान रतन मिलते हैं, जिससे तुम नई दुनिया के मालिक बनते हो।''

सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

''माया का ग्रहण सबको लगा हुआ है, बड़ा ग्रहण तुम पर लगा हुआ है। सर्वगुण सम्पन्न तुम ही थे, फिर ग्रहण भी तुम पर ही लगा है। ज्ञान भी अभी तुम बच्चों को मिला है। ... आपही पूज्य, आपही पुजारी, यह सिवाए भारत के और कोई को नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 27.5.06 रिवा.

''भारत ही स्वर्ग था। भारत जैसा कोई देश हो नहीं सकता। ... भारतवासियों ने जितने जप-तप

आदि किये हैं, उतना और कोई ने नहीं किया है। जो पहले-पहले आये होंगे, उन्होंने ने ही भक्ति अधिक की होगी और वे ही ज्ञान-योग में भी तीखे जायेंगे क्योंकि उनको ही पहले नम्बर में आना है।''

सा.बाबा 29.5.06 रिवा.

''ब्लाइण्ड फेथ, आइडल वर्शिप में भारत मशहूर है। ... गीता पढ़ने वालों को समझाना चाहिए, वे ही हमारे धर्म के हैं। पहली मुख्य बात है ही गीता के भगवान की।''

सा.बाबा 30.4.05 रिवा.

भारत में कई धर्म हैं, जो सब अपने को हिन्दू कहलाते हैं, उनमें कोई देवी-देवताओं को मानते हैं और कोई नहीं भी मानते हैं। ऐसे ही सन्यास धर्म है, जो वास्तव में भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्म से अलग है परन्तु सन्यास धर्म वालों का भी भारत के इतिहास और भारत के उत्थान-पतन में महत्वपूर्ण योगदान है, इसलिए परमात्मा भी सन्यास धर्म वालों की महिमा करते हैं। ''निवृत्ति मार्ग वालों का भी ड्रामा में पार्ट है। वे नहीं होते तो भारत की क्या हालत हो जाती! जो ज्ञान को अच्छी रीति धारण करेंगे, वे अच्छी रीति सर्विस कर सकेंगे। ... इस नॉलेज को सारा दिन सिमरण कर बड़ा वण्डर लगता है। भारत अब स्वर्ग बन रहा है।''

सा.बाबा 25.1.05 रिवा.

''योरोपवासी गॉड फादर कहते हैं। भारत में तो पत्थर-भित्तर को भी भगवान समझ लेते हैं। शिवलिंग भी पत्थर का होता है, समझते हैं इस पत्थर में भगवान बैठा है।''

सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

''बापदादा भक्तों को एक बात की आफरीन देते हैं कि किसी भी रूप से भारत में वा हर देश में उत्साह की लहर फैलाने के लिए उत्सव तो अच्छे बनाये हैं। एक-दो दिन के लिए हो लेकिन उत्साह की लहर तो फैल जाती है ना, इसलिए उत्सव कहते हैं।''

अ.बापदादा 7.03.86

''भारत में बाप का कर्तव्य चला है इसलिए बाप के साथ आप सबके चित्र भी भारत में ही हैं। ज्यादा मन्दिर भारत में बनाते हैं। ... विदेश में बड़े फल होते हैं लेकिन टेस्टी नहीं होते। भारत के फल छोटे होते लेकिन टेस्ट अच्छी होती है। फाउण्डेशन तो सब यहाँ ही पड़ता है।''

अ.बापदादा 4.03.86

''देवी-देवता भारत में ही राज्य करके गये हैं ना। फिर बाद में कितने मन्दिर बनाते हैं। ... भारत ही सतोप्रधान सो भारत ही तमोप्रधान बनता है।''

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''अभी तुम समझ गये हो - ज्ञान, भक्ति और फिर है वैराग्य। ... बाप कहते हैं - भारत तो बहुत पवित्र था। इतना पवित्र और कोई खण्ड होता नहीं। भारत की तो बहुत ऊंची महिमा है, जो भारतवासी खुद नहीं जानते हैं।''

सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''सच बाप सच सुनाते हैं, जिससे तुम बच्चे सच बन जाते हो और सच खण्ड भी बन जाता है। भारत सचखण्ड था। नम्बरवन ऊंच तें ऊंच तीर्थ भी यह है क्योंकि सर्व की सद्गति करने वाला बाप भारत में ही आते हैं। ... ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। वैराग्य है रात का। ... वह है हद का वैराग्य, तुमको तो सारी बेहद की दुनिया से वैराग्य है। संगम पर ही बाप आकर तुम्हें बेहद की बातें समझाते हैं।''

सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

''फिर भी सन्यासियों की पवित्रता पर भारत थमा रहता है। कुछ बचाव करते हैं। भारत खण्ड में ही इतने देवी-देवताओं के मन्दिर आदि हैं। यह भी खेल है, जिसका वृतान्त तुम बताते हो।''

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

''ड्रामा में तो सभी बांधे हुए हैं, जिसको कोई नहीं जानते। यह न जानना भी ड्रामा में नूँध है, जो बाप ही आकर सुनाते हैं। ... भक्ति मार्ग की भी ड्रामा में नूँध है। पहले शिव की भक्ति करते फिर देवताओं की। भारत की ही तो बात है। ... सबको जो अनादि-अविनाशी पार्ट मिला हुआ है, सो बजाना है। इसमें कोई का दोष वा भूल नहीं कह सकते हैं। यह तो सिर्फ समझाया जाता है कि पापात्मा क्यों बने हैं।''

सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

''नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हर एक जीवात्मा अब अपने ऊपर वण्डर खा रही है कि हम क्या थे, किसके बच्चे थे, बाप से क्या वर्सा मिला था, फिर कैसे हम भूल गये। ... हमारा घर कहाँ है, कहाँ के रहने वाले थे ... भटक-भटक का फाँ हो गये। अपने ही अज्ञान के कारण रावण राज्य में तुमने कितना दुख उठाया है। भारत भक्ति मार्ग में गरीब बनता है। ... भक्ति के बाद ही भगवान फल देते हैं।''

सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

''गाया भी जाता है - बेगर टू प्रिन्स। ... बाबा पहले बेगर बनाकर फिर प्रिन्स बनाते हैं। देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोड़े तो बेगर ठहरा ना। कुछ भी है नहीं। अभी भारत में कुछ भी है नहीं। भारत अभी बेगर, इन्सालवेन्ट है, फिर सालवेन्ट होगा। ... कोई मरता है तो दीवा जगाने की रस्म भारत में ही है। आत्मा की परमात्मा बाप की याद से बैटरी भरती है, दीवा जाग्रत होता है।''

शंकराचार्य का सन्यास धर्म, उसकी उपलब्धियां, परकाया प्रवेश। बाबा के महावाक्य - सन्यासियों ने ही पवित्रता के बल से भारत और विश्व को थमाया है।

भारत और काल-चक्र

ज्ञान सागर परमात्मा भारत में ही आकर काल-चक्र का ज्ञान देते हैं कि ये काल-चक्र कैसे फिरता है, वह भी अभी परमात्मा द्वारा पता चला है कि हम काल-चक्र के हिसाब से सतो, रजो, तमो में कैसे आते हैं, यह भी अभी पता पड़ा है।

समय की गति पर विचार करें तो भूतकाल, वर्तमान और भविष्य का यह काल-चक्र है, जो सतत चलता रहता है। इस काल-चक्र में क्या-क्या घटनायें होती हैं, उन पर विचार करें तो देखेंगे कि यह सारा काल-चक्र भारत के आसपास ही घूमता है अथवा कहें कि सारे काल-चक्र में भारत विद्यमान रहता है, भारत का विशेष महत्व है। भले ही विश्व-नाटक के परिवर्तनशीलता के सिद्धान्त के अनुसार भारत का भी रूप परिवर्तन अवश्य होता है। विश्व के इतिहास पर विचार करें तो देखेंगे कि भारत तीनों कालों और चारो युगों में रहता ही है परन्तु सतो, रजो, तमो का विधि-विधान भारत पर भी प्रभावित होता है। परमात्मा पिता के शब्दों में सतयुग-त्रेता युग में भारत रामराज्य अर्थात स्वर्ग होता है और द्वापर-कलियुग रावणराज्य अर्थात नरक के रूप में होता है। ये पूरे कल्प का काल-चक्र 5000 वर्ष का है, इसकी गणना के लिए और भी अनेक प्रकार के काल-चक्र हैं, जिनमें पृथ्वी की गति के आधार पर दिन-रात का काल-चक्र, चन्द्रमा और पृथ्वी की गति के आधार पर मास का काल-चक्र, पृथ्वी और सूर्य की गति के आधार पर वर्ष का काल-चक्र आदि आदि। इस कल्प के काल-चक्र का आधार ज्ञान-सूर्य परमात्मा है। उसके आने से और उसके कर्म के आधार पर ही इस कल्प के काल-चक्र का परिवर्तन होता है अर्थात् वह आकर आत्माओं जो कर्म सिखाता है, उसके आधार पर आत्माओं के कर्मो में परिवर्तन होता है और इस कल्प के दिन-रात अर्थात् स्वर्ग-नर्क के काल-चक्र परिवर्तन होता है। कल्प और वर्ष के काल-चक्र की गणना भी विभिन्न धर्म और देशों में तथा समय पर अलग-अलग प्रकार से की गई है। इसकी गणना का यथार्थ राज़ ज्ञान-सूर्य परमात्मा ही जानते हैं और वही आकर बताते हैं। परमात्मा का ये कर्तव्य भारत में ही चलता है अर्थात् भारत में ही परमात्मा आकर इस काल-चक्र का यथार्थ ज्ञान देते हैं और इस काल-चक्र को बदलाते हैं अर्थात् इसको पुनर्गति प्रदान करते हैं। इसलिए भारत पूरे काल-चक्र में विद्यमान रहता है।

भगवानुवाच - इस सारे विश्व की कहानी भारत पर ही है अर्थात् भारत ही स्वर्ग और

भारत ही नर्क होता है, भारत ही सुखधाम और भारत ही दुखधाम बनता है, भारत ही पावन अर्थात् सतोप्रधान और भारत ही पतित अर्थात् तमोप्रधान बनता है। भले विश्व के सभी देश, धर्म और उनकी आत्मायें अपने समय के अनुसार पावन और पतित बनते हैं अर्थात् सतोप्रधान और तमोप्रधान बनते हैं परन्तु उनमें भारत विशेष होता है अर्थात् सबका आधार भारत ही होता है। इसलिए काल-चक्र के आधार पर भारत के विषय में कुछ विचार करते हैं।

''एक तो बाप को याद करो और चक्र को याद करो। ... देवतायें तो पवित्र थे, ड्रामा प्लेन अनुसार फिर वे हिन्दू कहलाने लग पड़ते हैं। हिन्दुस्तान तो नाम बाद में पड़ा है, असली नाम भारत है। कहते हैं भारत माताओं की जय। ... भारत की ही महिमा करते हैं। ... चक्र को भी जानना है। चक्र फिरता रहता है, कब बन्द नहीं होता है।''

सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

भारत का गौरवमय भूतकाल

आदि काल अर्थात् आज से 5 हजार वर्ष पहले में भारत ही स्वर्ग था, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य था, सुख-शान्ति, समृद्धि थी परन्तु प्रकृति के नियमानुसार वह सुख-शान्ति, समृद्धि कम होती गई। फिर भी उस समय को सारे धर्म और देश याद करते हैं।

''दान गरीब को दिया जाता है। यह भारत खण्ड गरीब है। भारत साहूकार से गरीब हुआ है, यह किसको भी पता नहीं है। यह भारत ही अविनाशी खण्ड है, जहाँ भगवान अवतार लेते हैं। भारत सोने की चिड़िया था अर्थात् सर्व सुखों का भण्डार था।''

सा.बाबा 17.12.03 रिवा.

भारत का गौरवमय भविष्य

काल-चक्र के अनुसार इस सृष्टि-चक्र में हर चीज़ और घटना पुनरावृत्त होती है, इसलिए उसके अनुसार जो भारत आज पतित, तमोप्रधान, दुखी बन गया है, वह फिर से अपने पूर्व गौरव और समृद्धि को प्राप्त करेगा। उसके लिए परमात्मा पिता राजयोग सिखला रहे हैं और महाभारत लड़ाई अर्थात् तृतीय विश्व-युद्ध की तैयारी हो रही है। इस महाभारत लड़ाई के बाद फिर से भारत स्वर्ग होगा। ये कोई कल्पना नहीं लेकिन शत प्रतिशत सत्य है।

''भारत का नम्बरवन दुश्मन है रावण और नम्बरवन दोस्त है खुदा। ... बाप फिर से भारत को सोने की चिड़िया स्वर्ग बनाते हैं। ... कैपिटल देहली होती है, जहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य होता है। रामराज्य में भी देहली ही कैपिटल रहती है।''

सा.बाबा 27.9.06 रिवा.

''भारत को इन ब्रह्मा-सरस्वती और ब्राह्मणों के द्वारा स्वर्ग बनाता हूँ। ... राइज़ ऑफ भारत देवताओं का राज्य और फॉल ऑफ भारत रावण राज्य। ... बाप यहाँ ही आकर सबको पावन बनाते हैं, तो यह सबसे बड़ा तीर्थ ठहरा।''

सा.बाबा 27.9.06 रिवा.

''सतयुग आदि में बहुत करके 9-10 लाख होंगे। शुरूआत में झाड़ छोटा ही होता है। ... संगम पर ही अनेक धर्मों का विनाश और एक धर्म की स्थापना हुई थी। आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, और कोई धर्म नहीं था।''

सा.बाबा 7.10.06 रिवा.

भारत का गौरवमय मध्यकाल और तमोप्रधान वर्तमान समय

काल-चक्र में देखें तो मध्यकाल में भी विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, पृथ्वीराज चौहान आदि प्रतापी राजा हुए। गौतमबुद्ध, शंकराचार्य जैसे धर्म-स्थापक हुए। वास्तव में जो भी धर्म-स्थापक हुए हैं वे भारत में ही हुए हैं क्योंकि उनकी आत्मा आदि सनातन देवी-देवता धर्मवंश की आत्मा के शरीर में प्रवेश हुई है और उस समय तक सारा विश्व भारत के नाम के जाना जाता था। बाद में उस स्थान अथवा क्षेत्र का नामकरण वर्तमान देश के रूप में हुआ है। कलियुग और कलियुग के अन्त में में भी महाराणा प्रताप, शिवाजी, आदि वीर और विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महान आत्माओं ने भारत की मान-मर्यादा को कायम रखा, अन्त में अंग्रजों के साथ स्वतन्त्रता की लड़ाई में भी झांसी की रानी जैसी वीरांगनाओं और भगतसिंह जैसे स्वतन्त्रता प्रेमी वीरों ने अपने जीवन का बलिदान करके भारत का मान रखा है।

सृष्टि के नियमानुसार जो सतोप्रधान था, उसको तमोप्रधान बनना ही है। जैसा बाबा ने भी बताया है और देखने में भी आता है, उस अनुसार आज भारत नर्क बन गया है अर्थात् भारत में कई बातें तमोप्रधानता की चरम सीमा को प्रदर्शित करती हैं क्योंकि भारतवासी अपने धर्म-कर्म को भूल गये हैं। साथ ही आत्मा के मूलभूत अविनाशी संस्कारों की कुछ विशेषतायें आज भी भारतवासियों में विद्यमान हैं।

भारत का गौरवमय वर्तमान

काल-चक्र के हिसाब से कल्प का संगमयुग सबसे सुन्दर और सुखमय समय है और उसकी आदि भी भारत में ही होती है, जब परमात्मा पिता भारत में अवतरित होते हैं और यथार्थ ज्ञान देते हैं। अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे समझ में आया है कि ये सारा

विश्व-नाटक भारत पर ही बना हुआ है। भारत अविनाशी भूमि है। भारत ही स्वर्ग बनता है तो भारत ही नरक बनता है। सारे कल्प अर्थात् चारो युगों में भारत में जनसंख्या होती ही है, इसलिए भारत के धर्म को जिसे आजकल हिन्दू कह देते हैं, उसका यथार्थ नाम आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। सनातन अर्थात् जो कभी भी पृथ्वी पर पूरा लोप नहीं होता है। अन्य धर्म तो स्थापन होते हैं और विनाश के समय उस धर्म की सभी आत्मायें परमधाम चली जाती है परन्तु आदि सनातन देवी-देवता धर्म की सभी आत्मायें एक साथ परमधाम नहीं जाती है और न ही कब इसकी स्थापना नये सिरे से होती है। इस धर्म की कलम लगती है और इसकी कलम लगाने वाला है परमपिता परमात्मा, जो संगमयुग पर आकर इसकी कलम लगाते हैं। कल्पान्त में परमपिता परमात्मा संगमयुग पर भारत भूमि पर आकर इस धर्म की कलम लगाते हैं अर्थात् पतित आत्माओं को पावन बनाते हैं। परमात्मा सर्व आत्माओं का मात-पिता है और उनको सर्व आत्माओं को आकर पावन बनाना है, पिता के नाते सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार देना है परन्तु परमात्मा ये कर्तव्य संगमयुग पर भारत में ही आकर करते हैं और भारत के बच्चों को उसके लिए निमित्त बनाते हैं। ये संगम युग ही आत्माओं की चढ़ती कला का युग है। खास भारत और आम सारी दुनिया की चढ़ती कला होती है।

परमात्मा के द्वारा विश्व परिवर्तन का सारा कार्य भारत से ही होता है। भारत से ही परमात्मा की श्रीमत पर आत्मायें सारे विश्व में जाकर परमात्मा का सन्देश देते हैं, जिससे सभी धर्मवंश की आत्माओं का कल्याण होता है। हर धर्म वंश के धर्मपिता आकर परमात्मा से सन्देश लेकर अपने धर्म वंश की आत्माओं को देते हैं, जिससे वे आत्मायें भी पावन बनकर परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार पाती हैं और मुक्तिधाम अपने घर वापस जाती हैं और अपने समय पर वे धर्मपिता पुन: आकर अपने धर्म वंश की स्थापना करते हैं। भारत और भारत वासी बच्चे ही परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनते हैं, यह है भारत का गौरवमय वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग। भले ही अन्य देशों में अन्य धर्म वंश की आत्मायें भी परमात्मा के इस दिव्य कार्य में सहयोगी बनते हैं परन्तु वे आत्मायें भी पहले भारतवासी ही थीं, बाद में सेवार्थ धर्म परिवर्तन होकर अन्य धर्मों और देशों में गई हैं। जो आत्मायें इस सत्य को समझ लेती हैं, वे अपने को ओरिजिनल भारतवासी कहती हैं और अपने को भारतवासी कहलाने में गर्व अनुभव करती हैं। वे आत्मायें वर्तमान ब्राह्मण धर्म की कल्चर, खान-पान, गुण-धर्म को अपनाते हुए भविष्य में आने वाले सतयुग के देवी-देवता बनने का पूरा पुरुषार्थ करती हैं।

भौतिक दृष्टिकोण से भी अनेक प्रकार की भविष्यवाणियां इस बात को सिद्ध करती हैं कि भविष्य में भारत एक महान शक्ति के रूप में विश्व के सामने आयेगा। वर्तमान समय भारत के

महत्व को आज जो विशेष शक्तियों के रूप में विश्व रंगमंच पर हैं, वे भी अनुभव कर रहे हैं और उनका भारत की ओर विशेष झुकाव है।

''जो भारत को स्वर्ग बनाने में मदद करते हैं, उनको इजाफा जरूर मिलता है। जो ब्राह्मण जैसी-जैसी सेवा करते हैं, वैसा पद लेंगे। बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए पवित्र जरूर बनना है।''

सा.बाबा 21.08.03 रिवा.

''यह है शिव शक्ति पाण्डव सेना, जो भारत को स्वर्ग बनाती है। यह तन-मन-धन सब इस सेवा में लगाते हैं।''

सा.बाबा 31.10.03 रिवा.

''दुनिया नरक, कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे - यह नरक है, वह स्वर्ग है। ऐसे नहीं कि द्वापर को नरक कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि हैं। अभी हैं तमोप्रधान। तो यह हेल और हेविन संगम पर लिखेंगे।''

सा.बाबा 4.11.03 रिवा.

''इस संगमयुग में हर दिन ही मनाने का है, हर दिन मौज में रहने का है। ... इसलिए यादगार रूप में भी भारत में अनेक उत्सव मनाते रहते हैं। यह प्रसिद्ध है कि भारत में साल के सभी दिन मनाने के हैं। और कहाँ इतने उत्सव नहीं होते, जितने भारत में होते हैं।''

अ.बापदादा 31.12.92

''बरोबर भारत विश्व का मालिक था ... इसको कल्याणकारी सुहावना संगमयुग कहा जाता है, जहाँ से पतित भारत पावन बनता है। बाप भी कल्याणकारी है और आते भी भारत में हैं।''

सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

''बाप ने समझाया है - यह है भारत के लिए कहानी। क्या कहानी है ? सुबह को अमीर हैं, शाम को फकीर हैं। फकीर और अमीर की बातें तुम बच्चे संगमयुग पर ही सुनते हो। बरोबर भक्ति फकीर बनाती है, ज्ञान अमीर बनाता है। ... अभी एक बाप से ही तुम्हारे सर्व सम्बन्ध हैं, दूसरे कोई से भी बुद्धियोग नहीं है। ... हाईएस्ट बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। जीते जी गोद में जाना वर्सा पाने के लिए, सो अभी ही होता है। ... अभी तुमको ज्ञान मिला है तब तुम सब कुछ जानते हो।''

सा.बाबा 21.4.04 रिवा.

ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य महान

पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही परमात्मा विश्व-परिवर्तन का महान कर्तव्य करते हैं। परमात्मा के कर्तव्य तो महान हैं ही परन्तु जो भारतवासी आत्मायें इस संगमयुग पर परमात्मा के बनकर विश्व-परिवर्तन के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती हैं, वे भी महान है, उनके कर्तव्य भी महान है। इसलिए ब्राह्मण की महिमा गाई जाती है। यह वर्णों का गायन भी भारत में ही होता है।

''तुम शिवबाबा के बच्चे भारत को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारी पूजा होती है। शिवबाबा के साथ तुम इतनी सर्विस करते हो, इसलिए सालिग्रामों की भी पूजा होती है। ... बाप यह भी समझाते हैं कि यह सन्यासी न होते तो भारत काम चिता पर बैठ एकदम खाक हो जाता। ... स्वर्ग में और खण्ड आदि तो होते नहीं हैं, भारत ही होता है।''

सा.बाबा 7.10.03 रिवा.

''भारत में ही रामराज्य और रावण राज्य मशहूर है। ... यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। इस भारत को पुरुषोत्तम बनाकर ही छोड़ना है। ... भारत ही नया और भारत ही पुराना होता है। और कोई खण्ड को नया खण्ड नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

''बड़ों-बड़ों को लिखो कि इस नॉलेज के बिगर भारत का वा दुनिया का कल्याण नहीं हो सकता। ... बच्चे बालिग हो गये तो कह सकते हैं कि हमको तो भारत का उद्धार करना है। ... तुम्हारा धर्म है नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाना, भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाना।''

सा.बाबा 29.8.06 रिवा.

''भारत में देवी-देवतायें होकर गये हैं, इसलिए भारत में उनके मन्दिर बहुत हैं। ... बाप के साथ हम भी भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। ... देहली में बिड़ला मन्दिर में लिखा हुआ है- भारत परिस्तान था, जो धर्मराज ने स्थापन किया था।''

सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

''तुम जानते हो कि हम पतित-पावन, सर्व के सद्गतिदाता शिवबाबा की मत पर फिर से सहज राजयोग बल से अपने ही तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... जितना जो करेंगे, वह अपने भविष्य के लिए बनाते हैं। ... जितना जो तन-मन-धन से सेवा करेंगे, वे ऐसा पायेंगे।''

सा.बाबा 19.8.06 रिवा.

''भारत खण्ड का कभी विनाश नहीं होता है। सतयुग आदि में सिर्फ भारत खण्ड ही रहता है। ... तुम भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करने में मदद कर रहे हो। ... तुम जानते हो हम सूर्यवंशियों ने भारत में राज्य किया, शिवबाबा भी भारत में ही आते हैं। ... ये सब बातें घड़ी-घड़ी बुद्धि में याद करना पड़े।''

सा.बाबा 7.6.06 रिवा.

''अभी भारत का बहुत बड़ा कल्याण हो रहा है। सब आत्मायें पवित्र होकर मुक्तिधाम चली जायेंगी। तुम हो ही भारत की सेवा पर। भारत खास, दुनिया आम सारी दुनिया। ... तुम्हारे पास जो कुछ है, वह दैवी राजधानी स्थापन करने में लगाओ।''

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

''ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के सिवाए और कोई स्वर्ग का मालिक बन न सके। ... नई दुनिया में नया भारत था, उसमें देवी-देवताओं का राज्य था। ... बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चो, मैं इस सृष्टि का मालिक नहीं हूँ। ... बाप आकर विश्व का मालिक बनाते हैं।''

सा.बाबा 22.7.05 रिवा.

''कैड ग्रुप ने अच्छा किया है ... मीटिंग में भी समाचार सुनाकर राय ले लेना, सर्व ब्राह्मणों की राय से और भी शक्ति भर जाती है। बाकी कार्य अच्छा है, करते चलो, फैलाते चलो और भारत की विशेषता प्रगट करते चलो। दिल वालों ने अपनी बड़ी दिल दिखाई, उसकी मुबारक हो।''

अ.बापदादा 30.11.06

''भारत महान देश है - यह आजकल का स्लोगन है और भारत की ही महान आत्मायें गाई हुई हैं। तो भारत महान अर्थात् भारतवासी आत्मायें महान। तो हर समय अपनी महानता से भारत महान आत्माओं का स्थान देवात्माओं का स्थान साकार रूप में बनायेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.90

''तुम सब सन्देशी हो। तुमको खास भारत और आम सारी दुनिया को यह सन्देश पहुँचाना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत में बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वह स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। ... तुमको अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''बच्चों को सदैव स्मति में रहना चाहिए - हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते हैं। ... जैसे बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं - कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। ... तुम्हें सभी को इस अज्ञान अंधकार से निकालना है।''

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''अभी तुम बच्चे अविनाशी ज्ञान रत्नों की लेनदेन करते हो। ... बाप तो सबको देने वाला है, लेने वाला नहीं है। एक देवे, 10 पाये। गरीब 2 रुपया देते हैं तो पदम मिल जाते हैं। भारत सोने की चिड़िया था ना। बाप ने कितना धनवान बनाया। सोमनाथ के मन्दिर में कितना अकीचार धन था। ... फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। ... बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं, जिससे तुम अथाह धनवान बन जाते हो।''

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तिदाता निमित्त आप हो क्योंकि बाप के साथी हो। तो समय की रफ्तार प्रमाण अभी एक ही समय इकट्ठा तीन सेवायें करनी है। एक वाणी, दूसरा स्व शक्तिशाली स्थिति और तीसरा श्रेष्ठ रुहानी वायब्रेशन।''

अ.बापदादा 17.03.03

''सभी आत्मायें बहुत दुखी हैं, बापदादा को अभी इतना दुख देखा नहीं जाता है। पहले तो आप शक्तियों को, देवता रूप पाण्डवों को रहम आना चाहिए। कितना पुकार रहे हैं। अभी पुकार का आवाज आपके कानों में गूँजना चाहिए। बेचारे जिगर से पुकार रहे हैं, तड़फ रहे हैं। अभी भक्तों की पुकार सुनो, दुखियों की पुकार सुनो। साइन्स वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं - कब करें, कब करें, कब करें। ... आपका गीत है - दुखियों पर कुछ रहम करो। सिवाए आपके कोई रहम नहीं कर सकता। इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के मास्टर सागर बनो। स्वयं पर भी रहम और अन्य आत्माओं के प्रति भी रहम। अभी अपना यही स्वरूप लाइट हाउस बनकर भिन्न-भिन्न् लाइट्स की करणों दो, सारे विश्व की अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति की अन्चलि की करणें दो।''

अ.बापदादा 28.02.03

''अभी बापदादा सभी बच्चों को सदा निर्विघ्न स्वरूप में देखने चाहते हैं। क्यों ? जब आप निमित्त बने हुए निविघ्न स्थिति में स्थित रहो तब विश्व की आत्माओं को सर्व समस्याओं से निर्विघ्न बना सको। इसके लिए दो बातों पर अण्डरलाइन करो। एक तो हर आत्मा को अपने आत्मिक दृष्टि से देखो, आत्मा को ओरेजिनल संस्कार के स्वरूप में देखो। चाहे कैसे भी संस्कार वाली आत्मा है लेकिन आपकी हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, परिवर्तन की श्रेष्ठ भावना, उसके संस्कार को थोड़े समय के लिए परिवर्तन कर सकती है। आत्मिक भाव इमर्ज करो।''

अ.बापदादा 02.02.04

''अभी तुम भारत को श्रेष्ठाचारी बनाने की सर्विस करते हो। प्रदर्शनी में तुम बड़ों-बड़ों को भी समझा सकते हो कि हम इस ऊंच सर्विस पर हैं, जिससे हम भारत को श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। कैसे ? वह आकर समझो। ... परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करते हैं, हम उनकी श्रीमत पर भारत की सर्विस कर रहे हैं।''

सा.बाबा 6.1.07 रिवा.

परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा का साथ महान

भारत देश महान, आबू तीर्थ, पाण्डव भवन की भूमि, देलवाड़ा मन्दिर की महानता का राज़

परमात्मा महान हैं, उनका साथ महान है, वे जिस भारत भूमि पर आते हैं, वह महान है। जो आत्मायें साकार में आये परमात्मा के साथ रहती हैं, उनके साथ का अनुभव करती हैं, नैनों से साकार में आये परमात्मा को निहारती हैं, ये सब दृश्य महान हैं, उनको अनुभव करने वाले महान हैं। तब ही तो हर धर्म वाले परमात्मा को याद करते हैं, उनको याद करने के लिए मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि बनाते हैं। इसीलिए गाया हुआ है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहँ जहँ

नाथ पांव तुम धारा।

इसलिए भारत देश महान है, भारत में राजस्थान की भूमि महान है, राजस्थान में आबू तीर्थ महान है, आबू में पाण्डव भवन की धरती विशेष महान है। पाण्डव भवन में भी जहाँ-जहाँ परमात्मा ने साकार में बैठकर आत्माओं का ज्ञान रतनों से श्रृंगार किया, वे स्थान विशेष महान है। उन स्थानों में विशेष वायब्रेशन समाहित है, जो आत्माओं को पावन बनने में विशेष मदद करता है। अव्यक्त बापदादा ने भी इस सत्य को उजागर करते हुए साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद, उनके दाह-संस्कार होने के बाद जो महावाक्य उच्चारे उनमें कहा था कि ये पंच तत्व भी पंच तत्वों में समाहित होकर पंच तत्वों को भी पावन करेंगे। अव्यक्त बापदादा ने 30.11.06 की मुरली में पाण्डव भवन में स्थित विशेष चार धामों का वर्णन किया है, उनकी विशेषता और महिमा बताई है। वे चार धाम हैं - शानति स्तम्भ, बाबा का कमरा, हिस्ट्री हॉल और बाबा की कुटिया।

''भक्ति मार्ग में चार धाम की यात्रा करने वाले अपने को बहुत भाग्यवान समझते हैं और मधुवन में भी चार धाम हैं। तो चार धाम किये ? ... एक शान्ति स्तम्भ महाधाम, दूसरा बापदादा का कमरा - यह स्नेह का धाम, तीसरा झोपड़ी - यह स्नेह मिलन का धाम और चौथा हिस्ट्री हॉल।''

अ.बापदादा 30.11.06

''तुम इस राजयोग से राजाओं का राजा बनते हो अर्थात् तुम जानते हो कि जो विकारी राजायें हैं, उनके भी हम राजा बन रहे हैं। ... अब हम आत्मायें बाप के साथ योग रखने से भारत को पवित्र बनाते हैं और चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज धारण कर हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं। यह बुद्धि में रहना चाहिए। हम युद्ध के मैदान में हैं, विजय हमारी निश्चित है। ... निर्विकारी भारत था, अब वह विकारी बना है। यह चक्र भारत के लिए ही है। भारतवासी ही पूरा चक्र लगाते हैं, और धर्म वाले पूरा चक्र नहीं लगाते हैं। बुद्धि में यह नशा रहना चाहिए।''

सा.बाबा 18.10.03 रिवा.

''सर्विस बहुत करनी है। यह भी ड्रामा में नूँध है। खर्चा सब आपेही आयेगा। अनायास ही सब कुछ होता जायेगा। बाप कहते हैं तुमको 3 पैर पृथ्वी का मिलना भी मुश्किल है। फिर भी तुमने कल्प पहले भारत को स्वर्ग बनाया ही है।''

सा.बाबा 23.10.03 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है ? विनाश तो होना ही है। ... भारत तो अविनाशी पवित्र खण्ड है। उसमें भी आबू सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है, जहाँ बाप आकर सर्व की सद्गति करते हैं। देलवाड़ा मन्दिर कितना अच्छा यादगार है, कितना अर्थ सहित है। परन्तु जिन्होंने बनवाया है, वे यह नहीं जानते। फिर भी अच्छे समझदार तो थे ना। ... तुम जानते हो हम हैं चेतन्य

में, वह हमारा ही जड़ यादगार है।''

सा.बाबा 21.12.04 रिवा.

ब्राह्मण जीवन है विश्व के कल्याणकारी बनने का जीवन, श्रेष्ठ कर्म करने का जीवन। संगमयुग है चढ़ती कला का युग। और सभी धर्म और सभ्यतायें हैं गिरती कला के धर्म और सभ्यतायें हैं क्योंकि वे गिरती कला के समय पर ही आते हैं। भल वे अपने समय पर सतोप्रधान स्थिति में होने के कारण सुख-शान्ति और सम्पन्नता में होती हैं परन्तु स्थिति में दिनोंदिन पतन अवश्य होता है। ये ब्राह्मण धर्म और ब्राह्मण सभ्यता ही चढ़ती कला की सभ्यता और धर्म है। ''तुम इस समय देवताओं से भी ऊंच हो क्योंकि बाप के साथ हो। बाप इस समय तुमको पढ़ाते हैं। ... यह इन्द्र सभा है, जहाँ ज्ञान वर्षा होती है। ... अगर बिगर पूछे कोई विकारी को ले आते हैं तो बहुत सजा मिल जाती है, पत्थरबुद्धि बन जाते हैं।''

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''बच्चे, अपने धन से थोड़ा स्टॉक रखो युक्ति से, बाकी सब वहाँ के लिए ट्रान्सफर कर दो। सब तो ट्रान्सफर नहीं कर सकते हैं। गरीब ही जल्दी ट्रान्सफर कर देते हैं। ... बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज। भारत बहुत गरीब खण्ड है। बाप कहते हैं - मैं आता भी हूँ भारत में। उसमें से भी ये आबू सबसे बड़ा तीर्थ है, जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं।''

सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

''तुम बच्चों को आबू की बहुत ऊंची महिमा करके आबू का राज़ सबको समझाना है। आबू है बड़े से बड़ा तीर्थ। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने आबू में आकर स्वर्ग की स्थापना की है। ... स्वर्ग का और आदि देव का मॉडल सब आबू में है। ... क्रिश्चियन लोग भी जानना चाहते हैं - प्राचीन भारत का राजयोग क्या है और किसने सिखाया ?''

सा.बाबा 07.9.04 रिवा.

''पढ़ाई है सोर्स आफ इन्कम। सारा आसमान, धरती आदि सब हमारे हो जाते हैं। ... बाप का ख्याल तो चलता है - सारा भारत कैसे गोल्डन एज में आ जाये। उसके लिए कितना समझाते हैं।''

सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

भारत और भारत का सम्वत् एवं विश्व के विभिन्न सम्वत्

विश्व में विभिन्न सम्वत् प्रचलित हैं। प्राय: सभी धर्मवंश की राजाई जब चलती है तो उसका प्रथम राजा सिंहासन पर बैठता है, तब को वह अपना संवत् चलाता है या उस धर्म का

धर्मपिता जब आता है, तब से उसका सम्वत् चलता है। विश्व में जो सम्वत् प्रचलित हैं, उनमें क्रिश्चियन्स का ईसवी सम्वत्, भारत का विक्रम सम्वत् एवं शक संम्वत्, चायनीज़ का भी अपना सम्वत् है, मुसलमानों का हिज़री आदि आदि प्रचलित हैं। भारत में जब देवी-देवताओं का राज्य स्थापन हुआ और प्रथम लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठे तब से भारत का सम्वत् आरम्भ हुआ, जिसको शिवबाबा कहते - देवताओं का सम्वत् 1.1.1 से आरम्भ होता है, जिसको 5 हजार वर्ष हुए परन्तु देवी-देवताओं का यथार्थ इतिहास न जानने के कारण उस सम्वत् को कोई जानते नहीं हैं। भारतवासी स्वयं ही उसके विषय में नहीं जानते हैं।

''भारत में विक्रम सम्वत जो कहते हैं, हो सकता है जब से देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं और अपने को हिन्दू कहलाना शुरू करते हों, तब से विक्रम सम्वत भी कहते हों। सम्वत कहा जाता है जब धर्म स्थापन होता है। (जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, तब से विक्रम अर्थात् पुरुषार्थ और फल का समय आरम्भ होता है क्योंकि सतयुग-त्रेता है बाप का वर्सा, जो संगमयुग पर बाप से मिलता है, वहाँ पुरुषार्थ और प्रालब्ध की बात नहीं।)''

सा.बाबा 2.11.06 रिवा.

भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता

भारत में जब स्वर्ग होता है तो आत्मायें देही-अभिमानी स्थिति में होती हैं और भारत में राजनैतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की स्वतन्त्रता होती है, इसलिए सर्वत्र शान्ति और सुख का साम्राज्य होता है। द्वापर से आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत हो जाती हैं, जिससे आत्माओं की व्यक्तिगत और भारत की सामूहिक आध्यात्मिक स्वतन्त्रता खत्म हो जाती है। आध्यात्मिक स्वतन्त्रता ही भौतिक या राजनैतिक स्वतन्त्रता का आधार है। इसीलिए जब भारत में आध्यात्मिक स्वतन्त्रता खत्म हो जाती है तो विदेशी सभ्यताओं केभारत पर आक्रमण शुरू हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप सदियों तक भारत को राजनैतिक परतन्त्रता का सामना करना पड़ता है। भले अभी भारत के बापू गांधी जी ने भारत को राजनैतिक स्वतन्त्रता तो दिलाई परन्तु आध्यात्मिक स्वतन्त्रता न होने के कारण सर्वत्र दुख-अशान्ति का वातावरण है, सिविल वार के आसार बनते जा रहे हैं। आत्माओं को आध्यात्मिक स्वतन्त्रता दिलाना विश्व के बापू परमपिता परमात्मा का काम है, जो वह अभी कर रहा है। परमात्मा जो सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं और जो राजयोग सिखाते हैं, उससे ही खास भारत में और आम सारे विश्व में आध्यात्मिक स्वतन्त्रता आती है और सारे विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापन होता है, जिसे स्वर्ग कहा जाता है।

द्वितीय अध्याय (Second Chapter)

भगवान की दृष्टि में भारत और भारत की दृष्टि में भगवान

भारत देश की महिमा महान , जहाँ आते शिव भगवान।

भारत में ही भगवान का अवतरण होता है और भारत को ही भगवान स्वर्ग बनाते हैं। परमात्मा ने भी ब्रह्मा तन से कहा है - भारत मेरी अवतरण भूमि है, मैं भारत को ही स्वर्ग बनाता हूँ, ये सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है, भारत अविनाशी खण्ड है आदि आदि।

भगवान अर्थात् परमात्मा को साकार और निराकार रूप में, मात-पिता के रूप में भारत में ही माना जाता है क्योंकि आदि भारतवासियों ने ही परमात्मा की मात-पिता के रूप में पालना ली, साकार और निराकार दोनों रूप में अनुभव किया। अन्य देश और धर्म वालों ने तो साकार रूप में न परमात्मा को देखा और न ही उनकी मात-पिता के रूप में पालना ली, इसलिए वे उनको मात-पिता के रूप में या साकार रूप में मान भी कैसे सकते हैं और याद भी कैसे कर सकते हैं क्योंकि प्रकृति का नियम है कि जिसने जिसका अनुभव किया होगा, उसको ही उसकी याद आ सकती है। कहे-सुने तो केवल कल्पना ही हो सकती है, यथार्थ नहीं। इसलिए ये भारत ही है, जहाँ परमात्मा ने साकार और निराकार दोनों रूपों से अनुभव कराया और मात-पिता के रूप में पालना की और भारतवासियों ने ही उसका अनुभव किया और वे ही उनको उस रूप में याद करते हैं। परमात्मा ने भी कहा है - दूसरे धर्म वाले तो परमात्मा को केवल गॉड फादर कहकर पुकारते हैं, भारतवासी ही मात-पिता के रूप में याद करते हैं क्योंकि उन्होंने परमात्मा को मात-पिता के रूप में देखा और अनुभव किया है।

''ड्रामा अनुसार भारतवासियों को अपना धर्म भूल जाना है तब तो फिर बाप आकर वह धर्म स्थापन करे। नहीं तो फिर बाप आये कैसे ? कहते हैं जब-जब देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है तब मैं आता हूँ। ... भारत की महिमा भी बहुत करनी है। यह भारत होलीएस्ट लेण्ड है, सर्व का दुख हर्ता और सुख कर्ता, सर्व का सद्गतिदाता एक ही बाप है। भारत उनका बर्थ प्लेस है। ... वे आपस में लड़ते हैं, मक्खन बीच में भारतवासियों को ही मिलना है।''

सा.बाबा 20.11.03 रिवा.

''जैसे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, अभी झाड़ के एण्ड (end) में खड़ा है, ऐसे क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है ना। जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा है वैसे वह प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध ... यह सब धर्म की स्थापना करने वाले हैं। ... अन्त में यह भी आकर समझेंगे। पिछाड़ी में सलाम करने आयेंगे जरूर। उन्हों को भी कहेंगे बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप सबके लिए कहते हैं - देह सहित देह के सब धर्मों को छोड़

अपने को अशरीरी आत्मा समझ बाप को याद करो।''

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

''बाप समझाते हैं - यह नाटक है हार-जीत का, हेल-हेविन का। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है। यह बना-बनाया ड्रामा है। ऐसे नहीं कि परमपिता सर्वशक्तिवान है तो खेल पूरा होने के पहले ही आयेगा या आधे में खेल को बन्द कर सकता है। ... तुम जानते हो - भारत है सबसे पुराना खण्ड, जो कभी विनाश नहीं होता है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य भी यहाँ ही होता है। ... वही भारत अभी पतित है तब फिर मैं आता हूँ। इस बेहद के ड्रामा में हर एक आत्मा का पार्ट नूँधा हुआ है, जो रिपीट होता है। इस बेहद के ड्रामा से ही कोई टुकड़ा निकाल हद का ड्रामा बनाते हैं।''

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

रामायण में तुलसीदास ने लिखा है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा की कर्म भूमि का कितना महत्व है। ये भारत भूमि वह भूमि है, जिसको निराकार परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा तन द्वारा स्पर्श करके, पवित्रता का बीजारोपण किया, अपने संकल्प से इसके वातापरण में पवित्रता का संचार किया, ज्ञान देकर आत्माओं में पवित्रता का संस्कार भरा, विश्व में सर्व आत्माओं को ये दिव्य सौगात बांटने के लिए सन्देश-वाहक बनाकर भेजा, जाने के लिए प्रोत्साहित किया। परमात्मा के द्वारा बोया हुआ पवित्रता का ये बीज ही सारे विश्व में फलता और फूलता है अर्थात् सारे विश्व को सुख-शान्तिमय बनाता है

''भारत का भी हम श्याम-सुन्दर नाम रख सकते हैं। भारत को ही श्याम, भारत को ही गोल्डन एज, सुन्दर कहते हैं। भारत ही काम चिता पर बैठ काला बनता है और भारत ही ज्ञान चिता पर बैठ गोरा बनता है। मुझे भारत से ही माथा मारना पड़ता है। भारतवासी फिर और-और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं।''

सा.बाबा 7.11.03 रिवा.

''भगवान को आना पड़ता है दुखियों का दुख दूर करने। फिर बाप से पूछा जाता है - ड्रामा में क्या कोई भूल है? बाप कहते हैं - हाँ, बड़ी भूल है, जो तुम मुझे भूल जाते हो। कौन भुलाते हैं? माया रावण। बाप बैठ समझाते हैं - बच्चे, यह खेल बना हुआ है। स्वर्ग और नरक होता तो भारत में ही है। ... वास्तव में भारत का प्राचीन धर्म तो है ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म।''

सा.बाबा 18.12.03 रिवा.

''गॉड फादर ही लिबरेट कर गाइड करते हैं। उनका ही गायन है - लिबरेटर-गाइड, वह भारत में ही आते हैं। तो भारत सभी से ऊंच देश ठहरा। भारत की बहुत महिमा करनी है। ... तुम

बचचों को ज्ञान मिला है तो विचार-सागर मंथन चलता है। और कोई का तो चलता ही नहीं है। ... बाप ही गुप्त ज्ञान देते हैं, जिससे सभी की सद्गति हो जाती है।''

सा.बाबा 24.4.68 रात्रि क्लास

''यह भी ड्रामा बना हुआ है। जब तुम कौड़ी जैसे बन जाते हो तब तुमको हीरे जैसा बनाता हूँ। मैंने अनगिनत बार भारत को स्वर्ग बनाया है। ... बाबा सन्यासियों की भी महिमा करते हैं। वे भी अच्छे हैं, जो पवित्र रहते हैं। यह भी वे भारत को थमाते हैं।''

सा.बाबा 29.12.03 रिवा.

''भारतवासी ही रावण को जलाते हैं, तो सिद्ध होता है कि रावण राज्य भारत में है, रामराज्य भी भारत में ही होता है। ... यह रुद्र यज्ञ भी भारत में ही रचते हैं। यह राज़ भी बाप ही समझाते हैं। वास्तव में यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। बच्चे पवित्र बन भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... तुम भारत की सर्विस करते हो, इसलिए तुम ही स्वर्ग के मालिक बनते हो। भारत की सर्विस करने से सबकी सर्विस हो जाती है।''

सा.बाबा 31.12.03 रिवा.

''शिवबाबा को कहा जाता है - विदेही। उनको अपनी देह नहीं है। और सबको अपनी देह है। तो अपने को भी ऐसा विदेही समझना कितना मीठा लगता है। हम क्या थे, क्या बन गये हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है, यह भी तुम अभी समझते हो। ... पहले भारत कितना ऊंच था। भारत की ही महिमा करनी चाहिए। ... समझाना है कि तुम भारतवासी आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे। फिर हिस्ट्री रिपीट होगी।''

सा.बाबा 8.3.04 रिवा.

भारत और योग

विश्व-शान्ति और भारत

योग ही आत्मा को पावन बनाने और सुख-शान्तिमय जीवन का एकमात्र साधन है परन्तु यथार्थ योग क्या है, वह परमात्मा ही आकर बताते हैं, जिससे खास भारत और आम सारी दुनिया सुख-शान्तिमय बनती है। इसलिए भारत के प्राचीन राजयोग की बहुत महिमा है। भारत के प्राचीन राजयोग की विदेशों में भी बहुत महिमा है और बहुत से लोग इसको सीखना चाहते हैं। योग भी एक तपस्या है, जो आत्मा की पवित्रता के लिए किया जाता है। अज्ञानतावश मनुष्य जो तपस्या करते हैं, वह हठयोग के नाम से जानी जाती है और जो सत्य ज्ञान को समझकर तपस्या करते हैं, वह राजयोग के नाम से जानी जाती है। परमात्मा को जानकर उनकी मधुर स्मृति में रहना ही

राजयोग है। परमात्मा ने ही भारत में आकर ये राजयोग कल्पान्त में संगमयुग पर सिखाया था, जिससे आत्मायें पावन बनी थीं और दुनिया स्वर्ग बनी थी।

सारी दुनिया की आत्मायें विश्व में शान्ति चाहते हैं परन्तु विश्व में शान्ति कब थी, कैसी थी और किसने स्थापन की तथा विश्व-शान्ति का भारत से क्या सम्बन्ध है, इस सत्य का ज्ञान कोई नहीं जानते, जो परमात्मा ही बताते हैं। मनुष्य तो इसी दुनिया में शान्ति की परिकल्पना करते हैं परन्तु परमात्मा ने बताया है कि अभी मैं तुमको जो राजयोग सिखलाता हूँ, उससे खास भारत और आम सारी दुनिया में शान्ति हो जायेगी। उस सुख-शान्ति की दुनिया में केवल भारत ही हो अर्थात् सारा विश्व ही भारत होगा। और सभी आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम में चली जायेंगी। परमधाम है शान्ति का धाम परन्तु उसको दुनिया नहीं कहा जाता है। दुनिया तो इस लोक को ही कहा जाता है, जहाँ सुख-दुख, शान्ति-अशान्ति का पार्ट चलता है। परमात्मा ही विश्व में शानति स्थापन करने वाला है और शान्ति का आधार पवित्रता है।

''भारत सुख-शान्ति-पवित्रता का सागर था, इसको कहा जाता है विश्व में शान्ति। ... ज्ञान से होती है सद्गति। पतितों को पावन बनाने हैं ज्ञान और योग से। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है क्योंकि भारत आइरन एज से गोल्डन एज बना था।''

सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

''भारत का प्राचीन राजयोग भी गाया हुआ है। खास विलायत वालों को जास्ती उत्सुकता रहती है राजयोग सीखने की। भारतवासी तो तमोप्रधान बुद्धि हैं। ... भारत का प्राचीन राजयोग नामीग्रामी है, जिससे ही भारत स्वर्ग बना था। ... हेविन या पैराडाइज है - सबसे वण्डर आफ वर्ल्ड।''

सा.बाबा 27.9.04 रिवा.

''इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह भारत का प्राचीन राजयोग है, जो बाप ही हर 5 हजार वर्ष के बाद आकर सिखलाते हैं। बेहद का बाप ही भारत में में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को यह योग सिखलाते हैं। इस याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।''

सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''भारत खास और दुनिया आम ... यह भारत शिवालय था, शिवबाबा ने बनाया था। अब रावण ने वेश्यालय बनाया है। ... योगबल से उस पर विजय पानी है, जो योग बाबा ही आकर सिखलाते हैं।''

सा.बाबा 17.12.06 रिवा.

''योग से तुम पवित्र बनते हो, ज्ञान से धन मिलता है। पढ़ाई को सोर्स आफ इन्कम कहा जाता है। योगबल से तुम खास भारत और आम सारे विश्व को पवित्र बनाते हो। ... कल्प-कल्प बाप भारत

में आकर भारत को बहुत साहूकार बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.2.05 रिवा.

''बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप को जो है, जैसा है, उसको उसी रूप में जानकर याद करते हो। ... बाबा कहते हैं - देह को देखते हुए तुम मुझे याद करो। आत्मा को अब तीसरा नेत्र मिला है। ... सदैव ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।''

सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''फारेनर्स को कहते हैं - भारत का प्राचीन राजयोग भारत में चलकर सीखो। तुम ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि भारत में चलकर सीखो। तुम तो फॉरेन में जायेंगे तो वहाँ ही बैठ समझायेंगे - यह राजयोग सीखो तो स्वर्ग में तुम्हारा जन्म होगा। ... यहाँ ही देह के सब सम्बन्ध भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, वही लिबरेटर-गाइड है।''

सा.बाबा 19.1.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - मै आया हूँ तुम्हारी सेवा में, तुम सब बच्चे भी भारत की अलौकिक सेवा में हो। ... तुम बच्चों को भारत के लिए कितना लव है। सच्ची सेवा तो तुम करते हो, खास भारत की और आम सारी दुनिया की। तुम भारत को फिर से रामराज्य बनाते हो, जो बापू जी चाहते थे।''

सा.बाबा 15.1.05 रिवा.

''बाप आते ही हैं नई राजधानी स्थापन करने, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है। राजयोग का बहुत महत्व है। भारत का प्राचीन राजयोग सीखना चाहते हैं। ... समझते हैं - योग से ही पैराडाइज स्थापन हुआ था।''

सा.बाबा 14.1.05 रिवा.

''कल्याणकारी बाप ने समझाया है - अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो। ... याद से पाप कटते हैं। ... मुख्य है बाप की याद। भारत का प्राचीन राजयोग बहुत मशहूर है। ... शिव को न जानने के कारण भारत का बेड़ा डूबा हुआ है। अब शिवबाबा द्वारा ही भारत का बेड़ा पार होता है।''

सा.बाबा 9.8.04 रिवा.

''यह रावण भारत का नम्बरवन दुश्मन है। हर एक में 5 विकार हैं। ... पतित-पावन तो मैं ही हूँ, मेरे साथ योग लगाओ तो पावन बन जायेंगे। भारत का प्राचीन राजयोग यह है। ... बाप ने भारत को पैराडाइज कब और कैसे बनाया था, यह तुम नहीं जानते हो, आओ तो हम आपको समझायें।''

सा.बाबा 7.7.04 रिवा.

''आधा कल्प दिन और आधा कल्प रात - यह भारत की ही बात है। ... और सब धर्म वाले यह मन्त्र ले जाते हैं कि बाप को याद करना है। जो याद करेंगे, वे अपने धर्म में ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 1.7.04 रिवा.

''मामेकम् याद करो तो प्योर हो जायेंगे। ... तुम गोरे से काले फिर काले से गोरे बनते हो, यह खेल है। समझाते भी उनको हैं, जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। उनके पाँव भारत में ही पड़ते हैं। ऐसे भी नहीं कि भारत में सब 84 जन्म लेने वाले हैं।''

सा.बाबा 15.6.04 रिवा.

''नई दुनिया गोल्डन एज्ड भारत था। कितना नाम मशहूर था। भारत का प्राचीन योग कब और किसने सिखाया ? यह किसको पता नहीं है। ... कल्प-कल्प जो होता आया है, वही फिर रिपीट होगा, उसमें फर्क नहीं पड़ सकता है।''

सा.बाबा 5.6.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैंने इनको ज्ञान दिया, योग सिखाया फिर यह नर से नारायण बना। यह ज्ञान भारत के लिए ही है, और किसके लिए शोभता नहीं। तुमको फिर से नर से नारायण बनना है, और कोई नहीं बनते। यह है नर से नारायण बनने की कथा। ... पहले तो प्रिन्स बनेंगे ना। बच्चा तो फूल होता है, वह तो फिर भी युगल बन जाते हैं। महिमा ब्रह्मचारी की होती है। ... गाया भी जाता है - बेगर टू प्रिन्स।''

सा.बाबा 2.6.04 रिवा.

''स्वर्ग के साथ नरक का नाम भी सुना है। ... स्वर्ग किसको कहा जाता है, उसकी आयु कितनी है, यह सब बाप ने तुमको समझाया है। ... भारत की महिमा को तुम बच्चों के सिवाए और कोई जानते ही नहीं। वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड है ना, उसका नाम है स्वर्ग। ... भारत का प्राचीन योग कहते हैं, जिससे भारत को विश्व की बादशाही मिलती है।''

सा.बाबा 24.5.04 रिवा.

''अब तुम समझते हो - भगवान फिर से गीता का ज्ञान सुना रहे हैं और भारत का प्राचीन योग भी सिखा रहे हैं। बाप ने कहा है - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते हो।''

सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

''भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है। चाहते भी हैं भारत का प्राचीन योग सीखें, जिससे पैराडाइज स्थापन हुआ था। कहते भी हैं - क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज था। ... ऊंच से

ऊंच है बृहस्पति की दशा। ... बृहस्पति की दशा से सालवेन्ट बरते हैं। भारत कितना सालवेन्ट था। सारे विश्व में एक ही भारत था। सतयुग में रामराज्य, पवित्र राज्य होता है, जिसकी महिमा होती है।''

सा.बाबा 1.4.04 रिवा.

''एक सेकेण्ड में अपना पूर्वज और पूज्य स्वरूप इमर्ज कर सकते हो? ... तो एक सेकेण्ड में सभी और संकल्प समाप्त कर अपने पूर्वज और पूज्य स्वरूप में स्थित हो जाओ।''

अ.बापदादा 17.02.04

''यह भारत के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं। भारतवासियों को ही याद की यात्रा सिखलाकर पावन बनाते हैं और नॉलेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह भी बच्चे जानते हैं।''

सा.बाबा 8.4.04 रिवा.

''कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, यह बात सबको अच्छी रीति समझाना पड़े। ... भ्रष्टाचारी भारत को कोई मनुष्य श्रेष्ठाचारी बना नहीं सकता। ... बाप कहते हैं - मैं सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे से योग लगाने से ही तुम्हारे सर्व विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 3.1.07 रिवा.

भारत के प्रति अन्य देशों, धर्मों, सभ्यताओं का दृष्टिकोण

दूसरे धर्म और सभ्यताओं के इतिहास और धर्म-शास्त्रों में भी वर्णन आता है कि आदि में भारत ही था, भारत ही स्वर्ग था। जैसे बाइबिल या क्रिश्चियन धर्म के शास्त्रों मे वर्णन है कि क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत पैराडाइज था। दूसरे धर्म के अनेक विद्वान, खोज करने वालों ने भी भारत की यात्रा करके यहाँ की भौतिक समृद्धि, आध्यात्मिक समृद्धि, प्राकृतिक समृद्धि, नैतिक समृद्धि, यहाँ की सभ्यता आदि का वर्णन अपने ग्रन्थों आदि में किया है।

जर्मनी के संस्कृति एक प्रखर विद्वान मेक्समूलर ने अपनी जीवन कहानी में लिखा है और अपनी इच्छा प्रगट की है कि यदि पुनर्जन्म होता है तो मेरा पुनर्जन्म भारत में हो। भले क्रिश्चियन धर्म के अनुसार उनको पुनर्जन्म के विषय में पूरा निश्चय नहीं था, फिर भी उनकी आन्तरिक इच्छा भारत की महानता प्रगट करती है।

वर्तमान कलियुग के अन्त या मध्य काल में योरोप के कोलम्बस, वास-को-डिगामा आदि ने भी भारत की भौतिक समृद्धि के विषय में सुनकर उससे प्रभावित होकर ही भारत का समुद्री मार्ग खोजने का पुरुषार्थ किया, जिसमें कोलम्बस भटक कर अमेरिका पहुँच गया और बाद

में वास्को-डिगामा ने भारत का समुद्री मार्ग खोजा।

''शक्ति देना आप विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना। दिन प्रतिदिन यह अनुभव करेंगे कि कहाँ से शान्ति की किरणें आ रही हैं। फिर ढूँढेंगे, सबकी नज़र भारत भूमि पर जायेगी।''

अ.बापदादा 18.1.91 दादियों से

''क्रिश्चियन्स भी कहते हैं - क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, जहाँ लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे। ... अब तो भारत नर्क है, वे कहाँ गये।''

सा.बाबा 10.1.07 रिवा.

बी.के. एवं नॉन बी.के.भारतवासी विदेशियों का भारत के प्रति दृष्टिकोण

जो ब्रह्मा कुमार-कुमारी भाई-बहनें हैं, उनको तो भारत भूमि से, भारत की सभ्यता से, भारत के देवी-देवताओं से प्यार तो है ही परन्तु जो ब्रह्मा कुमार-कुमारी नहीं हैं, उनको भी भारत भूमि से प्यार है और वे भारत की सभ्यता, भारत की आध्यात्मिकता, भारत के प्राचीन राजयोग आदि को जानने, सीखने आदि के लिए आते रहते हैं। भले ही भारतवासी भी विदेशों में जाते हैं परन्तु वे साइन्स, डाक्टरी आदि के ज्ञान के दृष्टिकोण से जाते हैं क्योंकि भारत में ये ज्ञान प्राय: लोप हो गया है और दूसरे देश-धर्म नये होने के कारण उनमें वह शक्ति अधिक है तथा उनका ड्रामा में ये अविष्कार करने का पार्ट भी है।

''सभी की आत्मा एक ही कल्चर की है। दूसरी बात - बापदादा ने देखा - बाप के प्यार के कारण प्यार में मैजारिटी पास हैं। भारत को तो भाग्य है ही लेकिन डबल विदेशी दूर रहते प्यार में सब पास हैं। देखो भारत को तो भाग्य मिला है, सबसे बड़ा भाग्य मिला है कि बाप भारत में ही आये हैं। बाप को अमेरिका पसन्द नहीं आई, लेकिन भारत पसन्द आया है।''

अ.बापदादा 15.10.04

''भारत महान है तो भारतवासी भी महान हैं। ... डबल विदेशियों को भी मधुवन व भारत से प्यार क्यों है? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे। यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलासॉफी से भी प्यार नहीं होता, भारत की कल्चर से भी प्यार नहीं होता। प्यार है, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो।''

अ.बापदादा 25.10.02

''मधुवन में सम्मुख आना, अपनी झोली भरना, इतने बड़े परिवार से मिलना ... देखकर खुशी होती है। ... सभी को मुरली से प्यार है और मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है लेकिन मुरली कभी-कभी सुन लेते हैं तो बापदादा कहते हैं - बापदादा

उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। प्यार करना अलग है और प्यार निभाना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है, वह है प्यार निभाने वाले। ... गायन है - मधुवन में मुरली बाजे। यह इस मधुवन की धरनी का ही महत्व है।''

अ.बापदादा 18.1.07

''भारत महान है तो भारतवासी भी महान हैं। ... डबल विदेशियों को भी मधुवन व भारत से प्यार क्यों है? क्योंकि असुल में आप सब भारतवासी थे। यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की फिलासॉफी से भी प्यार नहीं होता, भारत की कल्चर से भी प्यार नहीं होता। प्यार है, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो। ... आपको सेवा के लिए वहाँ जन्म मिला है। खुशी होती है ना कि हम भारत के हैं। थे, हैं और होंगे।''

अ.बापदादा 25.10.02

भारत और विभिन्न धर्म एवं कल्प-वृक्ष

विभिन्न धर्मों तथा सभ्यताओं का भारत पर राज्य - क्यों और कैसे?

सभी धर्मों और सभ्यताओं का उद्गम प्राचीन भारत से ही हुआ है और भारत पर प्राय: सभी मुख्य धर्मों और सभ्याताओं ने राज्य किया है। ऐसा आक्र किसी देश और सभ्यता के सम्बन्ध में नहीं हुआ है। इसके कारण पर विचार करें तो समझ में आता है कि भारत सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की अवतरण भूमि है और सर्व धर्मों के आदि पिता पितामह ब्रह्मा बाबा की जन्म और कर्म भूमि है, इसलिए सभी धर्म वालों को इस भूमि से प्यार भी है तो अधिकार भी है। जैसे पिता, पितामह की सम्पत्ति पर सभी बच्चों का अधिकार होता है ऐसे ही जाने-अन्जाने सभी धर्म वालों का भारत के प्रति प्यार भी रहा है तो अधिकार भी रहा है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्राय: सभी मुख्य धर्म वालों ने थोड़े या अधिक समय के लिए भारत पर राज्य किया ही है और यहाँ से विपुल धन-सम्पदा, ज्ञान-सम्पदा आदि अपने देश में ले गये। जिसके लिए बाबा ने कहा है कि तुम उसकी चिन्ता मत करो, वह धन-सम्पदा, वे सभी चीजें फिर भारत में अवश्य ही आयेंगी, उनकी रिटर्न जर्नी अवश्य होगी क्योंकि अब सृष्टि का नया चक्र प्रारम्भ हो रहा है। इस सत्य को ध्यान में रखकर हमको किसी भी धर्म और सभ्यता की आत्माओं के प्रति ईष्या, घृणा भाव नहीं होना चाहिए। जब हमारे दिल में उनके प्रति घृणा-भाव नहीं होगा तब ही हम उनकी सेवा कर सकेंगे, जो हमको परमात्मा ने काम दिया है और एक बाप की सन्तान होने के नाते सर्व आत्माओं को रास्ता दिखाना हमारा कर्तव्य भी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में प्राय: सभी धर्मों और सभ्यताओं ने समयानुसार राज किया क्योंकि यह सभी धर्मों के परमपिता परमात्मा की जन्म-

भूमि है, इसलिए सभी का आकर्षण भारत के प्रति रहा।

भारत में ही सबसे अधिक धर्म-पिताओं का अवतरण और धर्मों की स्थापना हुई, आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना परमात्मा और प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा, बौध धर्म के संस्थापक बुद्ध की प्रवेशिता और जन्म तथा बौध धर्म की स्थापना, शंकराचार्य की प्रवेशता और जन्म तथा सन्यास धर्म की स्थापना, गुरु नानक की प्रवेशता और जन्म तथा सिक्ख धर्म की स्थापना आदि तो प्रत्यक्ष हैं। इब्राहम द्वारा इस्लाम धर्म की स्थापना, क्राइस्ट द्वारा क्रिश्चियन धर्म की स्थापना भी भारत में ही हुई है क्योंकि प्राचीन भारत की सीमा पूरे एशिया खण्ड में फैली हुई थी, जो बाद में विभाजित होकर अन्य देश बन गये।

भले ही चक्र के आदि में और सतयुग-त्रेता में भारत के राजाओं ने अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार और नये राज्यों की स्थापना की परन्तु उन्होंने विस्तार हिंसा से नहीं किया। उनके दिल में विश्व-कल्याण की भावना से किया जबकि मुसलमानों ने तलवार के जोर पर और दुष्प्रचार से भारत की मूल सभ्यता को दूषित करके राज्य किया। अंग्रेजों ने प्रलोभन से, कूटनीति से, भारत के साहित्य में परिवर्तन करके भारत की सभ्यता को नष्ट करके भारत में अपने धर्म का प्रचार और प्रसार किया तथा राज्य किया। भारत की प्रचुर धन-सम्पदा अपने देशों में ले गये। भारत पर अनेक प्रकार जुल्म ढाये।

''क्रिश्चियन लोग भी कहते हैं पहले-पहले हेविन था। भारत अविनाशी खण्ड है। सिर्फ उन्होंको पता नहीं कि हमको लिबरेट करने वाला बाप भारत में आता है।''

सा.बाबा 12.1.04 रिवा.

''बुद्धि कहती है सतयुग में एक ही भारत खण्ड होगा, प्रकृति भी नई होगी, आत्मा भी सतोप्रधान होगी। ... भारत है अविनाशी खण्ड और अविनाशी तीर्थ। सर्वात्माओं के बाप का बर्थ प्लेस है ना।''

सा.बाबा 9.1.04 रिवा.

''एकान्त में बैठकर विचार सागर मन्थन करो। ... हम भारतवासी जो देवी-देवता धर्म वाले थे, वे कैसे सतोप्रधान बनें फिर सतो, रजो, तमो में आये। यह सब बातें धारण करनी होती हैं तब ही विचार-सागर मन्थन होता है। धारणा ही नहीं होगी तो विचार सागर मन्थन हो न सके। ... बच्चों को रोज़ पढ़ना है और उस पर विचार सागर मन्थन करना है।''

सा.बाबा 19.12.06 रिवा.

''यह संगम है ब्रह्मापुरी। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर चाहिए। ब्राह्मण हैं चोटी। यह विराट रूप का चित्र भी खास भारतवासियों के लिए है। भारत में फिर बहुत धर्म वाले रहते हैं, इसलिए इनको

वैराइटी धर्मों का झाड़ भी कहा जाता है।''

सा.बाबा 20.12.06 रिवा.

''राइज़ और फॉल भारत का ही होता है। भारत ही हेविन और हेविन से हेल बनता है। एकदम ऊंच से नीच बनता है। ... भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। तुम लिखते भी हो कि अभी डीटीज्म स्थापन हो रहा है।''

सा.बाबा 18.12.06 रिवा.

''धर्म का नाम भी बदली कर दिया है और भारत का नाम भी बदली कर दिया है। असली नाम भारत ही है। ... यदा यदाहि ... भारत कहते। ... भारत तमोप्रधान है, भारत ही सतोप्रधान बनता है। और धर्म वालों ने न बहुत सुख देखा है और न बहुत दुख भी देखेंगे।'' (महाभारत का भी गायन है, भारत के प्राचीन राजयोग का भी गायन है)

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

''भारत में 5 हजार वर्ष पहले देवी-देवताओं का पूज्य पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। .. यह है देवी-देवताओं का प्राचीन धर्म। पहले आने वाले धर्मों के विषय में सन्यास धर्म वाले क्या जाने। जो पास्ट हो गये, उनके विषय में सन्यासी समझ न सकें।''

सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

''खास भारत में और आम सारी दुनिया में पुकारते हैं, हे पतित-पावन आओ। भारत ही पावन था, बाकी सब शान्तिधाम में थे। ... प्राचीन भारत खण्ड ही है, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य था, अब नहीं है। उन्होंके यहाँ मन्दिर हैं, चित्र हैं।''

सा.बाबा 24.5.06 रिवा.

''भारतवासी अपने धर्म को ड्रामा प्लेन अनुसार भूल गये हैं। ... यह भी खेल है। वह है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक तुम अभी ही जानते हो। ... ये सूर्य-चान्द आदि रोशनी करने वाले हैं।''

सा.बाबा 30.3.06 रिवा.

''इस संगमयुग में हर दिन ही मनाने का है, हर दिन मौज में रहने का है। ... इसलिए यादगार रूप में भी भारत में अनेक उत्सव मनाते रहते हैं। यह प्रसिद्ध है कि भारत में साल के सभी दिन मनाने के हैं। और कहाँ इतने उत्सव नहीं होते, जितने भारत में होते हैं।''

अ.बापदादा 31.12.92

''असल में भारतवासी फिर भी सभी धर्मों की आत्माओं की तुलना में सतोगुणी हैं लेकिन आर्टिफिशल एक्ट और श्रृंगार कर दिन प्रतिदिन अपने को असुर बनाते जा रहे हैं।''

अ.बापदादा 16.6.72

''बाबा कल्प-कल्प आकर हमको यह नॉलेज देते हैं। बरोबर भारत स्वर्ग था, वहाँ कितने थोड़े मनुष्य होंगे। ... वहाँ होता ही है एक धर्म, बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं परमधाम। ... बाप भारत में ही आकर सबको ज्ञान देते हैं। ... भारत ही सच्चा तीर्थ है, जहाँ बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं।''

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

''बाप आकर सतोप्रधान दुनिया बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम भारतवासी ही फिर नई दुनिया में आकर राज्य करेंगे, वहाँ और कोई धर्म नहीं होगा। ... तुम भारतवासियों को ही बाप की पहचान मिलती है। अभी तुम बाप की पहचान सबको देते जाते हो।''

सा.बाबा 1.4.05 रिवा.

''वैरायटी धर्म हैं ना। दूसरे कोई धर्म का ऐसा विराट रूप बना हुआ नहीं है। ... पूज्य से पुजारी भी तुम ही बनते हो। ... भारत में 84 जन्म इन लक्ष्मी-नारायण के ही गिनेंगे।''

सा.बाबा 26.12.06 रिवा.

''भारतवासियों को पता नहीं है कि हमारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म कब रचा गया और फिर कहाँ गया ? ... भारत में ही देवी-देवताओं के चित्र हैं। ... बोलो - तुम अपने धर्म को भूल बाहर भटकते रहते हो। ... और सब धर्म हैं, यह आदि सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं। जब ये धर्म था, तब और सब धर्म नहीं थे। ... भारतवासियों के लिए ही यह ज्ञान है।''

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''बाप तुमको नई दुनिया के लायक बना रहे हैं। तुम भारतवासी ही लायक बनते हो, और कोई नही। जो और-और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, वे फिर इसमें कन्वर्ट हो जायेंगे। यह नॉलेज भी तुम्हारी बुद्धि में है, जो औरों को भी समझानी है।''

सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''ऐसे भी नहीं कि सारी दुनिया स्वर्ग में जायेगी। जो कल्प पहले स्वर्ग में आये थे, वे ही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग-त्रेता में देवता बनेंगे। वे ही फिर द्वापर से अपने को हिन्दू कहलायेंगे। यूँ तो हिन्दू धर्म में अब तक भी जो आत्मायें ऊपर से उतरती रहती हैं, वे भी अपने को हिन्दू कहलाती हैं लेकिन वे देवता नहीं बनेंगी और न ही स्वर्ग में आयेंगी। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने समय पर ही उतरेंगी। देवता तुम ही बनते हो, जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है। यह भी ड्रामा में बड़ी युक्ति है।''

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''भारतवासियों का असुल जो धर्म था, वह अभी नहीं है। अधर्म हो गया है। बाप कहते हैं - मैं आकर धर्म की स्थापना, अधर्म का विनाश करता हूँ। अधर्मियों को धर्म में ले आता हूँ, बाकी जो बचते हैं, वे सब विनाश हो जायेंगे। ... यह भी बना-बनाया खेल है।''

सा.बाबा 24.8.04 रिवा.

''तुम भारतवासी बहुत ही खुशी में थे, वहाँ और कोई था ही नहीं। किश्चियन भी कहते हैं पैराडाइज था, देवताओं के चित्र भी हैं। ... सबसे पुराना भी श्रीकृष्ण और नये से नया भी श्रीकृष्ण था।''

सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

''विकारों में गिरते-गिरते, परमात्मा को गालियां देते-देते भारत का यह हाल हुआ है। क्रिश्चियन लोग भी जानते हैं कि क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, सभी सतोप्रधान थे। भारतवासी तो लाखों वर्ष कह देते हैं क्योंकि तमोप्रधान बुद्धि बन पड़े हैं। वे फिर न इतना ऊंच बने और न इतना नीच बने हैं।''

सा.बाबा 9.7.04 रिवा.

''वही देवतायें जब वाममार्ग में जाते हैं तो कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम उनकी (देवताओं) वंशावली के हैं।''

सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

''भारत को भी भुलाये हिन्दुस्तान के रहवासी हिन्दू कह देते हैं। मैं भारत में ही आता हूँ, फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना करने।। भारत में देवी-देवताओं का राज्य था, जो अब प्राय: लोप हो गया है।''

सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

''हिन्दू धर्म अज्ञान से नाम रख दिया है। हिन्दुस्तान में रहने वाले अपने को हिन्दू कहते हैं। वास्तव में इसका नाम भारत है, न कि हिन्दुस्तान। भारत खण्ड कहा जाता है न कि हिन्दुस्तान खण्ड। नाम है ही भारत। ... यह नॉलेज भारतवासियों के लिए ही है न कि और धर्म वालों के लिए। ... और खण्ड बाद में आते गये हैं। वहाँ तो भारत खण्ड के सिवाए बाकी कोई खण्ड नहीं रहेगा।''

सा.बाबा 21.6.04 रिवा.

''हमारे धर्म के और-और धर्मों में जाकर पड़े हैं, वे सब लौटेंगे। फिर भी अपने भारत में ही आयेंगे। भारतवासी ही थे ना। जो हमारी डाल के हैं, वे सब आ जायेंगे। ... भारत है फर्स्टक्लास भूमि। भारत में ही नई दुनिया थी। इस समय इसको वाइसलेस वर्ल्ड नहीं कह सकते। यह है विशश वर्ल्ड।''

सा.बाबा 25.3.04 रिवा.

''जैसे बाप समझाते हैं - श्याम-सुन्दर। यह देवी-देवताओं के लिए है। जब वे सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं तो वे ही सुन्दर से श्याम बनते हैं। ऐसे श्याम-सुन्दर और कोई धर्म में नहीं बनते हैं। ... इण्डिया वालों के फीचर्स बदली होते जाते हैं। उन्होंके लिए ही श्याम-सुन्दर का गायन है, और कोई धर्म वालों के लिए नहीं।''

सा.बाबा 10.3.04 रिवा.

''इस वैराइटी धर्मों के झाड़ को भी जानना पड़े। ... भारत प्राचीन धर्म वाला है तो जरूर प्राचीन धर्म परमपिता परमात्मा ने ही रचा होगा। भारत में ही शिव जयन्ति भी मनाते हैं। मन्दिर भी भारत में ढेरों के ढेर हैं।''

सा.बाबा 25.1.07 रिवा.

भारत और विभिन्न सभ्यतायें

विभिन्न सभ्यताओं का भारत की समृद्धि के विषय में विचार

विश्व की सभी सभ्यताओं के इतिहास को देखें तो देखेंगे कि प्राय: सभी सभ्यतायें भारतीय सभ्यता की प्रष्ठभूमि में ही जन्मी और फली-फूली हैं और बाद में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है क्योंकि आदि सभ्यता भारत की है। इतिहास में भारत की सभ्यता और धर्म कब और किसने और कहाँ स्थापन किया, इसका वर्णन नहीं है जबकि अन्य सभी सभ्यताओं के विषय में इन बातों का वर्णन है, उनके उद्गम और विकास का उनका अपना इतिहास है।

वर्तमान इतिहास जो भारत में भी पढ़ाया जाता है, उस में जो ये वर्णन है कि आर्य भारत में मध्येशिया से आये, यह अति भ्रामक है और बड़ी भूल है। ये सब प्रचार अन्य धर्म और सभ्यता वालों ने भारत की दैवी सभ्यता के स्वर्णिम इतिहास के महत्व को गिराने और भारतियों के श्रेष्ठ सम्मान को गिराने के लिए ईर्ष्यावश या अज्ञानतावश किया है और भारतवासी भी अपनी सभ्यता के गौरवमय इतिहास को न जानने के कारण, उसको ही मानते आये हैं और आज भी मान रहे हैं। ये भी ड्रामा की एक विडम्बना ही है कि भारत राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र तो हो गया है परन्तु मानसिक दृष्टि से आज भी परतन्त्र ही है। भारत के राजनेताओं में सत्ता की लोलुपता के कारण वास्तविकता पर विचार करने के लिए भी समय नहीं है। परमात्मा पिता जगा रहे हैं परन्तु किसको जागने की इच्छा ही नहीं है परन्तु समय सबको अवश्य जगायेगा ही।

''इन सब बातों का कारण, उन सबके पूर्वज आप हो। जैसे लौकिक रीति में भी अपने पूर्वजों की भूमि अर्थात् स्थान से, चित्रों से, वस्तुओं से बहुत स्नेह होता है। ऐसे ही जाने-अन्जाने भारत की पुरानी वस्तुओं और पुराने चित्रों का मूल्य और धर्म वालों को अब तक भी है।''

अ.बापदादा 18.1.04 रिवा.

''भारत जब पतित बनता है, रावण का राज्य शुरू होता है तो धरनी हिलने लगती है। सोने-चांदी के महल आदि सब नीचे चले जाते हैं। देवी-देवताओं के महलों आदि को कोई लूटता थोड़ेही है।''

सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

भारत की दैवी सभ्यता एवं विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का सम्बन्ध, कल्प-वृक्ष, उद्गम एवं विस्तार

विश्व में सभ्यता के मूल और दैवी सभ्यता का उद्गम-स्थान भारत ही है। जैसे नदी किसी पर्तत माला के शिखर से चलकर विभिन्न धाराओं को अपने में समाती हुई समतल भूमि में आकर उसको हरा-भरा करती है, ऐसे ही कलियुग के अन्त में निराकार परमपिता परमात्मा के द्वारा दैवी सभ्यता की कलम लगाई गई और वह यहाँ से विस्तार को पाते हुए सारे विश्व में फैल गई। जिस सभ्यता को सारा विश्व अभी याद करता है। हर धर्म में स्वर्ग को याद किया जाता है भले ही वे स्वर्ग के विषय में यथार्थ रीति जानते नहीं हैं परन्तु उसको मानते अवश्य हैं। भारत में उन देवी-देवताओं के मन्दिर हैं। प्राय: सभी सभ्यताओं का उद्गम भारत की दैवी सभ्यता से ही हुआ है, इसलिए सभी स्थानों पर पहले देवी-देवताओं के यादगार मन्दिर आदि थे, जिनको बाद में विभिन्न सभ्यताओं के द्वारा नष्ट किया गया और अपने धर्म और सभ्यता के अनुसार मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघरों का निर्माण किया गया। इसके उदाहरण अरब देशों, मिस्त्र, यूनान आदि में भी देखने को मिलते हैं।

एक वृक्ष के समान पहले दैवी सभ्यता का उद्गम भारत में हुआ और बाद में शाखाओं-प्रशाखओं में रूप में उसका विस्तार सारे विश्व में हुआ। इसलिए सृष्टि को अनेक धर्मों का वृक्ष कहा जाता है, जिसका बीजरूप परमात्मा है और जड़ें ब्राह्मण धर्म है तथा उसका तना आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, जो बाद में हिन्दू नाम से जाना गया है।

भारत की दैवी सभ्यता की महानता पर विचार करें तो आज तक जैसे दैवी सभ्यता वाले देवी-देवताओं के मन्दिर बने हैं, उनकी पूजा होती है, ऐसे न तो किसी सभ्यता वालों के मन्दिर बने हैं और न ही उनकी पूजा होती है। इस सबका रहस्य भी ज्ञान सागर शिवबाबा ने बताया है कि देवी-देवताओं के ही शरीर और आत्मा दोनों पावन होते हैं, इसलिए उनके मन्दिर बनाकर पूजा होती है। बाद में आने वाली सभ्यताओं में पहले जो भी आत्मायें आती हैं, वे पावन तो होती है लेकिन शरीर विकार से ही पैदा होता है, इसलिए उनके शरीरों की पूजा नहीं हो सकती। इसलिए उन सभ्यताओं में मूर्ति पूजा को निषेध माना गया है।

भारत और जन्म एवं पुनर्जन्म

विश्व के इतिहास को देखें तो सभी धर्म भारत भूमि में ही स्थापन हुए हैं परन्तु जो धर्म मध्य-भारत में या भारत पूर्वी भागों में स्थापन हुए हैं, वे सभी आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं और वे कर्म सिद्धान्त एवं कर्म-फल के उपभोग के लिए आत्मा के पुनर्जन्म को भी मानते हैं। इनमें आदि सनातन देवी-देवता धर्म, बौद्ध धर्म, सन्यास धर्म, सिक्ख धर्म आदि मुख्य हैं।

जो धर्म वर्तमान भारत के पश्चिमी भाग या प्राचीन भारत के पश्चिमी सीमान्त प्रान्तों में स्थापन हुए हैं, वे प्राय: आत्मा के पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखते हैं। उनमें इस्लाम धर्म, क्रिश्चियन धर्म, मुस्लिम धर्म आदि मुख्य हैं। आज की दुनिया में तो कुछ कट्टर धार्मिक विश्वास वालों को छोड़कर प्राय: सभी मनुष्य पुनर्जन्म को मानने लगे हैं क्योंकि पुनर्जन्म के अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण मिले हैं। पश्चिमी देशों में थियोसॉफीकल सोसाइटी जैसी कई संस्थाओं ने भी पुनर्जन्म की यथार्थता को सिद्ध किया है। मेक्समूलर जैसे विदेश के अनेक विद्वान महापुरुष जो आत्मा पुनर्जन्म के अस्तित्व के विषय में यथार्थ ज्ञान न होते हुए भी अर्थात् जिनको पुनर्जन्म होने या न होने में संशय था, उन्होंने भी भारत की सभ्यता से प्रभावित होकर अपनी जीवन कहानी में भारत में पुनर्जन्म लेने की अपनी आन्तरिक इच्छा प्रगट की है।

वर्तमान समय संगमयुग पर अनेक ब्राह्मण कुल की आत्मायें जिन्होंने विदेशों में विदेशी धर्म और सभ्यताओं में जन्म लिया है, वे अपने को पूर्व जन्मों में भारतवासी ही मानते हैं। अभी सेवार्थ उन्होंने विदेशों में पुनर्जन्म लिया है परन्तु भविष्य में भारत में ही पुनर्जन्म लेंगे - ऐसा मानते हैं और ऐसा कहने में गर्व अनुभव करते हैं तथा वास्तविकता भी यही है।

भारत एक आध्यात्म प्रधान देश है और इसमें बड़े तो क्या बच्चे भी आत्मा के अस्तित्व और आत्मा के पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं और उनका भविष्य जन्म उनका अच्छा हो, उसके लिए यथा सम्भव प्रयत्नशील रहते हैं। भारतवासी तो मनुष्यात्माओं की बात ही छोड़ो अन्य योनि की आत्माओं के अस्तित्व, उनके जन्म और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं, उनके प्रति श्रृद्धा भावना रखते हैं। भले ही नियमानुसार भारत में भी तमोप्रधानता तो है ही, इसलिए अन्य प्राणियों के प्रति मनुष्य में निर्दयता बढ़ गई है।

भारत जैसी महत्वपूर्ण भूमि में जन्म लेना भी स्वाभिमान की बात है, तो किसी दूसरे देश में जन्म लेकर परमपिता परमात्मा को पहचानना, उनका बनकर अपने को दिल से भारतवासी समझना भी स्वाभिमान की बात है। भारत भूमि के महत्व जानकर यहाँ आकर रहना भी बड़े भाग्य की बात है। विदेशों में रह रही आत्माओं का वह संकल्प, भारत के प्रति श्रृद्धा-भावना और प्रेम ही भविष्य नई दुनिया में उनके भारत में जन्म लेने का कारण बनेंगा और वह संकल्प ही अन्त समय

उनको भारत में खींच कर ला सकता है। जिसके लिए बाबा ने भी कहा है कि जिनका बुद्धियोग क्लीयर होगा, उनको टच होगा और वे अन्त समय भारत में आ जायेंगे।

भारत में भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही योगबल से जन्म और पुनर्जन्म लेते हैं, इसलिए अभी परमात्मा के द्वारा इसका जो ज्ञान दिया जाता है तो वे ही उस पर विश्वास करते हैं और उस पर निश्चय करके अनुसार पुरुषार्थ करते हैं। दूसरे धर्म वालों ने योगबल से जन्म ही नहीं लिया है, इसलिए वे इस सत्य पर विश्वास भी नहीं करते हैं, उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं क्योंकि कोई देहाभिमानी मनुष्य योगबल से जन्म की कल्पना नहीं कर सकता। ये विशेषता और अनुभव भारत अर्थात् भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्मवेश की आत्माओं को ही है, उनका ही ये भाग्य है

''डबल विदेशी इन बातों को न जानते भी इतने समीप तीव्र पुरुषार्थी बने, तो कमाल की ना। ... भारतवासियों को क्या नशा है कि हम ही हर कल्प में अविनाशी भारतवासी बनेंगे। भारत अविनाशी खण्ड है। सभी को अपना-अपना नशा है। सभी को भारत में ही आना पड़ेगा ना और आप तो बैठे ही भारत में हो।''

अ.बापदादा 9.12.89 पार्टी

भारत और आत्मा का स्वमान एवं स्वाभिमान

परमपिता परमात्मा ने हमारे स्वाभिमान को जाग्रत करने के लिए अनेक बार मुरलियों में भारत के महत्व को बताकर हमको अपने स्वमान की याद दिलाई है। भारत देश महान है क्योंकि ये परमात्मा की अवतरण भूमि है। ये भारत सर्व धर्मों का तीर्थ स्थान है क्योकि सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की ये अवतरण भूमि है। इसीलिए जाने-अन्जाने विश्व की सर्व आत्माओं का भारत के प्रति विशेष आकर्षण रहा है और अभी भी है। विश्व के इतिहास में भारत की विशेष भूमिका है। भारत अविनाशी भूमि है। इस विशेष भूमि भारत में जो आत्मायें पैदा होती हैं वे भी महान है। भारत भूमि में जन्म लेना भी एक स्वाभिमान की बात है और वह भी संगमयुग पर। इस प्रकार हम विचार करें तो भारत में जन्म लेना और भारत में रहना भी एक स्वमान की बात है, महानता है, जीवन की बड़ी प्राप्ति है। बाबा ने ये भी बताया है कि ये एक कल्प की बात नहीं है लेकिन कल्प-कल्प की बात है। अपने इस भाग्य को देखकर उस नशे और खुशी में रहना और अपने कर्तव्य को समझकर इस सत्य को सबको बताना हर ब्राह्मण आत्मा का कर्तवय है।

''बच्चों ने शुरू में साक्षात्कार भी बहुत किया है। यह क्राइस्ट, इब्राहम, आदि भी भारत में आते हैं। बरोबर भारत सबको खींचता रहता है। असुल तो भारत ही बेहद के बाप का बर्थप्लेस है ना।

परन्तु वे लोग इतना कुछ जानते नहीं हैं कि यह भारत भगवान का बर्थप्लेस है। ... यह भारत बाप का बर्थप्लेस है, इतना महत्व तुम बच्चों में भी सभी नहीं जानते हैं। थोड़े हैं, जो समझते हैं और नशा चढ़ा हुआ है। कल्प-कल्प बाप भारत में ही आते हैं, यह सबको बताना है।''

सा.बाबा 28.11.03 रिवा.

ये सारा विश्व-नाटक भारत के उत्थान और पतन की कहानी है। भारत का उत्थान तो भारत और सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है और भारत का पतन तो सारा विश्व नरक बन जाता है। भारत ही स्वर्ग और भारत ही नरक बनता है।

''विश्व के मालिक तो भविष्य में बनेंगे लेकिन बाप के सर्व खज़ानों के मालिक अभी हो। विश्व राज्य-अधिकारी तो भविष्य में बनेंगे लेकिन स्वराज्य अधिकारी अभी हो। इसलिए बालक भी हो और मालिक भी हो।''

अ.बापदादा 9.1.96

''और किसी भी धर्म की आत्माओं की महिमा में ऐसी महिमा नहीं गाई जाती है। सिर्फ देवात्माओं की श्रेष्ठ कीर्ति अर्थात् श्रेष्ठ पवित्रता का ही कीर्तन होता है। और किसी भी धर्म में कीर्तन नहीं होता है।''

अ.बापदादा 11.12.91

''भारत महान आप महान आत्माओं के कारण ही गाया जाता है। किसी भी देश में इतनी महान आत्माओं का गायन या पूजन नहीं होता है। ... किसी भी देश में उस देश की इतनी महान आत्माओं के मन्दिर हों, यादगार हों, गायन-पूजन हो, वह कहाँ भी नहीं होगा।''

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 1

''जैसे ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर कहा जाता है, उनके साथी आप भी मास्टर ग्रेट ग्रेण्ड फादर हो। पूर्वज आत्माओं का कितना स्वमान है। उस नशे में रहते हो ? सारे विश्व की आत्माओं से चाहे किसी भी धर्म की आत्मायें हैं लेकिन सर्व आत्माओं के आप तना के रूप में आधारमूर्त पूर्वज हो। इसीलिए पूर्वज होने के कारण पूज्य भी हो।''

अ.बापदादा 02.02.04

''दुनिया की आत्मायें पुकार रही हैं - आओ, आओ लेकिन आप सभी परमात्म प्यार अनुभव कर रहे हो, परमात्म पालना में पल रहे हो। ऐसा अपना भाग्य अनुभव करते हो ? करते हो ? करते हो ?''

अ.बापदादा 17.10.03

भारत और स्थापना-विनाश की प्रक्रिया

नयी दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश की प्रक्रिया का भारत से गहरा सम्बन्ध है अथवा ऐसे कहें कि नयी दुनिया की स्थापना का मूलाधार और पुरानी दुनिया के विनाश का कारण भारत ही है अर्थात् ये प्रक्रिया का शुभारम्भ भारत से ही होता है। नई दुनिया की स्थापना के लिए परमात्मा भारत में ही अवतरित होते हैं और भारत में ही ज्ञान यज्ञ की स्थापना करते हैं, जिस यज्ञ से स्थापना और विनाश की दोनों प्रक्रियायें चलती हैं। जिसके लिए गायन है कि रुद्र-यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रगट हुई। वैसे भी बाबा ने कहा है - जब तुम आत्मायें पावन बन जाती हैं तो तुम्हारे लिए दुनिया भी नई चाहिए, इसलिए ही पुरानी दुनिया का विनाश होता है। इस प्रकार नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश की प्रक्रिया भी भारत से ही प्रारम्भ होती है।

भारत में महाभारत, रामायण भी इस प्रक्रिया की गाथा गाते हैं। स्थापना और विनाश का मूल परमात्मा भी भारत भूमि में ही अवतरित होते हैं और रुद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं, जिससे स्थापना भी होती है तो विनाश ज्वाला भी प्रगट होती है। स्थापना की आदि भारत से ही होती है और अन्त में विनाश के बाद भी भारत ही बचता है। जैसे स्थापना की अपनी विचित्र कहानी है, वैसे ही भारत में विनाश की भी अपनी विचित्र कहानी है। परमात्मा पिता ने ये भी बताया है कि और सारी दुनिया का तो अणु-युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं में सहज विनाश होगा परन्तु भारत में गृह-युद्ध होगा, जिससे भारत में खून की नदियां बहेंगी, जिसका रामायण और महाभारत में भी अपनी तरह से वर्णन है। इस प्रकार स्वर्ग भी भारत ही बनता है तो नर्क भी भारत ही बनता है अर्थात् अति सुख भी भारतवासी ही देखते हैं तो अति दुख भी भारतवासी ही देखते हैं।

''राजधानी स्थापन हो रही है, उसका प्लेन बता देते हैं। सूर्यवंशी में इतनी गद्दियां, चन्द्रवंशी में इतनी गद्दिया। जो नापास होते हैं, वे बनते हैं दास-दासियां। दास-दासियों से फिर नम्बरवार राजा-रानी बनते हैं। अनपढ़े अन्त में पद पाते हैं। ... वास्तव में नया भारत स्वर्ग को, पुराना भारत नरक को कहा जाता है।''

सा.बाबा 12.12.03 रिवा.

''मनुष्य होकर अगर इस ड्रामा (विश्व-नाटक) को न जाने तो बाकी क्या काम का। ऐसे तो बहुत कहते हैं कि बी.के. की पवित्रता बहुत अचछी है। पवित्रता सबको अच्छी लगती है। ... भारत पूज्य से पुजारी कैसे बना है, भारतवासी देवी-देवता 84 जन्म कैसे लेते हैं - यह उनको समझाओ। ... अखबार वालों को भी पार्टी देनी है। फिर वे आग लगायें या पानी डालें, यह उन

पर मदार है। यह तो तुम बच्चे जानते हो - लड़ाई लगनी ही है, खून की नदियां बहेंगी भारत में।''

सा.बाबा 15.10.03 रिवा.

''अनेक धर्मों का विनाश कराये एक सत धर्म की स्थापना करना - यह शक्ति का कम नहीं है ? यह ऊंच कार्य तुम बच्चों के द्वारा परमात्मा बाप करवाते हैं।''

सा.बाबा 21.12.06 रिवा.

''मन-बुद्धि आत्मा के आरगन्स हैं। बाकी यह सब शरीर की इन्द्रियां हैं। आत्मा कहती है मेरे मन को शानति कैसे मिले। वास्तव में यह कहना गलत है।''

सा.बाबा 28.9.06 रिवा.

''अभी तुम बच्चे बाबा के मददगार बन आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। जब तुम स्वर्ग के मालिक बनने के लायक बन जायेंगे तब फिर विनाश शुरू हो जायेगा। ... विनाश होने बिगर भारत स्वर्ग बन न सके।''

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

''यह है क्यामत का समय, सबको पवित्र बनकर वापस जाना है। भारत में ही होलिका मनाते हैं। ... अभी तुम्हारा मुँह शान्तिधाम और सुखधाम की तरफ है और पैर दुखधाम की तरफ हैं। ... पुरानी दुनिया का विनाश होता है, होलिका होती है ना। शरीर सब खत्म हो जायेंगे, बाकी आत्मायें सब वापस हो जायेंगी।''

सा.बाबा 13.4.06 रिवा.

''हाय-हाय के बाद फिर जय-जयकार होनी है। भारत में ही रक्त की नदी बहनी है। सिविलवार के आसार भी दिखई दे रहे हैं। ... तुम ब्राह्मण अभी भारत को स्वर्ग बना रहे हो।''

सा.बाबा 14.4.05 रिवा.

''इस सुख-दुख के खेल को भी तुम जानते हो। ... ये मूसल आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। गीता में भी मूसल अक्षर है। ... स्वर्ग-नर्क भारत की ही बात है। ... यहाँ ही स्वर्गवासी थे, यहाँ ही फिर नर्कवासी बनते हैं। यह नॉलेज है नर से नारायण बनने की।''

सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

''भारतवासी ही शिव-जयन्ति नहीं मनाते हैं, इसलिए ही भारत की यह बुरी गति हुई है। भारतवासियों का मौत भी बुरी गति से होता है। वे तो गैस निकला और खलास। ... विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लेन अनुसार बॉम्बस एक्ट में आ जायेंगे। ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। भारत में रक्त की नदियां यहाँ बहेंगी।''

सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''यह लड़ाई है ही विनाश की। उस तरफ तो बहुत आराम से मरेंगे, कोई तकलीफ नहीं होगी। ... यहाँ तो दुखी होकर मरते हैं क्योंकि तुमने बहुत सुख उठाया है तो बहुत दुख भी तुमको देखना है। खून की नदी यहाँ ही बहेगी।''

सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''गायन है - अपने कुल का विनाश करते हैं। यह भारत तो अलग कोने में है। बाकी सब खलास हो जाने हैं। योगबल से तुम सारे विश्व पर विजय पाते हो। ... भारत ही पैराडाइज अर्थात् स्वर्ग था।''

सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

''यह तो जानते हो - उस तरफ विनाश बहुत सहज हो जायेगा, एटॉमिक बाम्बस से। यहाँ के लिए हैं रक्त की नदिया, इसमें टाइम लगता है। यहाँ का मौत बड़ा खराब है। यह भारत अविनाशी खण्ड है। नक्शे में देखेंगे तो हिन्दुस्तान तो एक जैसे कोना है। ड्रामा अनुसार यहाँ उसका असर आता ही नहीं है। यहाँ रक्त की नदियाँ बहती हैं। ... भारत खण्ड कभी विनाश को नहीं पाता है।''

सा.बाबा 17.7.04 रिवा.

''फिर उन्होंको एरोप्लेन्स अथवा लश्कर आदि की दरकार नहीं रहेगी। यह सब खलास हो जायेंगे। बाकी थोड़े मनुष्य रहेंगे। यह बत्तियाँ, एरोप्लेन आदि रहेंगे परन्तु दुनिया कितनी छोटी रहेगी। भारत ही रहेगा। ... भारत कितना छोटा जाकर रहेगा, सो भी मीठे पानी पर। ... बाप ने भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया था, जिसको सुखधाम कहते हैं। वहाँ अपार सुख थे।''

सा.बाबा 14.7.04 रिवा.

''भारत में रक्त की नदियाँ बहेंगी, फिर भारत में ही दूध की नदियाँ बहेंगी। अन्त में सब आपस में लड़ मरेंगे।''

सा.बाबा 23.4.04 रिवा.

''विशेष भारत में सिविल वार और प्राकृतिक आपदायें ये ही हर कल्प परिवर्तन के निमित्त बनते हैं। विदेश की रूप रेखा अलग प्रकार की है लेकिन भारत में यही दोनों बातें विशेष निमित्त बनती हैं। ... धर्मराजपुरी में सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुक्तू नहीं होगा।''

अ.बापदादा 10.12.84

''अभी समय जल्दी से परिवर्तन की ओर जा रहा है, अति में जा रहा है लेकिन समय परिवर्तन के पहले आप विश्व-परिवर्तक श्रेष्ठ आत्मायें स्व-परवर्तन द्वारा सर्व के परिवर्तन के आधारमूर्त बनो।

आप ही विश्व के आधारमूर्त-उद्धारमूर्त हो। हर एक आत्मा लक्ष्य रखो - मुझे निमित्त बनना है। सिर्फ तीन बातों का स्व में संकल्पमात्र भी न हो, यह परिवर्तन करो। एक - परचिन्तन, दूसरा - परदर्शन और तीसरा - परमत या परसंग, कुसंग।''

अ.बापदादा 02.02.04

''जिसने गीता सुनाई, उनसे तुम अब डायरेक्ट सुन रहे हो। ... इस महाभारत लड़ाई के बाद भारत मालामाल बनता है। वे तो जानते नहीं कि इस महाभारी महाभारत लड़ाई के बाद ही भारत सवर्ग बनता है।''

सा.बाबा 22.1.07 रिवा.

''सबको समझाना है कि आज से 5000 वर्ष पहले भारत गॉर्डन ऑफ गॉड था, मनुष्य बहुत सुखी थे। नई दुनिया में सिर्फ भारत ही था। कोई भी खण्ड का नाम-निशान भी नहीं था। ... अब तो भारत पुराना है, उसको ही दुखधाम कहते हैं। ... स्थापना और विनाश का राज़ भी सबको समझाना है।''

सा.बाबा 15.1.07 रिवा.

महाभारत का भारत

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्हम्। ''गायन भी है - यदा यदाहि ... सृजाम्यहं। यह भारत की बात है। ... गीता पाठी श्लोक पढ़ते हैंपरन्तु कहते हैं हमको पता नहीं।''

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

महाभारत में जो अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना का वर्णन है। धर्म की स्थापनार्थ ही महाभारत का युद्ध हुआ, जिसमें धर्म के पक्षधर पाण्डवों की विजय हुई और अधर्म पर चलने वाले कौरवों का नाश हुआ। महाभारत में भी वर्णन है कि महाभारत के युद्ध में देश-विदेश के सभी राजाओं ने भाग लिया, जिनमें अपने संस्कारों के आधार पर कोई धर्म के पक्ष में और कोई अधर्म के पक्ष में रहे। महाभारत में जिन परिस्थितियों, क्रिया-कलापों का वर्णन है, वे सभी वर्तमान जगत और विशेष भारत में विद्यमान हैं और तृतीय विश्व-युद्ध के रूप में फिर से महाभारत होने वाला है, जिसमे विश्व की अधिकांश आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम चली जायेंगी, कुछ आत्मायें भारत में बचेंगी, जहाँ से नई सृष्टि का निर्माण होगा। इस महाभारत युद्ध या तृतीय विश्व-युद्ध के बाद भारत फिर से महान बनेंगा, इसलिए ही इस युद्ध का नाम महाभारत अर्थात् महान् भारत पड़ा है।।

इस महाभारत युद्ध के सम्बन्ध में भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने

जयद्रथ-बध नामक किताब में लिखा है -

अधिकार खोकर बैठ रहना ये महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को दण्ड देना धर्म है।
इस ध्येय पर ही पाण्डवों का कौरवों से रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।

कवि ने कविता की इन पक्तियों में अपनी आन्तरिक भावना प्रगट की है परन्तु सत्यता इससे कुछ भिन्न है, जो परमपिता परमात्मा ने अभी बताई है। कवि की दृष्टि में इस युद्ध में भारत की सर्वश्रेष्ठ गौरवशाली सभ्यता और सम्पन्नता खत्म हो गई परन्तु वास्तविकता ये है कि इस महाभारत युद्ध के बाद ही भारत महान बनता है, जिस गौरवशाली समय और जीवन को सारा विश्व स्वर्ग के नाम से जानता है और याद भी करता है। इस सत्य रहस्य को परमात्मा ने अभी हम आत्माओं को बताया है। धर्म का पक्ष लेना धर्म का पालन करना हर आत्मा का पावन कर्तव्य है क्योंकि धर्म की सदा ही विजय होती है। ये ईश्वरीय ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति ही है, जो अपने-पराये का भान मिटाकर हमारे अन्दर भाई-भाई की भावना जाग्रत करती है, जिसके कारण हम सत्य धर्म का पालन करते हुए सत्य पथ पर चलने में समर्थ होते हैं।

''साइन्स कोई वेदों में नहीं है। उनमें तो ज्ञान की बातें हैं। यह साइन्स बुद्धि का चमत्कार है, जो इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। विमान आदि बनाते हैं सुख के लिए। फिर पिछाड़ी में इनके द्वारा ही विनाश होता है। यह सुख का हुनर भारत में रह जायेगा, दुख का हुनर मारने आदि का खलास हो जायेगा। साइन्स का अकल चला आता है।''

सा.बाबा 8.10.03 रिवा.

महाभारत को सही दृष्टिकोण से देखें तो पता चलता है कि उसमें राजनीति, धर्मनीति, आध्यात्मिक ज्ञान, कर्म-सिद्धान्त के अनेक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि भक्तों में यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अनत का यथार्थ ज्ञान न होते हुए भी वे धर्म-सम्पन्न राजनीति, आध्यातमिक ज्ञान के अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों के विषय में और कर्म और फल के विधि-विधान में महत्वपूर्ण ज्ञान रखते थे, उसमें विश्वास रखते थे। जैसे महाभारत में एक उपाख्यान में लिखा है कि जब पाण्डव अपना राजभाग जुआ में हारने के बाद वनवास में थे तो एक ऋषि उनसे मिलने गये तो अर्जुन और भीम ने अपने बाहुबल को देखते हुए कौरवों से लड़ने की इच्छा प्रगट की, तब उनकी बात को सुनकर ऋषि ने उनसे कहा - शत्रु निर्बल हो तो भी बलवान को समय की प्रतीक्षा अवश्य करनी चाहिए। पाण्डव वनवास के लिए वचनबद्ध थे। उसके पहले वे लड़ते तो संसार उनकी धर्मपरायणता पर उंगली उठाता और उनके प्रति जो श्रृद्धा-भावना

आज है, वैसी नहीं होती।

ऐसे ही कर्म-सिद्धान्त के सम्बन्ध में द्रोपदी के चीर हरण के समय भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य समर्थ होते हुए भी मूक होकर उसको देखते रहे और किसी ने भी उस दुष्कृत्य के विरोध में आवाज नहीं उठाई तो उसका पाप उनके ऊपर चढ़ गया और उनको कौरव सम्प्रदाय की तरफ से लड़ना पड़ा अर्थात् वे हारने वाले के योद्धा कहलाये। धृतराष्ट्र के एक दासी-पुत्र विकर्ण ने उसके विरोध में आवाज उठाई, भले ही उसकी वह सुनी नहीं गई, फिर भी युद्ध के समय वह पाण्डव पक्ष आ गया और विजयी पक्ष का योद्धा कहलाया।

ऐसे ही का क्या प्रभाव होता है, उसके विषय में भी लिखा है। द्रोपदी ने दुर्योधन को अन्धे की औलाद अंधे कहकर सम्बोधित किया, कटु शब्द कहे, जिसका फल द्रोपदी को भी भोगना पड़ा। जो सिद्ध करता है अच्छा व्यक्ति भी गलत शब्द बोलता है, कोई गलत कार्य करता है तो उसको भी उसका फल भोगना ही पड़ता है। आध्यात्मिक ज्ञान का मूल शास्त्र गीता तो महाभारत का ही एक अंश है, जिसमें भले यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान स्पष्ट रूप से नहीं है परन्तु बाबा जो कहते की आटे में नमक के समान उसमें सत्य अवश्य है। इस प्रकार हम देखें तो महाभारत में अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का ज्ञान है। परमात्मा अभी संगमयुग पर जो ज्ञान सुनाते हैं, उसकी संचित स्मृति के आधार पर ही भक्तिमार्ग में कुछ आत्मायें ऐसे रहस्यमय तथ्यों को लिखती, उजागर करती हैं।

बाबा ने महाभारत को भी एक उपन्यास या नाटक के रूप में बताया है परन्तु वह धार्मिक नाटक या उपन्यास है। दुनिया में कोई भी उपन्यास या नाटक ऐसा नहीं है, जिसमें ऐसी धर्म-नीति, राजनीति, कर्म-सिद्धान्त की बातें हों, इतने पात्र हों और उसमें विभिन्न क्षेत्रों के इतने विधि-विधानों का ज्ञान हो।

''विनाश के लिए तैयारी कर रहे हैं। तुम जानते हो ड्रामा में उन्होंका भी पार्ट है। ड्रामा के बन्धन में बांधे हुए हैं। तुम बच्चो के लिए यह कोई नई बात नहीं है। ... यह भी जानते हो बरोबर महाभारत लड़ाई लगी थी। ... सारा ड्रामा ही 5000 वर्ष का है, लाखों वर्ष की बात नहीं।''

सा.बाबा 25.8.06 रिवा.

''यादव, कौरव, पाण्डव थे, जरूर संगम पर ही होंगे। संगमयुग की हिस्ट्री बैठ बनाई है। त्योहार भी सभी संगमयुग के हैं। ... राखी आदि का भी अभी फैशन पड़ गया है। वास्तव में यह है पवित्रता की बात।''

सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

''भारतवासी ही पुकारते हैं कि हे दूर देश के रहने वाले आओ क्योंकि भारत में अभी बहुत धर्म-ग्लानि, दुख हो पड़ा है। ... कहते हैं भारतवासियों पर फिर माया का परछाया पड़ा है। ... मैं

मनुष्य रूप में तो आता हूँ परन्तु मेरा आना दिव्य और अलौकिक है। ... मैं इस साधारण तन में आकर तुमको फिर से सहज राजयोग सिखा रहा हूँ।''

सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

''ऊंच ते ऊंच महिमा एक बाप की ही है। ... गीता की वास्तव में बड़ी महिमा है। साथ-साथ भारत की भी महिमा है। भारत सब धर्म वालों का बड़ा तीर्थ है। ... इन देवताओं जैसा कोई है नहीं।''

सा.बाबा 30.5.06 रिवा.

''भारत की महिमा बहुत भारी है। बाप भारत में ही आते हैं, भारत सब धर्मों का तीर्थ स्थान है। शिव जयन्ति भी यहाँ मनाई जाती है। ... भारत में ही सतयुग स्वर्ग था, भारत में ही कलियुग नर्क है। ... यदा यदाहि ... सृजाम्यहम् - यह भारत की ही बात है।''

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

''इस समय तुम बच्चे संगम पर बैठे हो, बाकी सब कलियुग में बैठे हैं। ... अभी तुम्हारी बाप के साथ प्रीत बुद्धि है, बाकी सबकी बाप से विपरीत बुद्धि है। अब तुम जानते हो महाभारी महाभारत लड़ाई भी सामने खड़ी है। ... इस महाभारत लड़ाई के बाद ही भारत स्वर्ग बन जाता है।''

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

''तुमको अनगिनत बार पढ़ाया है, फिर 5 हजार वर्ष बाद तुमको ही पढ़ायेंगे। ... सर्वशास्त्र शिरोमणि गीता भगवान ने गाई है परन्तु भगवान किसको कहा जाता है, यह भारतवासियों को पता नहीं है। ... भारत जो सोने की चिड़िया था, वह अब क्या बन पड़ा है?''

सा.बाबा 16.12.04 रिवा.

''परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर है, कृष्ण को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। शिवबाबा की महिमा अलग और कृष्ण की महिमा अलग है। भारतवासी मूँझ पड़े हैं, गीता का भगवान कृष्ण को समझ लिया है। गीता ज्ञान तो है ही एक बाप में, जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है। भारतवासियों का धर्म-शास्त्र तो वास्तव में है ही एक सर्वशास्त्र शिरोमणी भगवत गीता। गीता में है भगवानुवाच। अब भगवान किसको कहा जाये? वह भी भारतवासी समझते नहीं हैं।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

श्रीमत और भारत एवं विश्व

भारत और गीता-ज्ञान

गीता महाभारत का एक अंग है और भारत में ही भगवान आकर श्रीमत देकर खास

भारत और सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हैं। उसके लिए श्रेष्ठ मत देते हैं, जिस श्रीमत से ही भारत महान बनता है।

बाबा ने श्रीमत दी है कि मैंने जो भारत की महानता का राज़ बताया है, आत्मा और विश्व को पावन बनाने के लिए ज्ञान दिया है, ये राज़ सभी भारतवासियों और विश्व की सर्वात्माओं को समझाओ, जिससे वे आत्मायें भी पावन बनकर परमात्मा से सुख-शान्ति का जन्मसिद्ध अधिकार ले सकें। भगवान भारत को स्वर्ग बना रहे हैं, इस पतित दुनिया का विनाश होने वाला है, ये राज़ सबको समझाओ और सबको पतित से पावन बनने का मन्त्र सुनाओ।

यह भारत अभी जो नर्क बन गया है, वही स्वर्ग बनता है। जब यह भारत स्वर्ग होगा, उस समय भारत नाम नहीं होगा क्योंकि उस समय सारा विश्व ही एक होगा और सारा विश्व ही स्वर्ग हो, उसका केन्द्र-बिन्दु यह वर्तमान भारत होगा। भारत नाम तो बाद में पड़ा जब अनेकता आई और लोभ-अहंकार के वश विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। स्वर्ग में विभाजन की कोई सीमा रेखा नहीं होगी। एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा, एक मत होगी। इस सत्य को सभी मानेंगे क्योंकि सभी धर्म वाले स्वर्ग को तो मानते ही हैं।

''तुमको यह भारत भूमि बहुत प्यारी है क्योंकि तुम जानते हो कि यह भारत ही स्वर्ग था ... फिर से इस भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाना पड़े। ... बाप भारत में ही आते हैं, भारतवासी ही स्वर्ग के मालिक थे, इसमें कोई शक नहीं है।''

सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

''ईश्वर खुद आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म अर्थात् स्वर्ग की स्थापना करते हैं, इसका नाम भारत ही चला आता है। गीता में सिर्फ कृष्ण का नाम डाल कितना रोला कर दिया है। यह भी ड्रामा है, हार और जीत का खेल है। इसमें हार-जीत कैसे होती है, यह बाप बिगर कोई बता न सके।''

सा.बाबा 19.7.04 रिवा.

''विदेश को भी भारत में ही समा जाना है। विश्व एक हो जायेगी। ... भारत वालों को भी खुशी होती है और आप लोगों को भी खुशी होती है। ... स्थापना की सेवा भी दिल्ली में जमुना घाट पर हुई और राज्य भी जमुना घाट पर करना है।''

अ.बापदादा 9.1.96

''काम चिता की तपत से भारत एकदम जल मरा है, इसलिए बाप को याद करते हैं कि आकर शीतल बनाओ। ... इस ज्ञान की बर्षा से भारत अथवा सारी दुनिया शीतल हो जाती है। ... भारतवासी ही इस नॉलेज को समझेंगे। ... जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं, वे ही आकर ब्राह्मण

बनेंगे।''

सा.बाबा 3.6.06 रिवा.

''बाप ने भारतवासी पतितों को आकर राजयोग सिखलाकर पावन बनाया था, अभी फिर बाप बच्चों के पास आया हुआ है। ... तुम हो शिव शक्ति भारत मातायें, जो श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाती हो। ... भारत ही परिस्तान था, जो अब कब्रिस्तान बना है, अभी फिर परिस्तान होगा।''

सा.बाबा 3.03.06 रिवा.

''यह सारा खेल भारत के ऊपर ही बना हुआ है। भारत ही पावन और भारत ही पतित बनता है। ... तुम ब्राह्मणों ने ही श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाया है। यह है ही भारत का प्राचीन राजयोग, जिसका गीता में भी वर्णन है।''

सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

''सभी मधुवन निवासी हो और आगे भी भारत पर ही राज्य करने वाले हो। भारत ही सबसे महान और सबसे सुन्दर बनेगा। ... ज्ञान और योग के दोनों पंख मजबूत होंगे तो सदा उड़ते रहेंगे। ज्ञान अर्थात् हर कदम श्रीमत पर चलने की समझ।''

अ.बापदादा 20.12.92 डबल विदेशी

''हम अपने परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर इस भारत को फिर से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनाते हैं। तो खुद को भी बनना पड़े। ... शिवबाबा भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... राजयोग है ही भारत को स्वर्ग बनाने का। ... तुम्हारी केपिटल भी देहली होनी है।''

सा.बाबा 27.1.05 रिवा.

''शिव जयन्ति भी भारत में मनाते हैं। ... मैं आता भी भारत में हूँ। गऊमुख की बात नहीं है ... दूसरे तरफ फिर भागीरथ दिखाते हैं। ... भारत का विश्व पर राज्य था। भारत की कितनी महिमा है। तुम जानते हो हम श्रीमत पर यह राज्य स्थापन कर रहे हैं।''

सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

''शिव भगवानुवाच - मैं तब आता हूँ जब भारत में अति धर्म ग्लानि होती है। ... देवी-देवता धर्म वालों को ही टच होगा। भारत की ही बात है। ... जो अच्छा पढ़ते हैं, वे अच्छा पद पाते हैं। मुख्य है ज्ञान-योग।''

सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

''तुम अपने तन-मन-धन से श्रीमत पर भारत की ऊंच से ऊंच सेवा कर रहे हो।... भारत ही सचखण्ड था, अब झूठखण्ड है। ... किसको पता नहीं पड़ता है कि भारत हेविन से हेल कैसे बनता है और फिर हेल से हेविन कौन बनाता है।''

सा.बाबा 15.1.05 रिवा.

''सच खण्ड स्वर्ग को कहा जाता है। भारत ही स्वर्ग था, स्वर्ग में सब भारतवासी ही थे। आज वही भारतवासी नर्क में हैं। तुम जानते हो हम बाप से श्रीमत लेकर भारत को फिर से स्वर्ग बना रहे हैं। ... भारत का ही उत्थान और पतन गाया हुआ है।''

सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

''तुम जानते हो इस विनाश में ही खास भारत और आम सारी दुनिया की भलाई है। यह बात दुनिया वाले नहीं जानते। विनाश होता तो सब चले जायेंगे मुक्तिधाम।... बाप कहते हैं - जब-जब भारत में धर्म की ग्लानि होती है, तब मैं आता हूँ। जो भारतवासी हैं बाप उन्हों से ही बात करते हैं। बाप आते भी भारत में ही हैं, और कोई जगह नहीं आते हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड है, बाप भी अविनाशी है।''

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

''भारतवासी ही देवी-देवता थे, जिन्होंने 82,83,84 जन्म लिए हैं। वे ही पतित बने हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। जब भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब इसे नई दुनिया, नया भारत कहा जाता था। ... यह रावण है भारत का आधा कल्प का दुश्मन। ... गीता में भी है भगवानुवाच - काम महाशत्रु है। भारत का वास्तविक धर्मशास्त्र है ही गीता। ... एक ही सोमनाथ के मन्दिर में कितने हीरे-जवाहरात थे, भारत कितना सालवेन्ट था। अभी तो इन्सालवेन्ट है। ... यह रावण है भारत का नम्बरवन दुश्मन।''

सा.बाबा 13.9.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - जब-जब भारत में धर्म की ग्लानि होती है अर्थात् देवी-देवता धर्म वाले पतित बन जाते हैं तब फिर पावन बनाने हमको आना पड़ता है। यह ड्रामा का चक्र है, जो फिरता रहता है।''

सा.बाबा 20.8.04 रिवा.

''परमात्मा को सर्वव्यापी मानना बड़ी भारी भूल है। गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है। इन भूलों के कारण ही भारत पावन से पतित बना है।''

सा.बाबा 10.8.04 रिवा.

''अभी प्रश्न है - पतित-पावन कौन ? कृष्ण को तो नहीं कहेंगे। पतित-पावन परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। वही आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है। सारा मदार है गीता पर। ... भल कहते हैं - भारत का प्राचीन योग। परन्तु वह भी समझते हैं कि कृष्ण ने सिखाया था। गीता को ही खण्डन कर दिया है। बाप की जीचप कहानी में बच्चे का नाम डाल दिया है। शिवरात्रि

भी मनाते परन्तु वह कैसे आते, यह नहीं जानते।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

''तुम पर अभी बृहस्पति की दशा है। भारत पर ही दशा आती है। अभी राहू की दशा है, बाप वृक्षपति आते हैं तो जरूर भारत पर बृहस्पति की दशा बैठेगी। ... लिखा हुआ है - हे बच्चो, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। यह गीता के अक्षर हैं। यह गीता एपीसोड चल रहा है।''

सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

''अपने को आत्मा याद नहीं कर सकते तो बाप को फिर कैसे याद करेंगे। ... मनुष्य गीता आदि भल पढ़ते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। भारत की है ही मुख्य गीता। हर एक धर्म का अपना-अपना एक धर्मशास्त्र है।''

सा.बाबा 19.6.04 रिवा.

''भारत की महिमा अपरमअपार गाई हुई है। भारत जैसा पवित्र देश कोई है नहीं। यह सबसे बड़ा तीर्थ है। बाप यहाँ आकर सबकी सेवा करते हैं, सबको पढ़ाते हैं। तुमसे कोई-कोई पूछते हैं - तुम भारत की क्या सेवा करते हो ? बोलो - तुम चाहते हो भारत पावन हो, अभी पतित है ना, तो हम श्रीमत पर भारत को पावन बनाते हैं। ... भारत जो सिरताज था, पीस-प्रॉस्पेरिटी थी, वह फिर से बना रहे हैं श्रीमत पर कल्प पहले मुआफिक, ड्रामा प्लेन अनुसार।''

सा.बाबा 12.6.04 रिवा.

''भारत जैसा सालवेन्ट और कोई देश नहीं है। इन जैसा तीर्थ और कोई बन नहीं सकता। ... वे कहते हैं - कृष्ण भगवानुवाच और बाप कहते हैं शिव भगवानुवाच। भारतवासियों ने नाम बदल लिया तो सारी दुनिया ने बदल लिया। कृष्ण तो देहधारी है, विदेही तो एक शिवबाबा ही है।''

सा.बाबा 16.6.04 रिवा.

''भरत जितना नम्बरवन में था उतना और कोई खण्ड नहीं होता। भारत की बहुत महिमा है। भारत सब धर्म वालों का बहुत बड़े से बड़ा तीर्थ है। परन्तु ड्रामा अनुसार गीता को खण्डन कर दिया है। भारत और सारी दुनिया की भूल है। भारत में ही गीता को खण्डन किया है, जिस गीता के ज्ञान से बाप नई दुनिया बनाते हैं और सर्व की सद्गति करते हैं। भारत सबसे ऊंच और बहुत धनवान खण्ड था, जो अभी फिर से बन रहा है। भारत पर अभी बृहस्पति की दशा बैठी है।''

सा.बाबा 20.5.04 रिवा.

''पुजारी बन बाप को ही गाली देते हैं। इसमें भी कोई का दोष नहीं है। बाप बच्चों को समझाते हैं - यह ड्रामा कैसे बना हुआ है। ... आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी-देवता

धर्म था। ... मुझे अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाने आना पड़ता है। ... भारतवासी जानते हैं यह वही महाभारत लड़ाई है। ... बच्चे समझते हैं हम भारतवासी कितने सालवेन्ट थे, हीरे-जवाहरों के महल थे।''

सा.बाबा 22.5.04 रिवा.

''बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब खास भारत में धर्म-ग्लानि होती है। दूसरी जगह तो किसको पता ही नहीं है कि निराकार परमात्मा क्या चीज है। ... बाप कहते हैं - यदा यदाहि ... बाबा भारत में आते हैं। ऐसे तो नहीं कहते कि मैं हिन्दुस्तान में आता हूँ। यह है भारत।''

सा.बाबा 26.4.04 रिवा.

''तुम जानते हो हम श्रीमत पर कल्प-कल्प भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... शिवबाबा इस भारत को शिवालय बनाते हैं तो बच्चों को भी पुरुषार्थ करना चाहिए।''

सा.बाबा 1.3.04 रिवा.

''भारत ही बहिश्त था, भारत ही दोज़क बना है। ... अब हिन्दू धर्म तो गीता में है नहीं। गीता में तो भारत नाम पड़ा है। ... शिव जयन्ति भारत में ही मनाई जाती है।''

सा.बाबा 10.2.04 रिवा.

''भारत का बड़े ते बड़ा दुश्मन है ही रावण, जिसने भारत को कौड़ी मिसल बनाया है। अब इस रावण पर मेरी मत पर जीत पहनो। अब तुम देही-अभिमानी बनो। ... भारत में ही शिव जयन्ति मनाते हैं, इससे सिद्ध है कि भारत ही शिव की जन्मभूमि है।''

सा.बाबा 15.1.07 रिवा.

''भारतवासियों को वैकुण्ठ बहुत प्यारा लगता है, इसलिए कोई मरता है तो कहते हैं फलाना वैकुण्ठवासी हुआ। ... स्वर्ग में जन्म लेते रहें, इसका मदार है पढ़ाई पर। ... भारत में अनेक मतें हैं, जिससे भारत भ्रष्ट बन गया है। फिर एक की मत से आधा कल्प के लिए भारत श्रेष्ठाचारी बनता है।''

सा.बाबा 11.1.07 रिवा.

वर्तमान भारत की नीति (Policy) और दूसरे देशों के साथ व्यवहार

वर्तमान में भी भारत की नीति किसी भी देश के साथ शत्रुता की नहीं है भले भूतकाल में उस देश वालों ने भारत के साथ कैसा भी व्यवहार किया हो। क्षमा का भारतीय सभ्यता में सदा

ही विशेष स्थान रहा है। दूसरे देशों का दृष्टिकोण भी भारत के प्रति अच्छा ही है और दिनोंदिन भारत की शक्ति और भारत का प्रभाव विश्व में उभर रहा है।

भारत के संविधान में धर्म-निर्पेक्षता की नीति अपनाई गई है, उसका भी मूल यही है कि भारत सब धर्मों का उद्गम स्थान है, सब धर्मों का सम्बन्ध भारत से ही है। भले संविधान बनाने वाले इस सत्यता को नहीं जानते हैं परन्तु ज्ञान सागर बाप ने जो ज्ञान दिया है, उस पर विचार करें तो सत्यता यही है।

भारत और विश्व की राज-व्यवस्था

वर्तमान जगत में प्राय: सारे विश्व अर्थात् सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था ही है। यह प्रजातन्त्र कलियुग के अन्त की राज-व्यवस्था है। भारत की आदि राज-व्यवस्था राजतन्त्र (Kingdomship) की ही थी, जो कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग पर परमात्मा पिता ने आकर स्थापन की थी। वही राजतन्त्र की राज-व्यवस्था कलियुग के अन्त तक अर्थात् प्रजातन्त्र से पहले तक चली आई और प्रजातन्त्र से पहले सभी देशों में भी अपनाई गई। परन्तु भारत के आदि के राजतन्त्र और द्वापर से चलने वाले राजतन्त्र और विश्व के अन्य देशों के राजतन्त्र में दिन और रात का अन्तर है। भारत के आदि के राजतन्त्र में राजा-रानी दोनों ही साथ में गद्दी पर बैठते थे, वहाँ राजा-रानी और प्रजा को समान अधिकार थे अर्थात् राजा के लिए प्रजा पुत्र के समान थी और प्रजा के लिए राजा-रानी माता-पिता के समान सम्मानीय थे। दोनों में प्यार का सम्बन्ध था। द्वापर से जो राजतन्त्र चला, उसमें विकारों की प्रवेशता के कारण वे भावनायें विलीन होती गई। फिर भी भारत के राजतन्त्र में और विदेशों के राजतन्त्र में अन्तर अवश्य रहा है। इसका जीता-जागता उदाहरण भारत में उदयपुर राज्य के इतिहास में पन्ना धाय के रूप में मिलता है, जिसने एक राजकुमार की रक्षा के लिए अपने पुत्र की बलि देकर राजकुमार की रक्षा की। भारत के राजतन्त्र में और भी ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिसमें प्रजा ने अपने सगे-सम्बन्धियों का अपने राजा और अपने देश के लिए खुशी से बलिदान किया है।

द्वापर से जब अन्य धर्मों की स्थापना हुई और अन्य देशों में सभ्यता का विस्तार हुआ तो भारत का वही राजतन्त्र अन्य देशों में भी चलता रहा। भारत में प्रजातन्त्र विदेशों से आया है अर्थात् प्रजातन्त्र व्यवस्था विदेशी सभ्यताओं की देन है और राजतन्त्र की व्यवस्था भारत की देन है, जो परमात्मा ने स्थापन की थी और अभी फिर कर रहे हैं। प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था तो कलियुग के अन्त की राज-व्यवस्था है, जो विश्व में थोड़े समय के लिए ही चलती है।।

''तुम ही पावन ऊंच थे, तुम ही पतित बन नीचे आये हो। यह सारा नाटक ही भारत पर है। ... तुम

यह क्लीयर कर लिख सकते हो कि हम योगबल से भारत को श्रेष्ठाचारी बना देंगे। ... तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हमारी किंगडम स्थापन हो रही है। अब तुम हो संगमयुग पर।''

सा.बाबा 21.12.06 रिवा.

''सारे कल्प में राजा बनने की पढ़ाई कोई नहीं पढ़ता। ... अभी स्वराज्य मिला है, फिर विश्व का राज्य मिलेगा। ... सतयुग में प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं होगा, राजा का राज्य होगा। यह तो चक्र के अन्त में प्रजा का प्रजा पर राज्य है।''

अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी 2

''यह है राजाई प्राप्त करने का इम्तहान, जो परमात्मा के सिवाए कोई पढ़ा न सके। ... गाया हुआ है - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ।''

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

''परिस्तान देहली को ही कहा जाता है। बड़ी गद्दी देहली ही होगी। ... यह दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। ... पार्ट तो जरूर बजाना ही है। जैसे ड्रामा में कल्प पहले पार्ट बजाया है, वैसे ही बजायेंगे। भारतवासी ही राज्य करते थे। भारतवासी ही देवी-देवता धर्म वाले हैं।''

सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

भारत ने अपने राज्य के विस्तार के लिए किसके राज्य को छीना नहीं लेकिन निर्जन स्थान पर भी सभ्यता का विस्तार करके अपने राज्य का विस्तार किया, जब कि अन्य सभ्यताओं ने भारत की सभ्यता को डिग्रेड करके अपने राज्य का विस्तार किया।

''भारत ही गोल्डन एजेड था, अब आइरन एजेड बना है। ... जब देवी-देवताओं का राज्य था तो भारत कितना ऊंच था।''

सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

''तुम बच्चे योगबल से विश्व के मालिक बनते हो, बाहुबल से कब किसको विश्व की बादशाही मिल नहीं सकती। भारत जो विश्व का मालिक था, वह अभी कंगाल बना है।''

सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

''बाप सच बोलने वाला, सच खण्ड स्थापन करने वाला है। भारत सच खण्ड था, वहाँ सब देवी-देवता निवास करते थे। ... राजधानी स्थापन हो रही है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। राजधानी न तो सतयुग में स्थापन हो सकती है और न ही कलियुग में क्योंकि बाप सतयुग या कलियुग में नहीं आते हैं। इस युग को कहा जाता है कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग।''

सा.बाबा 3.7.04 रिवा.

''भारत का ही प्राचीन सहज राजयोग गाया हुआ है। गीता में भी राजयोग नाम आता है। बाप तुम्हें

राजयोग सिखलाकर राजाई का वर्सा देते हैं। ... पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही प्रजापिता ब्रह्मा होना चाहिए। ... बाप ही इन चित्रों को इस रथ में आकर करेक्ट करते हैं।''

सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

''लक्ष्मी-नारायण को जरूर शिवबाबा ने राज्य दिया होगा। ... भारत फिर हीरे जैसा कैसे बनेगा। ... मैं आकर यह ज्ञान सुनाकर राजधानी स्थापन करता हूँ।''

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

''मैं आकर यह ज्ञान सुनाकर राजधानी स्थापन करता हूँ, यह कोई की बुद्धि में नहीं है। ... प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारी तो हर एक मनुष्य है, न कि सिर्फ भारतवासी। ... प्रजापिता ब्रह्मा को एडम कहते हैं।''

सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

''अबलाओं पर अत्याचार होते हैं ... समझा जाता है ड्रामा अनुसार यह सब कुछ होना ही है। ... ड्रामा की भावी बनी हुई है। कर ही क्या सकते हैं। राजा-रानी, गरीब, साहूकार प्रजा सब बनने जरूर हैं। बाबा भारत में ही आते हैं, भारत को ही सारा मक्खन मिलता है।''

सा.बाबा 6.1.07 रिवा.

''सतयुग में गॉर्डन ऑफ अल्लाह था। भारत ही प्राचीन खण्ड है। जब सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य करते थे, उस समय और सब आत्मायें स्वीट होम में थीं। ... अभी ईश्वर ने तुमको जगाया है, तुमको फिर औरों को भी जगाना है।''

सा.बाबा 4.1.07 रिवा.

भारत का विश्व को योगदान और विश्व का भारत को योगदान

भारत में ही परमात्मा आकर आध्यात्मिक ज्ञान देकर भारत और विश्व को पावन बनाते है, भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं, जिसके लिए गायन है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्णर्प, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म। परमात्मा की श्रीमत और आदेश के अनुसार भारतवासी आत्मायें आध्यात्मिकता का सत्य ज्ञान, दैवी सभ्यता, परस्पर भाईचारे का सन्देश, विश्व-बन्धुत्व की भावना, दैवी राजशाही का सन्देश विश्व में फैलाते हैं और सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हैं।

द्वापर युग से भी भक्ति का ज्ञान, सर्वव्यापी का झूठा ज्ञान आदि भी भारत से ही विश्व में फैला है, जिसके लिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि सर्वव्यापी का ज्ञान विश्व में भारत से गया है।

साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी का ज्ञान विश्व से भारत में आया है क्योंकि वे आत्मायें इस क्षेत्र

में भारत से आगे हैं। भारत में भी साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी के जो अविष्कार हुए हैं, वे प्राय: ऐसी धर्म की आत्माओं ने ही किये हैं, जो या तो बाहर से भारत में आये हैं या द्वापर के बाद में भारत में स्थापन हुए हैं। उसके लिए भी बाबा ने कहा है - अन्त में वे आत्मायें भी सन्देश लेंगी और उस साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी के ज्ञान के आधार पर नये विश्व के निर्माण में सहयोगी बनेंगी।

भारत शब्द का प्रयोग या उसका अर्थ मुख्यतया आदि भारत अर्थात् देवी-देवताओं के भारत और भारत की दैवी सभ्यता से होता है क्योंकि आदि में वे ही थे और अन्त में भी वे ही रहेंगे। परमात्मा भी उनको ही आकर पढ़ाते हैं और वे ही विश्व में परमात्मा का दिव्य सन्देश देने के निमित्त बनते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में भी राजशाही की प्रथा का सन्देश या प्रचार-प्रसार भारत से विश्व में हुआ है और प्रजातन्त्र की प्रथा विदेश से भारत में आई है। ऐसे ही अनेक रीति-रिवाजों के सम्बन्ध में भी अनेक बातें हैं, जो भारत से विश्व में गई हैं और कई बातें विदेश से भारत में आई हैं क्योंकि विधि के विधान के अनुसार हर आत्माओं में कोई न कोई विशेषता है, जिसके आधार पर उनका विश्व में महत्व है।

''भारत की विशेषता है कि भगवान भी भारत में ही मेहमान होकर आते हैं और आप सभी को राज्य-भाग्य भी भारत वाले देंगे ना। ... भारत स्थापना के निमित्त है। अगर भारत की बहनें विदेश सेवा में नहीं जाती तो आप लोग कैसे आते। ... भारत सदा दान-पुण्य करने में होशियार है। औरों को आगे बढ़ाना ये पुण्य है।''

अ.बापदादा 31.12.94

''भारत अविनाशी है। अविनाशी खण्ड फिर भी भारत ही होगा ... बाप अविनाशी है तो अविनाशी खण्ड में ही आता है। ... आप सबको भी भारत में ही मिलने आना है। तो भारत भी कम नहीं है और विदेश भी कम नहीं है।''

अ.बापदादा 31.12.95

''जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी, तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे से बाप ही दिखाई देगा। ... पहले भारत गया है विदेश को जगाने, अभी विदेश भारत को जगायेगा।''

अ.बापदादा 31.10.06

''अभी समय के अनुसार एक ही समय डबल सेवा चाहिए - विश्व की भी और स्वयं की भी। सारे विश्व को सुख-शान्ति की किरणें देना है। ... भारतवासियों को भी ये सेवा करनी है। ... हर एक सेन्टर का वायुमण्डल ऐसा हो, जैसे मधुवन का।''

अ.बापदादा 16.11.06 डबल विदेशी

''बाप समझाते हैं - बच्चे, ड्रामा के प्लेन अनुसार अब बाकी थोड़ा समय है। सारा हिसाब तुम्हारी बुद्धि में है। कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत ही था, उसको स्वर्ग कहा जाता था। ... तुम्हारा नाम विलायत से ही निकलेगा क्योंकि उन्हों की बुद्धि फिर भी भारतवासियों से तीखी है। वे भारत से पीस भी मांगते हैं। ... भारतवासियों से वे ये ज्ञान-योग सीखेंगे। उन्होंका जब आवाज निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे।''

सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

''तुम्हारा नाम विलायत से ही निकलेगा। ... भारतवासियों से वे ये ज्ञान-योग सीखेंगे। उन्होंका जब आवाज़ निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे क्योंकि भारतवासी एकदम घोर नींद में सोये हुए हैं। वे थोड़ा कम सोये हैं, इसलिए उन्होंका आवाज़ अच्छा निकलेगा।''

सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

''बाप भी भारत में ही आते हैं। दुनिया में पीस कब थी फिर वह पीस कब और कैसे होगी - यह बात तो तुम बच्चे ही बता सकते हो। नई दुनिया में भारत ही पैराडाइज़ था। ... सबसे जास्ती पत्थरबुद्धि ये भारतवासी ही बने हैं। यह गीता शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के।''

सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

''विलायत में बड़े-बड़े ट्रस्ट होते हैं जो फिर यहाँ भारत में भी मदद करते हैं। यहाँ ऐसा ट्रस्ट नहीं होगा जो विलायत को भी मदद करे। यहाँ तो गरीब लोग हैं, वे क्या मदद करेंगे। भारत तो गरीब है ना। भारतवासियों की क्या हालत है। भारत कितना सिरताज था।''

सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

''फिर उन्होंको एरोप्लेन्स अथवा लश्कर आदि की दरकार नहीं रहेगी। यह सब खलास हो जायेंगे। बाकी थोड़े मनुष्य रहेंगे। यह बत्तियाँ, एरोप्लेन आदि रहेंगे परन्तु दुनिया कितनी छोटी रहेगी। भारत ही रहेगा। ... भारत कितना छोटा जाकर रहेगा, सो भी मीठे पानी पर। ... बाप ने भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया था, जिसको सुखधाम कहते हैं। वहाँ अपार सुख थे।''

सा.बाबा 14.7.04 रिवा.

''ऐसे सर्व अधिकारी आत्माओं को, सदा सागर के भिन्न-भिन्न लहरों में लहराने वाले अनुभवीमूर्त बच्चों को ... साथ-साथ देश वा विदेश के दूरबीन लिए हुए बच्चों को, विश्व के अन्जान बच्चों को भी बापदादा याद-प्यार रे रहे हैं। सर्व आत्माओं को यथा स्नेह तथा स्नेह सम्पन्न याद-प्यार और वारिसों को नमस्ते।''

अ.बापदादा 5.12.83

''जानते हो आजकल आत्माओं में अशान्ति और दुख की लहर छाई हुई है। तो आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं को अपनी वंशावली के ऊपर रहम आता है? ... सारे विश्व की आत्माओं के निमित्त हैं, यह स्मृति रहती है? सारे विश्व की आत्माओं को आपके सकाश की आवश्यकता है।''

अ.बापदादा 02.02.04

''कोई भी धर्म की आत्मायें हैं, जब उनसे मिलते हो तो अपने को सर्वात्माओं के पूर्वज समझकर मिलते हो? ... अगर उस पूर्वज के नशे से, स्मृति से, वृत्ति से, दृष्टि से मिलते हो तो उन्हों को भी अपनेपन का आभास होता है क्योंकि आप सर्व के पूर्वज हो, सब के हो। ऐसी स्मृति से सेवा करने से हर आत्मा अनुभव करेगी कि यह हमारे ही पूर्वज वा इष्ट फिर से हमें मिल गये।''

अ.बापदादा 02.02.04

भारत और विदेश का तुलनात्मक अध्ययन

ज्ञान सागर परमात्मा भारत में आकर यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग सिखलाते हैं, जिससे भारत स्वर्ग बनता है और सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। उस ज्ञान और राजयोग से ही सारे विश्व का कल्याण होता है, सारे विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना होती है। साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी के ज्ञान के अधिकांश अविष्कार विदेशों की आत्माओं के द्वारा होते हैं, जिससे वर्तमान में भी किसी हद तक आत्माओं को सुख मिलता है और नये विश्व के निर्माण में भी वह काम आती है। ईश्वरीय कार्य में भी उसका सहयोग मिलता है, इसलिए बाबा उन अविष्कार करने वाले बच्चों को भी याद करते हैं, उनको बधाई देते हैं। विनाश की जो सामग्री बनाई है, उसके लिए भी बाबा उनको याद करते हैं क्योंकि अन्त में सहज इस पुरानी दुनिया का विनाश हो जाये, जिससे आत्माओं को अधिक दुख न भोगना पड़े।

''अब इस पुरानी दुनिया का विनाश भी जरूर होना है। ... एक से अनेक धर्म हुए हैं फिर एक जरूर होना है। ... गायन है ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अन्धेर विनाश। ... भारतवासी इतना नहीं समझते, जितना विदेश वाले समझते हैं कि हम अपने ही कुल का विनाश कर रहे हैं। ... यह भी समझते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइज था। इन गॉड-गॉडेज का राज्य था। भारत ही प्राचीन था। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है।''

सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

''ज्ञान सागर एक ही भगवान है, जो सारी दुनिया को वाइसलेस बनाते हैं। भारत वाइसलेस था तो सारी दुनिया वाइसलेस थी। भारत को वाइसलेस बनाने से सारी दुनिया वाइसलेस हो जाती है।

भारत को वर्ल्ड नहीं कहेंगे। भारत तो एक खण्ड है वर्ल्ड में। बच्चे जानते हैं नई दुनिया में सिर्फ एक भारत खण्ड होता है। भारत सचचाण्ड था, सृष्टि के आदि में देवता धर्म ही था, उसको ही कहा जाता है निर्विकारी पवित्र धर्म।''

सा.बाबा 31.7.04 रिवा.

''सारा मदार पुरुषार्थ पर है। बाप बच्चों को घर ले जाने के लिए आये हैं। अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो पाप कटते जायेंगे। ... अभी भारत का कितना बुरा हाल हो गया है। ... विश्व के मालिक सिर्फ देवी-देवता ही बनते हैं। ... क्रिश्चियन लोग कहते हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइज था। उन्होंकी न पारसबुद्धि बनती है और न पत्थरबुद्धि बनती है। भारतवासी ही पारसबुद्धि और पत्थरबुद्धि बनते हैं। ... बाप से ही बेहद का वर्सा मिलता है। पांच हजार वर्ष पहले भारत में स्वर्ग था।''

सा.बाबा 20.7.04 रिवा.

''साइन्स वाले भी कितने होशियार होते जाते हैं। इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। भारतवासी हर बात का अक्ल वहाँ से सीखकर आते हैं। वे साइन्स वाले भी पिछाड़ी में आयेंगे तो इतना ज्ञान उठायेंगे नहीं। वे वहाँ भी आकर यही इन्जीनियरिंग आदि का काम करेंगे, राजा-रानी तो बन न सकें। ... भारत में जब से रावण आता है तो पहले-पहले घर में लड़ाई शुरू होती है। फिर बाहर वाले आकर रिश्वत आदि देकर अपना राज स्थापन कर लेते हैं।''

सा.बाबा 12.7.04 रिवा.

''भारतवासी ही वैकुण्ठ स्वर्ग को याद करते हैं, और धर्म वाले वैकुण्ठ को याद नहीं करते। वे सिर्फ शान्ति को याद करेंगें, सुख को याद कर न सकें। लॉ नहीं कहता कि वे स्वर्ग को याद करें। ... भारत ही पवित्र था, अब अपवित्र है, तो अपने को हिन्दू कहलाते हैं। हिन्दू धर्म तो कोई है नहीं।''

सा.बाबा 12.7.04 रिवा.

''एक दिन ऐसा भी आयेगा जो दुनिया बहुत खाली हो जायेगी। सिर्फ भारत ही रहेगा। आधा कल्प सिर्फ भारत ही होगा, तो कितनी दुनिया खाली हो जायेगी। ऐसा ख्याल कोई की बुद्धि में नहीं होगा, सिवाए तुम्हारे। फिर तो तुम्हारा कोई दुश्मन भी नहीं होगा। दुश्मन क्यों आते हैं? धन के पिछाड़ी। भारत में इतने मुसलमान और अंग्रेज क्यों आये ? ... पैसा लेकर खाली करके गये। पैसा तो तुमने आपेही भी खत्म कर दिया, ड्रामा प्लैन अनुसार।''

सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

''कोई मरता है तो समझते हैं वैकुण्ठ गया। परन्तु वैकुण्ठ है कहाँ? यह वैकुण्ठ का नाम तो

भारतवासी ही जानते हैं और धर्म वाले जानते ही नहीं, सिर्फ नाम सुना है, चित्र देखे हैं। ... तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हम उस पार जा रहे हैं। अनेक बार तुम बच्चे स्वर्ग में गये होंगे।''

सा.बाबा 11.2.04 रिवा.

''तुम्हारी माया के साथ युद्ध है तो वह भी हैरान करती है। सतयुग में यह नहीं होगा। दूसरे कोई धर्म में ऐसी बात होती नहीं। रावण राज्य और राम राज्य को और कोई धर्म वाले समझते ही नहीं हैं।''

सा.बाबा 06.09.04 रिवा.

भारत और विभिन्न धर्म, देश, सभ्यताओं का अस्तित्व

Q. विभिन्न खण्डों में पहले जो आदि वासी रहते थे, वे किस धर्म के कहे जायेंगे ? क्या वे विनाश के समय उन खण्डों में बच जाते हैं या क्या होता है और वे कहाँ से आते हैं ?

कल्पान्त में विनाश के समय जब अणु-युद्ध होता है, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदायें आती हैं और पृथ्वी का अधिकांश भूभाग जलमग्न हो जाता है तथा सभी भूखण्ड जो अभी अलग-अलग हैं, वे सब एक साथ हो जाते हैं और जलमग्न हो जाते हैं। उस समय केवल भारत ही जल से ऊपर बचता है और वहाँ पर ही कुछ जनसंख्या तथा कुछ प्राणी बीजरूप में बचते हैं। उसके बाद धीरे-धीरे जलमग्न भूभाग से थोड़ा-थोड़ा ऊपर आता जाता है और वहाँ पर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की जो आत्मायें बचती हैं, वे विस्तार को पाती जाती हैं। उस समय सारे विश्व पर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मायें ही होती हैं और उनका ही राज्य होता है, जिसका केन्द्रबिन्दु वर्तमान भारत होता है। उस समय पृथ्वी के जो अभी अलग-अलग खण्ड हैं वे एक साथ ही होते हैं या ऐसे कहें कि उस समय एक एशिया खण्ड ही होता है परन्तु उसका रूप वर्तमान एशिया खण्ड से भिन्न होता है। फिर द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो भी पृथ्वी पर उथल-पाथल होती है, भूकम्प आदि आते हैं, जिससे पृथ्वी जो कल्पान्त में 90 अंश की डिग्री पर सीधी हो

जाती है, वह फिर साढ़े तेईस अंश पर झुक जाती है, जिससे जल-प्रवाह में महान अन्तर आता है और अनेक भूभाग जो एक साथ थे वे पुन: अलग-अलग हो जाते हैं, जिससे उस समय देवी-देवता धर्म वाले जो जिस भूभाग में होते हैं, वे वहीं रह जाते हैं क्योंकि उस समय आने-जाने के साधन नहीं रहते हैं और वे नष्टोमोहा होने के कारण एक-दूसरे को खोजने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं करते हैं। धीरे-धीरे वे देवी-देवता धर्म वाली आत्मायें ही वहाँ के आदि वासी बन जाते हैं और विसतार को पाते रहते हैं। फिर जब अन्य धर्म स्थापन होते हैं, जो प्राय: एशिया खण्ड में ही होते हैं और उनका उसके आसपास ही विस्तार होता है। बाद में आवश्यकता और इच्छा अनुसार उस धर्म की आत्मायें अन्य भूभागों की खोज करते हैं जैसे वास्को-डि-गामा ने भारत की खोज की, कोलम्बस जो भारत की खोज में निकला तो अमेरिका पहुँच गया, ऐसे ही अन्य देश-धर्म वाले भी इधर-उधर जाते हैं और वहाँ पर अपने धर्म और सभ्यता का विस्तार करते हैं। वे वहाँ के आदि वासियों को अपने धर्म में परिवर्तन करते हैं और उन पर अपना शासन करने लगते हैं क्योंकि बाद में आने वाले धर्म और सभ्यतायें नई होती हैं, उनकी आत्मायें ऊपर से नई आती हैं, जिससे उनमें आत्मिक और बौद्धिक ताकत होती है।

इस प्रकार हम देखें तो जब तक क्रिश्चियन धर्म के लोग अमरीका और अफ्रीका आदि में नहीं पहुचे थे तो वहाँ के रहने वाले भले वे आदिवासी रूप में थे परन्तु वे आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश के ही होते हैं, जो बाद में क्रिश्चियन बन जाते हैं। ये भी विचारणीय है कि वे आत्मायें देवी-देवता धर्म में भी बाद में आने वाली आत्मायें ही होती हैं क्योंकि वे ही वर्तमान भारत से सुदूर में जाकर बसते हैं और वे भूभाग ही मूल भाग से अलग होते हैं। इस प्रकार द्वापर युग के बाद अन्य देशों, खण्डों, धर्मों और सभ्यताओं का विस्तार होता है।

वृक्ष के विस्तार पर विचार करें तो मूल तने के आसपास नये रेशे उसका विस्तार करते हैं और उनसे ही नई शाखायें निकलती हैं, ऐसे ही इस कल्पवृक्ष में भी बाद में देवी-देवता धर्म में आने वाली आत्माओं के द्वारा अन्य धर्मों की आत्मायें आकर अपने धर्मवंश की स्थापना करती हैं और वे ही उसमें परिवर्तन होती हैं और जब द्वापर के आदि में जब भूकम्प आदि में अन्य खण्ड अलग होते हैं तो वे आत्मायें ही ड्रामानुसार स्वत: उन भूखण्डों पर चली जाती हैं।

इस प्रकार से कल्पान्त का परिवर्तन और कल्प के मध्य का परिवर्तन होता है, जो पृथ्वी का रूप परिवर्तन कर देता है।

भारत और विश्व की बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी

(Religio-Political History-Georaphy and Spiritual Knowledge of the World)

भारत और विश्व के इतिहास-भूगोल एवं आध्यात्मिक ज्ञान को हम देखें तो सारे विश्व का इतिहास और भूगोल भारत के आसपास ही चक्कर लगाता है तथा भारत ही आध्यात्मिकता की जननी है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के मूल स्रोत परमपिता परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, जहाँ से वे ज्ञान की गंगा बहाते हैं, जो सारे विश्व की आत्माओं को पावन करती है।

भारत और भारतवासी जब पावन बनते तो सारा विश्व पावन बन जाता है और विश्व के भूगोल में आमूल परिवर्तन होता है। आत्मायें भी सतोप्रधान बनती हैं, तो उनके लिए प्रकृति भी सतोप्रधान बन जाती है और सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है। जब भारतवासी देहाभिमानी बनते और देहाभिमान के वशीभूत पतित-विकारी बनते तो भी सारे विश्व के भूगोल में आमूल परिवर्तन होता है और प्रकृति रजोप्रधान बन जाती, जिसके कारण वह आत्माओं को उनके कर्मानुसार दुख और सुख दोनों देती है। इतिहास में भी सतयुग-त्रेता में विश्व जो स्वर्ग था, जहाँ देवी-देवतायें राज्य करते थे, वह स्वर्गिक विश्व नर्क बन जाता है और धीरे-धीरे रौरव नर्क की ओर अग्रसर होता जाता है। विश्व में पवित्रता को थमाने के लिए विभिन्न धर्मवंश स्थापन होते हैं परन्तु देहाभिमान के कारण सब में परस्पर भेदभाव, ईर्ष्या-द्वेष आदि पैदा हो जाता है, जो उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता रहता है।

''तुम बच्चों को स्कूलों में जाकर समझाना है - तुम्हारी है हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इसको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं कहेंगे। ... यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी। इसमें तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान आ जाता है।''

सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

परमपिता परमात्मा ने आकर हमको इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है और हमको श्रीमत दी है कि तुम यह हिस्ट्री-जॉग्राफी सारे विश्व की आत्माओं को बताओ, स्कूल-कालेजों में भी ये हिस्ट्री-जॉग्राफी बताओ। बाबा ने इस ज्ञान को रिजीजियो-पॉलिटीकल स्प्रीचुअल नॉलेज, हिस्ट्री-जॉग्राफी एण्ड फिलॉसॉफी ऑफ दि वर्ल्ड कहा है क्योंकि बाबा ने हमको सर्व धर्मवंशों, राज्य-सत्ताओं, आध्यात्मिकता, विभिन्न दर्शनों और सतयुग से कलियुग अन्त तक तीनों लोकों में होने वाले क्रिया-कलापों और भौगोलिक परिवर्तनों का स्पष्ट ज्ञान दिया है। परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे विश्व में एक धर्म और एक राज्य की स्थापना होती है और सारा विश्व सुख-शान्ति सम्पन्न बन जाता है। सृष्टि के बीजरूप निराकार ज्ञान का सागर शिवबाबा ही इस सत्य का ज्ञान देने और विश्व में सुख-शान्ति स्थापन करने में समर्थ हैं, इसलिए वे ही

आकर यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं अर्थात् वे ही आकर तीनों लोकों और तीनों कालों का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे विश्व में सुख-शान्ति-सम्पन्नता की स्थापना होती है। ये कर्तव्य कोई मनुष्य नहीं कर सकता है, इसलिए सभी धर्म वाले परमात्मा को ही याद करते हैं।

जो आत्मा इस सत्य ज्ञान को समझ लेती है और निश्चयबुद्धि होकर इसकी सत्यता को अनुभव करती है, वह इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करती है, उसका जीवन परमानन्दमय हो जाता है क्योंकि वह जीवन के हर क्षेत्र में अपने को विजयी अनुभव करती है।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

इस सम्बन्ध में परमात्मा ने हमको क्या-क्या ज्ञान दिया है, उनके विषय में संक्षिप्त में यहाँ विचार करते हैं। बाबा बताया है -

1. ये सृष्टि एक नाटक है, जो 5000 वर्ष तक चलता है और हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। यह साकार सृष्टि एक नाटकशाला है, जहाँ ये बेहद का नाटक चलता है और सूर्य-चाँद-तारे इसको प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का यह खेल अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल चलता रहेगा। परमात्मा सहित सभी आत्मायें इस नाटक में पार्टधारी हैं और परमधाम के रहने वाले हैं। सभी पार्टधारी अपने समय पर परमधाम घर से आकर यहाँ पार्ट बजाते हैं।

2. स्वर्ग और नर्क क्या है? स्वर्ग और नर्क दोनों इस साकार वतन में ही होते हैं। यही सृष्टि स्वर्ग बनती है और यही सृष्टि नर्क बनती है। जब नर्क बन जाती है, तब परमात्मा पिता आकर इसको स्वर्ग बनाते हैं। परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, जो आकर इस सृष्टि-चक्र की नई कलम लगाते हैं। सृष्टि-चक्र की कलम भारत से ही लगती है अर्थात् सृष्टि-चक्र के आदि में भारत ही होता है, जहाँ से देवी-देवताओं की सभ्यता विस्तार को पाती है और अन्त में भारत ही बचता है अर्थात् विनाश के समय भारत में ही कुछ मनुष्यात्मायें बच जाती हैं, जिससे नये विश्व की कलम लगती है।

3. सतयुग के आदि में अर्थात् स्वर्ग के आदि में भारत से इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है और ये सृष्टि रूप वृक्ष विस्तार को पाता है। सतयुग-त्रेता में सारा विश्व भारत ही होता है परन्तु उस समय इसका नामकरण भारत नहीं होता है। सतयुग आदि से आरम्भ होकर त्रेता अन्त तक

देवी-देवताओं की सभ्यता होती है, जो वर्तमान भारत से आरम्भ होकर समस्त एशिया खण्ड और दक्षिणी योरोप तथा उत्तरी अफ्रीका तक विस्तार को पाती हैं अर्थात् भारत की दैवी सभ्यता की सीमायें वहाँ तक होती हैं।

4. त्रेता के बाद द्वापर के आदि से विश्व में अन्य धर्मवंशों की स्थापना होती है, जिससे विश्व में जनसंख्या विस्तार को पाती है, अन्य भूखण्ड भी अस्तित्व में आते हैं, जहाँ जनसंख्या का विस्तार होता है और विस्तार को पाते-पाते विश्व वर्तमान स्वरूप में आ जाता है।

5. बाबा ने यह भी बताया है कि हर धर्मवंश के धर्म-स्थापक की आत्मा परमधाम से आकर देवी-देवता धर्मवंश की किसी न किसी (परन्तु वे उस समय देवी-देवता के रूप में नहीं होते हैं) आत्मा के तन में प्रवेश करती है और उसके द्वारा अपने धर्मवंश की स्थापना का ज्ञान देकर अपने धर्मवंश की स्थापना करती है। पहले उसमें कुछ दैवी धर्मवंश की आत्मायें परिवर्तित होती है, बाद में उस धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आती जाती हैं और वह धर्म वृद्धि को पाता जाता है।

6. परमात्मा सर्वात्माओं का अनादि पिता है, जिनका अवतरण भारत में ही होता है और ब्रह्मा सर्व धर्मों का आदि पिता है, सर्व मनुष्यात्माओं का आदि पिता है, जिसके तन में ही परमात्मा प्रवेश करते हैं, इसलिए सभी धर्मवंश वाले ब्रह्मा को भिन्न नाम से मानते हैं और प्राय: सभी मुख्य धर्मवंशों ने भारत पर आकर राज्य किया है अर्थात् अपना वर्सा प्राप्त किया है क्योंकि परमात्मा भारत को ही स्वर्ग बनाते हैं।

7. रामराज्य और रावण राज्य क्या है और कहाँ होता है, इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा दिया है कि रामराज्य भी सारे विश्व पर होता है और रावणराज्य भी सारे विश्व पर होता है। भले ही रामराज्य के समय विश्व छोटा होता है और रावणराज्य के समय विश्व विशाल होता है। रामराज्य और रावणराज्य की स्थापना कैसे होती है, उसका इतिहास भी बाबा ने बताया है कि राम अर्थात् परमात्मा पिता शिव कल्प के संगमयुग पर रामराज्य स्थापन करते हैं और रावणराज्य आत्माओं के परमपिता परमात्मा को भूलने के कारण समय की गति के साथ देहाभिमान में आने से स्वत: हो जाता है क्योंकि रावण का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। काल-चक्र में समय की गति के कारण जब आत्मा अपने अस्तित्व, गुणों-शक्तियों को भूलकर देहाभिमान के वश हो जाती है तब त्रेता के अन्त और द्वापर आदि के संगमयुग पर रावणराज्य आरम्भ हो जाता है।

8. महाभारत का यथार्थ ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है कि उसमें न केवल हिंसक युद्ध होता है बल्कि उसमें अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदायें अर्थात् पांचों तत्वों का प्रकोप भी साथ ही होता है। प्राकृतिक आपदायें पुरानी दुनिया के विनाश में भी सहयोगी बनती हैं तो गृह-युद्ध और

अणु-युद्ध से जो प्रदूषण होता है, उसकी सफाई भी प्राकृतिक आपदायें ही करती हैं। प्रथम विश्व-युद्ध और द्वितीय विश्व-युद्ध का इतिहास तो विश्व में अनेकानेक लोग जानते हैं और तृतीय विश्व-युद्ध की आशंका भी अनेक लोग और वैज्ञानिक करते हैं परन्तु उसमें अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदायें साथ-साथ भाग लेंगी तथा उसके बाद विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना होगी, इस सत्य को कोई नहीं जानते हैं, जो परमात्मा पिता ने ही बताया है। जिस हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानकर हम आत्मायें निश्चिन्त, निर्भय, निर्संकल्प हो गई हैं। विश्व-कल्याणकारी, प्यार के सागर परमात्मा पिता ने अन्य आत्माओं को भी निश्चिन्त, निर्भय और निर्संकल्प करने के लिए हमको ये बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सबको बताने की सेवा दी है क्योंकि परमात्मा सर्वात्माओं के कल्याणकारी हैं।

9. महाभारत में कौरव-पाण्डव और यादव सेना का इतिहास भी परमात्मा ने बताया है कि महाभारत अर्थात् तृतीय विश्व-युद्ध में भारत में कौरव अर्थात् भारत की अज्ञानी आत्मायें दो भागों में बंटकर गृह-युद्ध में भाग लेंगी और शेष विश्व में अणु-युद्ध होगा। प्राकृतिक आपदायें सारे विश्व में विनाश और सफाई का काम करेंगी। पाण्डव जो परमात्मा से प्रीतबुद्धि हैं, वे तटस्थ होकर सारा खेल देखेंगे, वे ही विजयी होंगे और उनमें से ही कुछ पाण्डव बनेंगे, जिससे नये विश्व की कलम लगेगी।

10. इस सम्पूर्ण सृष्टि के तीन भाग हैं, जो तीन लोकों के रूप में जाने जाते हैं। परमधाम को ब्रह्मलोक या निराकारी दुनिया (Incorporial World) या सातवां आसमान आदि के रूप में जाना जाता है, जो सर्व आत्माओं का मूल निवास स्थान है। यह ब्रह्म लोक साकार लोक अर्थात् आकाश तत्व और सूक्ष्म लोक से भी परे है। उस निराकारी दुनिया में सभी धर्मवंश की आत्मायें अपने-अपने धर्मवंश की आत्माओं के साथ समूह रूप में रहती है। ये संगठन की क्रिया परमधाम में स्वत: होती है क्योंकि वहाँ आत्माओं को न देह है और न कोई संकल्प है।

ब्रह्मलोक के बाद सूक्ष्मलोक है, जहाँ आत्माओं के सूक्ष्म शरीर होते हैं। वहाँ आवाज़ नहीं होती परन्तु कर्म चलता है अर्थात् सारी कारोबार मूवी में चलती है। यह सूक्ष्मलोक ब्रह्म महतत्व और आकाश तत्व के समिश्रण से निर्मित हुआ है। सूक्ष्म लोक में कारोबार संगमयुग पर ही चलती है, जब परमात्मा का इस सृष्टि पर अवतरण होता है। वहाँ परमात्मा पिता ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर की रचना करके उनके द्वारा इस नये कल्प वृक्ष की कलम का सारा कारोबार करते हैं। सूक्ष्म लोक का क्षेत्र तो सारे कल्प में रहता है परन्तु वहाँ न कोई क्रिया-कलाप होता है और न ही मनुष्यों को उसका यथार्थ ज्ञान होता है। नाम मात्र तीन लोकों का वर्णन होता है।

इस सृष्टि रूपी नाटक का सारा कारोबार इस साकार वतन अर्थात् स्थूल लोक में ही चलता है अर्थात् यहीं पर स्वर्ग-नर्क, पतित-पावन, सुख-दुख, हार-जीत, रावणराज्य-रामराज्य का कारोबार होता है। ये साकार लोक पंच तत्वों से निर्मित हुआ है और निराकार आत्मायें पंच तत्वों से निर्मित देह रूपी वस्त्र धारण कर अपना-अपना पूर्व-निश्चित पार्ट बजाती हैं।

11. इस साकार लोक में जॉग्राफीकल और हिस्टोरीकल क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, वह भी परमात्मा ने बताया है कि जब इस सृष्टि में योगबल की कारोबार चलती है अर्थात् योगबल से जन्म होता है तो भी इस धरा पर विशाल परिवर्तन होता है। प्राकृतिक आपदायें आदि आती हैं, जिससे ये जो वर्तमान पृथ्वी साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश पर सीधी हो जाती है, जिससे सागर के जल में, नदियों के बहाव में परिवर्तन होता है। भूकम्प आदि के कारण अनेक पर्वतीय भाग अन्दर धंस जाते हैं और नये भूभाग अस्तित्व में आ जाते हैं, सृष्टि पर सदाबहार मौसम हो जाता है। ऐसे ही जब द्वापर से जब आत्माओं में योगबल खत्म हो जाता है और भोगबल अर्थात् काम-विकार के द्वारा सन्तानोत्पत्ति की प्रथा प्रचलित होती है तब भी यहाँ पर अनेक प्रकार के भूकम्प आदि होते हैं, जिससे जो पृथ्वी 90 अंश पर सीधी होती है, वह साढ़े तेईस अंश पर झुक जाती है, जिससे सागर में, नदियों के बहाव में विशाल परिवर्तन होता है। उसके कारण जो देवी-देवताओं की सभ्यता एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा के रूप में विस्तार को पायी हुई होती है, उसके अवशेष भी खत्म हो जाते हैं और वे भूभाग विघटित होकर अनेक भूभागों में बंट जाती है। पुरानी दैवी सभ्यता के अवशेष भूगर्भ या सागर में समा जाते हैं, नये भूभाग अस्तित्व में आ जाते हैं।

12. कल्पान्त में जब इस सृष्टि पर परिवर्तन होता है तो वर्तमान जगत के अनेक भूभाग जलमग्न हो जाते हैं और जब द्वापर से परिवर्तन होता है तो फिर ये भूभाग अस्तित्व में आते हैं अर्थात् सागर के बाहर आते हैं, जो धीरे-धीरे विस्तार को पाते जाते हैं।

13. इस विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान परमात्मा ने दिया है, जिससे ये तथ्य सामने आया है कि परिवर्तन की सतत प्रक्रिया के आधार पर इस विश्व के जड़ तत्वों का अणु-परमाणु 5 हजार वर्ष के बाद पुनरावृत्त होता है अर्थात् अपने 5 हजार वर्ष पहले वाले स्थान पर अवश्य आ जाता है। ऐसे ही आत्माओं का पार्ट भी 5 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इस राज़ के उद्घाटन से सृष्टि रचना की जो जटिल पहेली उलझी हुई थी, वह भी सुलझ गई है अर्थात् वह भी समझ में आ गई है।

14. कल्पान्त में महाविनाश के बाद विश्व की जो स्थिति बनती है, वह सुख-शान्ति सम्पन्न होती

है। वहाँ पर पृथ्वी धन-धान्य से सम्पन्न होती है, आत्मायें आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न होती हैं, खानियां रतनों से भरपूर होती हैं, प्राणियों में प्रेम होता है, प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होती है, सदा बहार मौसम होता है। ऐसी सृष्टि को सभी धर्मों की आत्मायें स्वर्ग, जन्नत, हेविन आदि के रूप में याद करते हैं।

15. परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उससे आत्मा का अस्तित्व समझ में आया है और कैसे आत्मा-परमात्मा अलग-अलग हैं। आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों से संगठित एक अविनाशी चेतन सत्ता है। संसार एक नाटक हैं, जहाँ आत्मायें परमधाम से आकर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। ये सब इतिहास समझ में आया है।

16. आत्माओं के परस्पर अच्छे या बुरे हिसाब-किताब कैसे सारे कल्प चलते हैं और कैसे सारे कल्प के हिसाब-किताब का संचित खाता कल्पान्त में चुक्ता होता है। इन हिसाब-किताब का कोई हिसाब रखने वाला नहीं है परन्तु फिर भी हिसाब रहता है और चुक्ता होता है। जिसके लिए परमात्मा स्वयं भी वण्डर खाते हैं कि कैसे आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है, कैसे ये विश्व-नाटक सारे कल्प चलता है।

17. हर आत्मा के अच्छे-बुरे कर्मों का फल भी हर आत्मा को बिल्कुल एक्यूरेट सुख-दुख के रूप में मिलता है। धर्मराज का नाम तो गाया हुआ है परन्तु शिवबाबा ने यह भी बताया है कि अलग से धर्मराज का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, ये तो सब इस ड्रामा में अनादि-अविनाशी नूँध है, जिसके आधार पर साक्षात्कार होता है, कर्म का फल मिलता है। धर्मराज तो प्रकृति के यथार्थ निर्णय का प्रतीकात्मक स्वरूप है। इस हिसाब-किताब के विधि-विधान का अंशमात्र में अन्य धर्मों में भी वर्णन है कि कयामत के समय परमात्मा सर्वात्माओं को कब्र से जगाकर हिसाब करता है।

18. हर आत्मा ड्रामा अनुसार कर्म करने और कर्म का फल भोगने के लिए बाध्य है, फिर भी पुरुषार्थ का विशेष महत्व है, जिसके लिए परमात्मा आकर पुरुषार्थ कराते हैं क्योंकि ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है।

19. सारे विश्व के इतिहास, भूगोल और आध्यात्मिकता (Spiritual History and Georaphy of the World) का केन्द्र-बिन्दु भारत है, जहाँ कल्प-कल्प कल्पान्त में सृष्टि के बीजरूप ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर कल्प-वृक्ष की कलम लगाते अर्थात् कल्प-वृक्ष का प्रत्यारोपण करते हैं, जिसकी शाखायें-प्रशाखायें बाद में सारे विश्व में फलती-फूलती और विस्तार को पाती हैं। भारत में ही परमात्मा आकर आध्यात्मिकता की गंगा बताते हैं, जो बहते हुए सारे विश्व में जाती है और सारे विश्व को सर-सब्ज करती है।

20. जब नये चक्र की आदि अर्थात् सतयुग की आदि अर्थात् नई दुनिया की आदि होती है तो उस समय सारे विश्व की जनसंख्या केवल 9,16,108 के लगभग होती है, जो सतयुग के अन्त तक दो करोड़ के लगभग हो जाती है और त्रेता के अन्त तक 33 करोड़ के लगभग हो जाती है। विचार करें तो इस धरा पर 500 करोड़ के लगभग मनुष्यात्मायें संगमयुग पर ही परमधाम से उतरी हैं। उसके पहले तो बहुत कम मनुष्यात्मायें इस धरा पर थी। सन् 1944-45 की जनगणना में सारे विश्व की जनसंख्या 200 करोड़ से भी कम थी।

21. परमात्मा आकर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं, जो कलियुग के अन्त में प्रजातन्त्र के रूप में बदल जाती है। वास्तव में विश्व राजशाही में ही सुखी था, जब राजायें चरित्रवान थे और उन्हीं के अनुरूप प्रजा भी चरित्रवान थी। जब राजायें भोगी-विलासी, काम-क्रोध-लोभादि विकारों के वशीभूत हो गये तो प्रजा भी वैसी ही हो गई, जिससे राजा-प्रजा के मध्य दूरी बढ़ती गई। जिसके फलस्वरूप कलियुग के अन्त में प्रजा ने राजाओं को नकार दिया और प्रजा पर प्रजा का राजतन्त्र स्थापित हो गया अर्थात् प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था बन गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्प-कल्प पुरानी दुनिया का विनाश अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा होता है और इस ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के द्वारा नई दुनिया की स्थापना होती है। ये सारा विश्व-नाटक 5 हजार वर्ष का है, जो हर पांच हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। भारत ही स्वर्ग और भारत ही नर्क बनता है। दूसरे धर्म और देश तो इस विश्व-नाटक के बाइ-प्लॉट्स हैं। सबका मूल भारत ही है। ये सब राज़ परमात्मा ने अभी बताया है।

''परमपिता परमात्मा तो रहते हैं परमधाम में। जरूर कोई समय में उनका यह भारत ही घर होता है, तब तो शिवरात्रि मनाई जाती है। ... भारत खण्ड में ही उनका आना होता है। ... शिवरात्रि और कृष्ण जयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने। बस एक ही बार पावन बना देते हैं, फिर आते ही नहीं हैं। ... स्वर्ग-नर्क यह नाम भी भारत पर ही पड़ा है।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''जितनी भारतवासियों की चढ़ती कला और उतरती कला होती है, उतना और कोई की भी नहीं होती है। भारत ही श्रेष्ठाचारी और भ्रष्टाचारी बनता है। भारत ही निर्विकारी और भारत ही विकारी बनता है। ... अभी भारतवासियों की चढ़ती कला है। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।''

सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

''ऐसे नहीं कि बाप कोई नई सृष्टि रचते हैं। बाप तो आकर पुरानी को नया बनाते हैं। बाप ने भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया है, उसका यादगार सोमनाथ का मन्दिर सबसे बड़ा बनाया है। भारत में एक देवी-देवता धर्म था, और कोई धर्म नहीं थे। और सभी धर्म तो बाद में स्थापन हुए हैं।''

सा.बाबा 19.5.07 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी तुम बच्चे ही जानते हो, और कोई जान न सके। ... ऐसे भी बहुत लोग कहते हैं कि महाभारत युद्ध को 5 हजार वर्ष हुए। यह फिर से वही लड़ाई है, तो जरूर गीता का भगवान भी होगा।''

सा.बाबा 25.5.07 रिवा.

''सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, फिर क्या हुआ ? ... कितना समय राज्य किया और कितनी एरिया पर राज्य किया ? ... वहाँ भारत में बेहद का राज्य चलता है, कोई पार्टीशन आदि नहीं होते हैं। ... अब बेहद का बाप बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, 84 के चक्र में वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आ जाती है। ... भारत में पवित्रता-सुख-शान्ति सब थी।''

सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

''अब यह नाटक पूरा होता है, अब वापस जाना है बाबा के पास। तुम यह भी जानते हो कि सिवाए भारत के और कोई खण्ड स्वर्ग बन नहीं सकता। ... यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। हर एक आत्मा को अनादि पार्ट मिला हुआ है। आत्मा अविनाशी है।''

सा.बाबा 30.5.07 रिवा.

''यह भी विचार सागर मन्थन करना होता है कि पब्लिक को यह कैसे बतायें। ... भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी में नई दुनिया का सम्वत् भी दिखाना चाहिए। नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''विश्व की यह हिस्ट्री-जॉग्राफी अच्छी तरह समझानी है। ... भारत का सम्वत् ही गुम कर दिया है। जो पूज्य देवी-देवतायें थे, उनका सम्वत् ही गुम कर दिया है। पुजारियों का सम्वत् है। अशोक पिलर कहते हैं परन्तु द्वापर से अशोक तो कोई होता ही नहीं है। ... अशोक कह देते परन्तु यहाँ अशोक कोई है नहीं।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''ये बातें सुनेंगे वे ही, जो कल्प पहले स्वर्ग में सुखी थे। जो वहाँ थे ही नहीं, वे सुनेंगे भी नहीं।... तुम समझते हो कि भारत पहले क्या था, फिर डाउनफॉल कैसे हुआ। ... तुमको खुशी है - विश्व

का बेड़ा डूबा हुआ है, उसको हम बाबा की नॉलेज द्वारा सेलवेज कर रहे हैं।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''तुमको रात दिन यही तात लगी रहनी चाहिए कि लोगों को यह कैसे समझायें। ... मूलवतन से निराकारी झाड़ से आत्मायें नम्बरवार आती रहती हैं। ... तुमको यह नॉलेज अभी दी गई है कि दूसरों को भी समझाओ। ... अपने-अपने समय पर हर एक आत्मा की महिमा होती है।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''बाप को समझने से तुम सब कुछ जान जाते हो। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो जरूर वर्ल्ड का रचयिता बीजरूप बाप ही सुनायेंगे। वही नॉलेजफुल है।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''सूर्यवंशी घराना, फिर चन्द्रवंशी घराना ... फिर संगमयुग पर बाप आकर शूद्रवंशियों को ब्राह्मण वंशी बनाते हैं। ... अगर सच्ची कथा सुनते और सुनाते रहें तो बुद्धि से झूठ निकल जाये।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''अभी तुम जानते हो कि हम आलराउण्ड 84 जन्मों का चक्कर लगाते हैं। ... आधा कल्प सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राज्य चलता है। ... फिर आधा कल्प भक्ति मार्ग चलता है। यह है ज्ञान मार्ग, इसको संगमयुग कहते हैं।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''इस समय कब्रिस्तान है, यही फिर परिस्तान बनेंगा। यह खेल है कब्रिस्तान और परिस्तान का। बाप परिस्तान स्थापन करते हैं, जिसको सब याद करते हैं। ... जब तक बाप को नहीं जाना है तब संशयबुद्धि ही रहेंगे। संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''अभी बॉम्बस निकाले हैं, नहीं तो सारी दुनिया का विनाश कैसे हो। उसके साथ फिर नेचुरल केलेमिटीज़ भी हैं। ... अभी तुम्हें अपना सब कुछ इन्श्योर करना है बाप के पास। ... अभी तुम डायरेक्ट इन्श्योर करते हो। जो सबकुछ इन्श्योर करेगा, उनको बादशाही मिल जायेगी। यह बाबा अपना बताते हैं - सबकुछ शिवबाबा को दे दिया। फुल इन्श्योर कर लिया तो फुल बादशाही मिलती है।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''नॉलेज से वर्सा लेना है। जीवनमुक्ति का वर्सा तो सबको मिलता है परन्तु स्वर्ग का वर्सा राजयोग

सीखने वाले ही पाते हैं। गति-सद्गति तो सबकी होनी है ना। सबको बाप वापस ले जायेंगे।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''स्वर्ग में राजा-प्रजा दोनों के लिए कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती है, जिसके लिए इन्वेन्शन आदि निकालें। ... इन लक्ष्मी-नारायण की हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको पता नहीं है। अभी तुमको कितनी ऊंच शिक्षा मिलती है। देने वाला है ही एक बाप। ... सारा दिन इन बातों में रमण करते हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिर शूटिंग होती जाती है परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती रहती है। ... भारत वाइसलेस था, अभी विशश है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा ? यह बाप ही समझाते हैं। भगवानुवाच - मामेकम् याद करो। ... गीता में भी है - हे बच्चो, तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

''भारत जैसा ऊंच सम्पत्तिवान और कोई हो नहीं सकता। भारत खण्ड है सबसे ऊंच। पावन भी यह भारत ही है तो पतित भी यह भारत ही बनता है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही यह चक्कर लगाकर शूद वर्ण में आते हैं। ... देवताओं से भी ब्राह्मण वर्ण ऊंच चोटी पर है।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''तुमको शिवशक्ति पाण्डव सेना कहा जाता है। योरोपवासी यादव तो अपने ही कुल का नाश करते हैं। भारत में हैं पाण्डव और कौरव, ... जब राजाई स्थापन हो जाती है तब यह विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित होती है। फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''यही भारत विश्व का मालिक था और कोई खण्ड उस समय नहीं था। जब झूठ खण्ड शुरू होता है तब फिर और-और खण्ड बनते जाते हैं। ... तुम्हारी बुद्धि में यह चक्र फिरना चाहिए। ... वहाँ आसमान, सागर आदि सब के तुम मालिक बन जाते हो। वहाँ कोई हद नहीं रहती है।''

सा.बाबा 7.5.07 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। ... हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती तो पहले देवी-देवता धर्म वाले ही आयेंगे। अभी उनका सेपलिंग लग रहा है। ... हमको अन्दर में यह नॉलेज है तो अन्दर में खुशी होती है।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''बाहुबल से तो कोई विश्व का मालिक बन न सके। तुम जानते हो, अगर यह आपस में मिल जायें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं परन्तु ड्रामा में उनका पार्ट ही नहीं है। ... अभी वास्तव में सारी दुनिया पर रावण ने कब्जा किया हुआ है। ... यहाँ तुम बच्चे शिवबाबा से शक्ति लेते हो, माया पर जीत पाने के लिए।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''तुम बच्चों का भी दादे की मिल्कियत पर हक है। वह है निराकार। बच्चे जानते हैं - हम अपने दादे से वर्सा ले रहे हैं। वही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। ... भारत सबसे नम्बरवन पावन था, अब भारत सबसे अधिक पतित है, तो उन्होंको मेहनत भी जास्ती करनी पड़ती है।'' (वास्तव में सब धर्म वालों का हक बाप की मिल्कियत पर, इसीलिए सब धर्म वालों ने भारत पर राज्य किया।)

सा.बाबा 12.6.07 रिवा.

''यह भी ड्रामा अनुसार है। ड्रामा में जानवर-पक्षी आदि जो भी हैं, उनका भी पार्ट है। आज जो हुआ, सो कल्प पहले हुआ था। ... मुख से कहते भी हैं भारत स्वर्ग था। तुम सिद्ध कर बतायेंगे। बोलो - भारत जो स्वर्ग था, वही अभी कंगाल है। यह लड़ाई कोई नई नहीं है, यह तो कल्प-कल्प लगती है।''

सा.बाबा 16.7.07 रिवा.

''यह नॉलेज सबको देनी चाहिए, जिससे सब जान जायें कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी क्या है, यह कैसे रिपीट होती है। ... सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म की राजधानी थी, उन्होंने यह राज्य कैसे प्राप्त किया।''

सा.बाबा 19.7.07 रिवा.

''भारत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशियों का राज्य था, जो अब नहीं है तो फिर जरूर होगा। यह अनादि वर्ल्ड ड्रामा है। इस नॉलेज से भारत स्वर्ग बन जाता है। अभी नॉलेज नहीं है तो भारत कंगाल है। फिर इस नॉलेज से हम भारत को स्वर्ग बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.7.07 रिवा.

''कोई बेहद की हिस्ट्र-जॉग्राफी तो सिखाते नहीं हैं। ... यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इसको जानने से तुम चक्रवर्ती राजा-रानी बनेंगे। हम यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह सबको समझाओ।''

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

''तुमको अभी पता पड़ा है कि बाप कैसे भारत देश में आते हैं। ... शिव के मन्दिर भी भारत में बहुत हैं। ... अगर जान जायें कि शिवबाबा ने ही हम सबकी सद्गति की है तो भटकना छूट जाये। भारत को ही अविनाशी सच्चखण्ड कहते हैं क्योंकि भारत का कभी विनाश नहीं होता है।''

सा.बाबा 26.7.07 रिवा.

''अभी जो स्कूलों में हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाई जाती है, वह तो अधूरा ज्ञान है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का पूरा राज़ समझाना चाहिए। ... बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझाते हैं। ... यह सूर्यवंशी डिनॉयस्टी कैसे स्थापन हुई, यह नॉलेज किसी के पास है नहीं।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

Q. ये विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी स्कूल-कॉलेजों में और मनुष्यों को समझाने से उनको क्या लाभ होगा ? बाबा का ये कहने का क्या भावार्थ है ?

जो इस विश्व की ये सत्य हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझ लेगा और जिसको इस पर निश्चय हो जायेगा, वह इस जीवन का परम-सुख यहीं अनुभव करेगा क्योंकि उसको इस दुखी-अशान्त विश्व में आशा की किरण दिखाई देगी, विश्व का भविष्य उज्ज्वल देखकर खुश हो जायेगा, वह परमात्मा को पहचान कर उनके साथ सम्बन्ध स्थापित करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करेगा, मुक्ति-जीवनमुक्ति का यहाँ ही अनुभव करेगा। भले हम यह भी जानते हैं कि सतयुग या स्वर्ग में सभी आत्मायें नहीं आयेंगी, इसलिए सभी यह हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं पढ़ेंगी परन्तु मुक्ति में तो सभी आत्मायें जायेंगी, इसलिए योग सभी आत्मायें जाने-अन्जाने सीखेंगे ही। इस देह में रहते देह से न्यारी स्थिति अर्थात् मुक्ति की अनुभूति परमानन्दमय है, जो सभी आत्मायें करेंगी। जिन आत्माओं को मुक्ति के साथ सतयुग की जीवनमुक्ति में भी आना है, वे उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करके जीवनमुक्ति का परम-सुख भी अनुभव करेंगी। इसलिए परमात्मा को सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है, मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो सर्व आत्माओं को लेना है और जो आत्मायें उसको दिलाने में सहयोगी बनेंगी, वे भी परम भाग्यशाली हैं और वे उनकी दुआओं को प्राप्त करेंगी।

काल-चक्र

इस विश्व-नाटक का काल-चक्र भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के घटना-चक्र पर आधारित है। वर्तमान और कुछ भी नहीं है, वह केन्द्र-बिन्दु अर्थात् पल-विपल है, जिसके एक तरफ भूलकाल है और दूसरी तरफ भविष्य काल है। वर्तमान भूतकाल का फल और भविष्य का बीज है। इसलिए भूतकाल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता न करने वाले ही वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करके वर्तमान का भी सुख अनुभव कर सकते हैं और उज्ज्वल भविष्य का भी निर्माण कर सकते हैं।

''अभी तुमको समझाया है - यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। तुम इस बेहद के चक्र को भी जान गये हो। तीनों लोकों, तीनों कालों को भी तुम जानते हो। ... अभी बाप ने क्रियेटर और क्रियेशन का राज़ समझाया है।''

सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

''भारतवासी अपने धर्म को ही भूल गये हैं। ...जो देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं, वे ही समझाते हैं। और कोई वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा न सके।''

सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

''इस ड्रामा के राज़ को तुम ही जानते हो। ... वह सीन 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी। ... यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी, जो फिर से रिपीट होगी।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''बाप समझाते हैं कि अभी सबका यह अन्तिम जन्म है, अभी यह खेल पूरा होता है। ... अभी कलियुग के अन्त में ड्रामा पूरा होता है, फिर से हिस्ट्री रिपीट होनी है।''

सा.बाबा 25.6.07 रिवा.

''यह है 84 जन्मों का चक्र, सो भी सभी का नहीं है। जो पहले आये थे, वे फिर पहले जायेंगे। पीछे आने वाली सभी आत्मायें उस समय तक निर्वाणधाम में रहती हैं।''

सा.बाबा 10.5.07 रिवा.

''बहुत लोग कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले गीता सुनाई गई थी। परन्तु यह तो बताओ 3 हजार वर्ष पहले कौन थे ? किसने गीता सुनाई ? किस नेशन को, किस युग में गीता सुनाई और किसने सुनाई ? ... ड्रामा अनुसार जब सृष्टि तमोप्रधान बन जाती है तब मुझे आना पड़ता है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

''सब कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत हेविन था परन्तु किसकी बुद्धि में नहीं आता है कि भारत पहले स्वर्ग था। सबकी उतरती कला है, हमारी है चढ़ती कला।'' (वे उतरती कला में हैं, इसलिए उनकी बुद्धि में नहीं बैठता है)

सा.बाबा 29.6.07 रिवा.

विश्व की संरचना और विश्व-परिवर्तन का विधि-विधान

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी नई संरचना का कोई प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु परमात्मा इसकी कलम लगाते हैं, जिससे ये नवजीवन प्राप्त करता है अर्थात् पुराने से नया हो जाता है। ये बात भी ध्यान में रहनी चाहिए कि ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है परन्तु कल्पान्त में जो परिवर्तन होता है, वह अपने सतोप्रधान स्वरूप में होता है अर्थात् जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियां अपने सतोप्रधान स्वरूप में हो जाती हैं। सभी खानियां सुख-साधनों, रतनों से भरपूर हो जाती हैं, जंगम प्रकृति भी सदा सुखदायी हो जाती है। परन्तु ये अनिवार्य नहीं है कि कलियुग में खानियों में जो खनिज पदार्थ हैं अर्थात् खनिज तेल, गैस, लोहा, कोयला आदि-आदि वे सतयुग आदि से ही उनमें संचित हो जाते हैं। प्रकृति की सतत परिवर्तनशीलता के आधार पर जिस समय जो चीज जहाँ थी वह उस समय पर अपने स्थान पर पहुँच जाती है। समयानुसार जो नये भूभाग जो जलमग्न थे, वे ऊपर आते हैं तो वहाँ की जड़ और जंगम प्रकृति बहुत सम्पन्न होती है, जिससे वहाँ आने वाली नई आत्मायें उसका पूर्ण सुख भोगती हैं, प्रकृति उनको पूरा सहयोग करती है परन्तु सतयुग के सतोप्रधान सुख और उसके सुख में अन्तर अवश्य होता है। सतयुग में सारा विश्व सतोप्रधान होता है और उस समय सारा विश्व ही भारत होता है। द्वापर से विश्व टुकड़ों में विभाजित हो जाता है और विश्व में सतोप्रधान, रजो, तमो गुणों से युक्त भी आत्मायें होती हैं।

''ये बड़ी गुह्य बातें हैं, जो तुम ही जानते हो। ... इस चक्र को याद करना माना सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को याद करना। जितना स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा, उतना समझो वह यात्रा पर तीखा जा रहा है। ... बोलो हम आपको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं कि मनुष्य 84 जन्म कैसे लेते हैं। ... लक्ष्मी-नारायण ने राज्य कैसे पाया और फिर कैसे गंवाया।''

सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

''ज्ञान मार्ग अर्थात् चढ़ती कला, भक्ति है उतरती कला। ... अब बाप ने समझाया है कि रामराज्य कब से कब तक और कहाँ तक चलता है। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझते हैं।...

भारत ही हेविन था, वह भूल गये हैं।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''दो सेनायें हैं, जिस्मानी और रुहानी अर्थात् पाण्डव और कौरव। ... कन्ट्रॉस्ट है ना। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग का। यह है लास्ट कन्ट्रॉस्ट। सतयुग में कन्ट्रॉस्ट की बात नहीं होती है। ... हू-ब-हू तुम कल्प पहले वाली सेवा कर रहे हो। तुमको इस भारत को दैवी राजस्थान बनाना है। यह तुम्हारा ही काम है।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''अभी तुम बाप द्वारा डबल अहिंसक बन डबल ताजधारी बन रहे हो। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में नटशेल में सारा राज़ है। ... तुम जानते हो - हम श्रीमत पर चल श्रेष्ठ से श्रेष्ठ राजधानी स्थापन कर रहे हैं, कल्प पहले के मुआफिक। ... तुम हो शिवशक्ति पाण्डव सेना, तुम्हारी वार है रावण के साथ।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

विविध बिन्दु

''सन्यासी पवित्र बनते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई होता ही नहीं है, इसलिए उसको सचखण्ड कहा जाता है। फिर वही झूठखण्ड बनता है। भारत को पावन बनाने बाप भारत में ही आते हैं। भारत में ही शिव का अवतरण होता है। ... लक्ष्मी-नारायण विकर्माजीत बने, फिर वे ही विकर्मी बनते हैं। तो उन्हों का फर्ज है पहले जिसने ऐसा साहूकार बनाया, उसकी पूजा करना।''

सा.बाबा 23.4.07 रिवा.

''भारतवासी भगत भगवान को याद करते हैं। गृहस्थी भगत हैं क्योंकि भक्ति प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए होती है। ... निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों ही मार्ग दिखाना है। ... दिल में उमंग रहना चाहिए, चिन्तन चलते रहना चाहिए। कोई भी धर्म वाला आये तो हम उनको ऐसे समझायें।''

सा.बाबा 27.4.07 रिवा.

''भ्रष्टाचारी विकार से पैदा होते हैं और विकारी को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। भगवानुवाच - काम महाशत्रु है, तुमको इन पर जीत पानी है तब श्रेष्ठाचारी बनेंगे। भारत ही भ्रष्टाचारी और भारत ही श्रेष्ठाचारी बनेंगा। ... सन्यासियों को सब अच्छा मानते हैं क्योंकि वे पवित्र रहते हैं।''

सा.बाबा 30.4.07 रिवा.

''यह ज्ञान है भारत के लिए। ... भारत क्यों इतना गिरा है? एक तो ईश्वर को सर्वव्यापी समझ बैठे हैं और अपने को ईश्वर मान कर बैठे हैं। ... भारत ही स्वर्ग था, अब तो नर्क हैं ना। ये बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं।''

सा.बाबा 30.4.07 रिवा.

''अभी तुम भारत को शान्ति और सुख का दान देते हो श्रीमत पर। ... हम सतयुग की स्थापना में बाबा के मददगार हैं। ब्राह्मण ही मददगार होते हैं।''

सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

''भारत महान आप महान आत्माओं के कारण ही गाया जाता है। किसी भी देश में इतनी महान आत्माओं का गायन या पूजन नहीं होता है। ... किसी भी देश में उस देश की इतनी महान आत्माओं के मन्दिर हों, यादगार हों, गायन-पूजन हो, वह कहाँ भी नहीं होगा।''

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 1

''परमात्मा को सर्वव्यापी कहते हैं, इससे तो कोई भी बात ठहरती नहीं है। भक्ति भी चल नहीं

सकती क्योंकि भगत भगावान को याद करते हैं ... हद के सन्यासियों द्वारा भी पवित्रता का बल भारतवासियों को मिलता है। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई होता नहीं है। भारत बाप का बर्थ प्लेस है।''

सा.बाबा 7.5.07 रिवा.

''तुम अभी भारत की सेवा कर रहे हो। जो भी त्योहार आदि है, वे सब इस भारत में ही मनाये जाते हैं। यह सब अभी के हैं। ... सतयुग-त्रेता में ये बातें होती नहीं हैं। ... तुम अपने तन-मन-धन से खास भारत और आम सारी दुनिया की सेवा कर रहे हो।''

सा.बाबा 8.5.07 रिवा.

''33 करोड़ देवतायें गाये जाते हैं। वे इतने सब कोई सतयुग-त्रेता में नहीं रहते हैं। यह तो सारे भारत के देवी-देवता धर्म की आदमशुमारी है।''

सा.बाबा 8.5.07 रिवा.

''तुम्हारा अभी तीसरा नेत्र खुला है तो इतना नशा रहना चाहिए। मनुष्य जब शराब पी लेते हैं तो ... तुम बच्चों को भी सदैव नारायणी नशा रहना चाहिए। हम वही कल्प पहले वाली शक्ति सेना हैं। अनेक बार हमने भारत को हीरे जैसा बनाया है। इसमें मूँझने की बात नहीं है। संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।''

सा.बाबा 8.5.07 रिवा.

''मूर्ति जो पूज्य है, वह कुछ बोलती नहीं है। अभी तुम समझते हो - हम ही पूज्य, फिर पुजारी बनते हैं। तुम जानते हो संगमयुग पर सतयुग की रचना कैसे होती है, जो और कोई नहीं जानते हैं। ... अहो सौभाग्य तुम भारतवासी बच्चों का ... तुम्हारे में भी सौभाग्यशाली वे हैं जो ज्ञान को अच्छी रीति धारण करके दूसरों को भी कराते हैं।''

सा.बाबा 8.5.07 रिवा.

''भारत में पवित्रता-सुख-शान्ति, सम्पत्ति सब कुछ था ... आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। ... सन्यासियों का है हठयोग, राजयोग वे सिखला न सकें। यह हठयोगियों का भी एक धर्म है भारत को थमाने के लिए। भारत में पवित्रता तो चाहिए ना।''

सा.बाबा 10.5.07 रिवा.

''शिव और सालिग्रामों की पूजा क्यों करते हैं? क्योंकि तुम इस शरीर के साथ शिवबाबा की श्रीमत पर भारत को श्रेष्ठाचारी बना रहे हो।''

सा.बाबा 18.5.07 रिवा.

''भारतवासी जीवनमुक्त थे, बाकी सभी आत्मायें निर्वाणधाम में बाप के पास रहेंगी। ... स्वर्ग में जीवनमुक्त सभी को कहेंगे। बाकी उसमें जिन्होंने जितनी मेहनत की, उतना पद पाया। ... बाप यह नॉलेज देते हैं, और कोई भी इस सृष्टि-चक्र की नॉलेज दे न सके।''

सा.बाबा 19.5.07 रिवा.

''भारत का धर्म-शास्त्र है ही एक गीता। ... गीता की महिमा तुम एक्यूरेट जानते हो। जिस गीता से बाप आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... गीता का भगवान कौन था, उनको न जानने के कारण झूठा कसम उठाते हैं। अब उनको करेक्ट करो।''

सा.बाबा 22.5.07 रिवा.

''काम ऐसा करो, जिससे भारत पावन बनें, एवर हेल्दी बनें। ... तुम्हारा एक-एक पैसा हीरे समान है, इससे भारत स्वर्ग बनता है। बाकी जो बचेगा, वह तो खत्म हो जायेगा। ... तुम बच्चों को बहुत रहमदिल बनना चाहिए। अपने पर भी और दूसरों पर भी रहम करना चाहिए।''

सा.बाबा 22.5.07 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम भारतवासियों को 5 हजार वर्ष पहले भी स्वर्ग का वर्सा दिया था ना। तुम विश्व के मालिक थे ना। ... साधू-सन्तों के पास पवित्रता का बल है परन्तु ईश्वरीय बल नहीं है। ईश्वरीय बल तुमको मिलता है। ... बाप फिर से भारत को वाइसलेस बनाने आये हैं।''

सा.बाबा 23.5.07 रिवा.

''तुम प्रतिज्ञा करो - हम विकार में कभी नहीं जायेंगे। पवित्रता की मदद करो तो मैं भारत को पवित्र बनायेंगे। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। याद नहीं आता है - कल्प-कल्प हम यही धन्धा करते हैं, भारत को स्वर्ग बनाते हैं। जो स्वर्ग बनाने में मेहनत करेंगे, वे ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 23.5.07 रिवा.

''माया से बुद्धि मारी जाती है। माया का नाम भारत में मशहूर है। ... राम की शक्ति के सिवाए रावण पर जीत पा नहीं सकते। ... वह निराकार भारत में कैसे आया। आत्मा आरगन्स बिगर तो कोई कर्म कर नहीं सकती।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

Q. विचारणीय है - फिर परमात्मा को परमधाम में संकल्प कैसे आ सकता है ?

''तुमको पतित से पावन बनाए सुख-शान्ति का वर्सा देता हूँ, बाकी सबको शान्ति का वर्सा मिल जाता है। ... गीता ब्राह्मणों को ही सुनानी है। जब शूद्र से ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बनें तब उनको गीता सुनाई। ब्राह्मणों का ज्ञान का तीसरा नेत्र खोला। ... शूद्र से ब्राह्मण बनाना शिवबाबा

का ही काम है।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

''अभी तुम ब्राह्मण वर्ण से देवता वर्ण वाले बन रहे हो। भारतवासी ही आपही पूज्य और आपही पुजारी बनते हैं। ... मैं तो एवर पूज्य हूँ।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

''शिवबाबा कहते हैं - मेरी मत पर चलो। बाप की श्रीमत नामीग्रामी है। ब्रह्मा की मत भी गाई जाती है। ब्रह्मा से भी ब्रह्मा का बाप शिवबाबा ऊंचा है ना। ... इस समय भारत को शिवबाबा की श्रीमत की दरकार है।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

''भारत में ही रामराज्य और भारत में ही रावण राज्य होता है। भारत में ही रावण को जलाते हैं। ... भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी और श्रेष्ठाचारी से भ्रष्टाचारी - यह खेल है। यह चक्र कैसे फिरता है, ये बड़ी समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 23.4.07 रिवा.

''अभी तुम सारे ड्रामा को समझ गये हो। ... पतित-पावन बाप अविनाशी खण्ड भारत में ही आते हैं। यह शिवबाबा का बर्थ प्लेस है। शिव जयन्ति भी यहाँ मनाते हैं। ... मन्दिर भी शिव का सबसे बड़ा यहाँ ही है।''

सा.बाबा 25.4.07 रिवा.

''बाप नई दुनिया रचते हैं तो भारत को ही स्वर्ग का वर्सा मिला था, फिर गुम हो गया। ड्रामा अनुसार वर्सा लेना भी है तो गँवाना भी है। यह चक्र चलता रहता है।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

''भारत में ही पवित्र राजायें थे, अब अपवित्र हैं तो पवित्र को पूजते हैं। ... एक बाप ही सत्य बताकर सबको सद्गति देते हैं। ... भारत का शास्त्र एक ही गीता है।''

सा.बाबा 3.5.07 रिवा.

''इस समय भारतवासियों को यह भी पता नहीं है कि हम किस धर्म के हैं, हमारा धर्म कब और किसने स्थापन किया ? ... भारत का धर्म आदि-सनातन देवी-देवता है, न कि हिन्दू।''

सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

''16108 की भी माला है। रुद्र यज्ञ जब रचते हैं तो लाख सालिग्राम और एक शिवलिंग बनाते

हैं। तो जरूर यह सब मददगार बनें होंगे ना।''

सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

''विकार से पैदा होने वालों को ही पापात्मा कहा जाता है। श्रीकृष्ण के लिए तो ऐसा नहीं कहेंगे कि वह विकार से पैदा हुआ। नहीं, वह तो योगबल से पैदा होता है। इन बातों को तुम भारतवासी गृहस्थ धर्म वाले जानते हो, सन्यासी न जानते हैं और न मानते हैं।''

सा.बाबा 28.5.07 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो - मुक्ति-जीवनमुक्ति किसको कहा जाता है। बरोबर भारत जीवनमुक्त था, उसको स्वर्ग कहा जाता है ... स्वर्ग और नर्क को भारतवासी ही जानते हैं। ... जहाँ बाबा रहते हैं, वह है मुक्तिधाम, ब्रह्म लोक। लेकिन सबसे अच्छा है यह ब्राह्मणों का लोक।''

सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

''इसका यथार्थ नाम ही है 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ'। ... कोई पहले जब आये तो उनको गीता पर जरूर समझाओ। ... तुम जानते हो - भारत में जब स्वर्ग था, तब बाकी इतनी सब आत्मायें कहाँ थी ? मुक्तिधाम में।''

सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

''जितनी भारत में सबको छुट्टिया मिलती हैं, उतनी और कहाँ नहीं मिलती। परन्तु यहाँ हमको एक सेकेण्ड भी छुट्टी नहीं मिलती क्योंकि बाबा कहते हैं -... बच्चों को रात-दिन बाबा की सर्विस में रहना चाहिए।''

सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

''हम ईश्वर की फेमिली अर्थात् वंशावली हैं। गॉड फादर इज क्रियेटर। गाते भी हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे ... भारत में ही गाते हैं। वह है पास्ट की बात, अभी प्रेजेन्ट में तुम उनके बच्चे बने हो।''

सा.बाबा 30.5.07 रिवा.

''सहज राजयोग की नॉलेज एक परमपिता परमात्मा के पास ही है, जिसको प्राचीन भारत का राजयोग कहते हैं। ... भारत है परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस। तो सबसे बड़ा तीर्थ हुआ ना। ... जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है, वैसे भारत की भी महिमा है। हेल और हेविन भारत ही बनता है।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''योरोपवासी यादव भी हैं, जिन्होंने बॉम्बस आदि की इन्वेन्शन की है ... बरोबर अपने कुल का विनाश जरूर करेंगे। ... गाया भी जाता है - ब्रह्मा के द्वारा स्थापना और शंकर के द्वारा विनाश।

पहले स्थापना करेंगे।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''कलियुग को बदल सतयुग होना ही है, इसलिए इसको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। सतयुग से त्रेता होता है, फिर त्रेता से द्वापर होता है तो कलायें कम होती जाती हैं। अकल्याण होता ही जाता है। जब पूरा अकल्याण हो जाता है तब बाप आते हैं सभी का कल्याण करने।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''जब नाटक पूरा होने पर होता है तो सभी एक्टर्स स्टेज पर आ जाते हैं। यह कायदा है। ... यह फिर है बेहद का नाटक। ... वापस तो सबको जाना है ना। फिर तुम आयेंगे नई दुनिया में। वहाँ बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। ये समझने और निश्चय करने की बातें हैं।''

सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

''भारत बहुत सुखी, एवरहेल्दी, एवरवेल्दी था। बिल्कुल पवित्र था । कहा ही जाता है - वाइसलेस भारत। अभी तो विशश पतित कहेंगे। ... जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, मान भी उनका है। भारत का कल्याण करने वाले सिर्फ तुम बच्चे हो। बाकी और सब अकल्याण ही करते हैं, पतित बनाते हैं।''

सा.बाबा 11.6.07 रिवा.

''यह कोई कह न सके कि हम स्वर्ग में क्यों नहीं। सतयुग में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही था। बाकी और धर्म नम्बरवार बाद में आते हैं। यह अनादि बना-बनाया खेल है, उसमें फिर भारत में ही सतयुग होना है क्योंकि भारत ही अविनाशी खण्ड है, जिसका कब विनाश नहीं होता है। बाप का जन्म भी यहाँ ही होता है।''

सा.बाबा 13.6.07 रिवा.

''अब यह रावणराज्य खत्म होना है, उसके लिए सब तैयारियाँ हो रहीं हैं। बाप पढ़ाकर घर वापस ले जायेंगे, फिर तुमको राज्य चाहिए। ... देवतायें फिर भारत में ही आयेंगे परन्तु ये सृष्टि बदलकर कलियुग से सतयुग बन जायेगी।''

सा.बाबा 16.6.07 रिवा.

''अभी भारतवासी दुर्भाग्यशाली हैं, भारतवासी ही सौभाग्यशाली थे, कितने साहूकार थे। ... बाप पावन बनने का उपाय बतलाते हैं, जिससे तुम सब पापों से मुक्त हो पुण्यात्मा बन जायेंगे। पुण्यात्माओं की दुनिया थी, सो फिर से स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 16.6.07 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही अविनाशी खण्ड है, उसमें ही सुख-दुख,

स्वर्ग-नर्क का वर्सा होता है। गीता में है भगवानुवाच। तो गीता है सबकी माई-बाप क्योंकि उनसे ही सबको सद्गति मिलती है। बाप सबका दुखहर्ता-सुखकर्ता है। भारत उनका बर्थ-प्लेस है। भारत सबका तीर्थ स्थान है।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''राजधानी जरूर स्थापन होनी है। ... बाप ने राजयोग सिखलाया था। ... बाप सिखलाते तब हैं, जब राजाई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है।''

सा.बाबा 20.6.07 रिवा.

भारत-भूमि और स्वमान

भारत भूमि में जन्म लेना भी स्वमान की बात है और अभी संगमयुग पर परमपिता परमात्मा का साकार में बच्चा बनना और भी बड़ा स्वमान है।

''नाटक सारा भारत पर ही है। और सब धर्म तो बाईप्लॉट्स हैं। तुम ही देवता थे, तुम ही अभी असुर बने हो। ... तुमको अभी यह नॉलेज मिल रही है, तुमको ही फिर से सो देवी-देवता बनना है।''

सा.बाबा 23.6.07 रिवा.

''आलमाइटी अथॉरिटी ने भारत में देवी-देवताओं के राज्य की स्थापना की। ... कलियुग में सभी पापात्मायें हैं। पुण्यात्मा पवित्र को कहा जाता है। भारत में ही बहुत दान-पुण्य करते हैं। इस समय तुम बाप के ऊपर बलि चढ़ते हो।''

सा.बाबा 25.6.07 रिवा.

''भारत में ही गाते हैं - तुम मात-पिता ... सुख घनेरे। तो जरूर जगत-अम्बा, जगत-पिता चाहिए। ... जिसमें प्रवेश हुआ, उसको माँ कहा जाता है। माँ से वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है।''

सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

''दुखधाम के बाद सुखधाम आना ही है। ... अब इस चक्र को तो फिरना ही है। ... ये वर्ण आदि सनातन देवी-देवता धर्म वालों के लिए ही हैं। और धर्म वालों के लिए वर्ण नहीं हैं। ब्राह्मण वर्ण का यह एक जन्म या डेढ़ जन्म भी हो सकता है। ... शरीर छोड़ कर चले जाते हैं, वे फिर आकर ज्ञान ले सकते हैं।''

सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

''अब देखो क्रिश्चियन बनाते जाते हैं। बहुत करके हिन्दू धर्म वालों को ही कन्वर्ट करते जाते हैं क्योंकि उन्होंको अपने धर्म का पता ही नहीं है। ... सब हिसाब-किताब चुक्तू कर मुक्तिधाम चले जायेंगे। उनको शान्ति, तुमको सुख मिलेगा।''

सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

''भारतवासियों को तो यह ज्ञान देना बहुत सहज है क्योंकि भारतवासी ही रावण को जलाते हैं, सिर्फ अर्थ नहीं समझते हैं। ... भक्तों को भगवान से भक्ति का फल तो जरूर मिलता है। भगवान को यहाँ ही आकर फल देना है क्योंकि भक्त सब पतित हैं। पतित तो वहाँ जा न सकें, इसलिए मुझे ही आना पड़े।''

सा.बाबा 27.6.07 रिवा.

''ब्रह्मा के बच्चे बनें तो भाई-बहन हो गये। फिर क्रिमिनल एसॉल्ट हो न सके, विकार में जा न सकें। यह ईश्वरीय लॉ कहता है। (संगमयुग का वह लॉ आज भी दुनिया में चलता आता है अर्थात् अभी हर धर्म में भाई-बहन का विकार में जाना निषेध है) ... अब तो सब पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन गये हैं, वह भी सृष्टि-चक्र के अन्दर ही हैं। सबको तमोप्रधान बनना ही है।''

सा.बाबा 27.6.07 रिवा.

''भारत अभी जो झूठ खण्ड बन गया है, उसको सचखण्ड बनाने वाला एक ही बाप है। ... गवर्मेन्ट जो कसम उठवाती है, वह भी झूठ। कहते हैं कि हम भगवान की कसम उठाकर सच कहते हैं परन्तु यह कहने से मनुष्यों को डर नहीं रहता। इससे तो कहें कि हम अपने बच्चों की कसम उठाते हैं तो हिचकेंगे, दुख होगा ... पता नहीं मर जाये।''

सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

''बाप को याद करने से ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा। ... भारत में ही लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। ... भारत की ही चढ़ती कला और भारत की ही उतरती कला है। बाप राजयोग सिखलाकर चढ़ती कला अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, ... फिर जन्म-बाई-जन्म कलायें उतरती जाती हैं।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''सारी दुनिया के सभी साधनों, वैभवों को इकट्ठा किया जाये तो भी स्वर्ग की भेंट में कुछ नहीं हैं। ... भारत स्वर्ग में कितना धनवान था, अभी तो क्या हालत है। ग़रीब निवाज़ बाप तुम्हारे सामने बैठे हैं और तुमको स्वर्ग का वर्सा देने आये हैं।''

सा.बाबा 2.7.07 रिवा.

''गीता में कृष्ण का नाम दे दिया है। दुनिया को पलटाने वाला कृष्ण तो हो नहीं सकता। दुनिया को पलटाने वाले को गॉड कहा जाता है। ... आज वह दिन आया है, जब ग़रीब भारत को बाप से स्वर्ग की बादशाही मिलती है।''

सा.बाबा 2.7.07 रिवा.

''यह किसको पता नहीं है कि रावण आधा कल्प का पुराना दुश्मन है भारत का। ... बरोबर भारत विश्व का मालिक था ... शिव जयन्ति के बाद होती है गीता जयन्ति। बाप ने आकर जो सुनाया, उसकी फिर गीता बनी।''

सा.बाबा 3.7.07 रिवा.

''काँटों से फूल तो शिवबाबा के सिवाए और कोई बना न सके। भारत दैवी फूलों का परिस्तान था,

जो अभी कांटों का जंगल बन गया है। ... तुमको सुनाने वाला ऊंच ते ऊंच बाप है, उनकी हर बात महान है, वह सुख का सागर है, ज्ञान का सागर है।''

सा.बाबा 4.7.07 रिवा.

''ज्ञान कलष माताओं को मिला है। सद्गति होती है ज्ञान से। ... सबको सद्गति का रास्ता दिखाने का तुम्हारी बुद्धि में उमंग उठना चाहिए। तुम अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हो। ... भारत माता की जय अर्थात् भारत में रहने वाली माताओं की जय। जो मातायें विश्व को स्वर्ग बनाती हैं, उनकी जय।''

सा.बाबा 5.7.07 रिवा.

''भारत हमारा बहुत ऊंचा देश है। सोने का भारत था, अब नहीं है। ... निशानियां भी है। सोमनाथ के मन्दिर में कितनी मणियां थी। मुसलमानों ने ले जाकर कब्रों आदि में लगा दी हैं। अंग्रेज लोग भी लेकर गये।''

सा.बाबा 6.7.07 रिवा.

''रामराज्य और रावणराज्य का गायन भारत में ही है। बाप आकर बताते हैं - इस रावण ने ही तुम भारतवासियों का राज्य छीना है। हार और जीत तुम भारतवासियों की ही होती है।''

सा.बाबा 9.7.07 रिवा.

''तुम भारतवासियों ने सतयुगी स्वराज्य का वर्सा लिया था बाप से। ... बरोबर सारे वियव पर रावण का राज्य है। भारतवासी खास और आम सारी दुनिया रावण की जंजीरों में बंधे हुए हैं। ... इस समय सब जीवनबन्ध में हैं। खास भारत। भारतवासी ही एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा लेते हैं।''

सा.बाबा 12.7.07 रिवा.

''मैं ही खास भारत और आम सारी दुनिया की सद्गति करता हूँ। गाया हुआ भी है परमपिता परमात्मा सर्व का गति-सद्गतिदाता है। सर्व का लिबरेटर है।''

सा.बाबा 12.7.07 रिवा.

''पूरा निश्चय न होने से ही अवस्था डांवाडोल होती है। ... तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम ईश्वर द्वारा जितना पढ़ेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। ... कितनी भी कोशिश करें, उतरती कला होने के कारण भारत को पतित तो बनना ही है। वापस कोई जा नहीं सकते।''

सा.बाबा 12.7.07 रिवा.

''रिलीजन इज माइट कहा जाता है। ... तुम जानते हो भारत रिलीजस था, आदि सनातन देवी-

देवता धर्म था। अभी भारत इर्रिलीजस बना है, अपने धर्म को ही छोड़ दिया है। यह भी ड्रामा अनुसार छोड़ना ही है।''

सा.बाबा 18.7.07 रिवा.

''बाबा सेकण्ड में नज़र से निहाल करके मुक्ति-जीवनमुक्ति दे देते हैं। ... तुम जानते हो - हम श्रीमत पर फिर से दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। यही भारत पावन था, जो अब पतित बन पड़ा है।''

सा.बाबा 19.7.07 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं तुमको श्रीमत देता हूँ तो उस पर सबको चलना पड़े। तुम जानते हो कल्प-कल्प श्रीमत मिलने से ही भारत श्रेष्ठ बनता है। भारत को ही पैराडाइज़ कहते हैं। ... भारत में ही गॉड-गॉडेज़ का राज्य था।''

सा.बाबा 20.7.07 रिवा.

''सर्वव्यापी के ज्ञान ने ही भारत को कंगाल, बेमुख, नास्तिक, निधन का बना दिया है। अभी तुम धन के बने तो और निधनों को धन का बनाने का पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

''जो इस खेल को अच्छी रीति समझते हैं, वे अन्दर में खुशी में रहते हैं। ... शिव जयन्ति के बाद कृष्ण का जन्म होता है। शिव जयन्ति के बाद है कृष्ण जयन्ति। शिवबाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कहते है कल्प के संगमयु पर मैं आकर राजयोग सिखलाता हूँ। महाभारत की लड़ाई हो तब तो नर्क का विनाश और स्वर्ग की स्थापना हो।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

''भारत ही पुण्यात्माओं का खण्ड था। कोई पाप नहीं करते थे। शेर-बकरी इकट्ठा जल पीते थे। ... पुण्यात्मा तो देवी-देवतायें हैं, जो पूजे जाते हैं। ... 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था।''

सा.बाबा 1.8.07 रिवा.

''यह भी तुम अभी जानते हो बरोबर हमारी चढ़ती कला है। चढ़ती कला और उतरती कला को तुम बच्चों ने अच्छी रीति समझा है। तुम यह भी समझते हो - भारत जब चढ़ती कला में था, तब उनको देवी-देवता कहते थे।''

सा.बाबा 2.8.07 रिवा

Q. चढ़ती कला, चढ़ी हुई कला और उतरती कला में क्या अन्तर है ? देवी-देवताओं की चढ़ती कला कहेंगे या चढ़ी हुई कला कहेंगे ? देवताओं में आत्मिक शक्ति संचित होती है, इसलिए उनको चढ़ी हुई कला कहेंगे परन्तु चढ़ती कला नहीं क्योंकि चढ़ती कला ब्राह्मणों की ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर होती है।

भारत और पवित्रता-अपवित्रता

सतोप्रधान और तमोप्रधानता की चरम सीमा भारत में ही होती है। अन्य देश और सभ्यतायें न इतने ऊंच अर्थात् पवित्रता के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ते और न ही नीच ते नीच अर्थात् अपवित्रता के गर्त में गिरते हैं। पवित्रता के उच्च शिखर वाले देवी-देवताओं के मन्दिर भी भारत में बनें हैं, उनका गायन-पूजन होता है और अपवित्रता के प्रतीक रावण की एफीजी बनाकर भारत में ही जलाते हैं। शिवालय और वेश्यालय का गायन भी भारत में ही होता है। द्वापर युग के बाद पवित्रता के लिए सन्यास धर्म की स्थापना भी भारत में ही हुई है, जिसके आधार पर खास भारत और आम सारी विश्व के पतन की गति मन्द रही। पतित पावन परमपिता परमात्मा का अवतरण भी भारत में ही होता है।

''तमोप्रधान भी भारतवासी ही बने हैं और सतोप्रधान भी वे ही बनेंगे। और कोई को सतोप्रधान कह नहीं सकते। सतयुग में और कोई धर्म होता ही नहीं।''

सा.बाबा 20.3.04 रिवा.

''आत्मा पर जन्म-जन्मान्तर का बोझा चढ़ा हुआ है, वह अब तुमको योगबल से भस्म करना है। इसको योग-अग्नि कहा जाता है। काम चिता पर बैठने से पापात्मा बनते आये हैं ... भारत के प्राचीन योग की बहुत महिमा है।''

सा.बाबा 22.1.07 रिवा.

''रावण को भारत में ही जानते हैं। देखने में आता है दुश्मन भी भारत का ही है। भारत को रावण ने ही गिराया है, जब से देवता वाम मार्ग में गये अर्थात् विकारी बने हैं। दुनिया यह नहीं जानती कि भारत जो निर्विकारी था, वह विकारी कैसे बना? ... यह हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम्हारी बुद्धि में होनी चाहिए।''

सा.बाबा 17.1.07 रिवा.

''सन्यासी भी विकारों से घृणा करते हैं। ... सतयुग-त्रेता है वाइसलेस दुनिया। भारत वाइसलेस था, तब भारत सोने की चिड़िया था।''

सा.बाबा 6.1.07 रिवा.

विविधि प्रश्न और उनके विषय में विचार

Q. भारत क्या है, भारत की विशेष विशेषतायें क्या हैं?

भारत अर्थात् जहाँ दैवी धर्म और दैवी सभ्यता की स्थापना हुयी और जहाँ तक वह फली-फूली। भारतवासियों ने ही परमात्मा को साकार और निराकार रूप में अनुभव किया, मात-पिता के रूप में उनकी पालना ली और उस रूप में उनको याद करते हैं। दैवी धर्म वालों का ही योगबल से जन्म और पुनर्जन्म होता है, जिसके कारण उनके ही मन्दिर बनाकर उनकी मर्तियों की पूजा होती है। भारत की दैवी सभ्यता सभी धर्मवंश की जननी है, इसलिए उनको सर्व के साथ प्यार है और सर्व का भारत के प्रति आकर्षण है। भारत ही नई सृष्टि की रचना अर्थात् कलम (Sapling) लगने का स्थान है।

Q. भारत और गीता का क्या सम्बन्ध है तथा गीता ज्ञानदाता कौन है?

Q. अभी भारत का जो इतिहास पढ़ाया जाता है, क्या वह यथार्थ है?

Q. हम भारतवासियों के लिए बाबा की क्या आज्ञा है, जिसका पालन करना हमारा परम कर्तवय है?

Q. किसी भी भारत के राजा-महाराजा ने समर्थ होते हुए भी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया, हमारे देश और धर्म का अकल्याण करते हुए भी उनके प्रति क्षमा-भाव रहा, इसका कारण क्या है? क्या उनका वह व्यवहार अयुक्त कहा जा सकता है? जैसे पृथ्वीराज चौहान, गान्धी जी आदि।

Q. विश्व राजशाही में सुखी, शान्त और समृद्ध होता है या प्रजातन्त्र में? यथार्थ राजतन्त्र क्या है?

यथार्थ राजतन्त्र राजशाही ही है। परमात्मा कल्पान्त में आकर विश्व में राजाई स्थापन करते हैं, कलियुग के अन्त में प्राय: विश्व के सभी देशों में प्रजातन्त्र ही है या नाममात्र राजशाही है, जो तमोप्रधान राजतन्त्र है। भारत भी राजशाही में ही सुखी-सम्पन्न होता है। सतयुग-त्रेता में भारत में देवी-देवताओं की राजाई थी, जो भारत का और समस्त विश्व का स्वर्णिम युग था। बाद में भी सभी देशों और धर्मों में उस राजाई की ही प्रथा रही।

Q. भारत पर सभी मुख्य धर्मों का राज्य रहा, अन्य किसी देश पर ऐसा नहीं हुआ है, इसका आध्यात्मिक कारण क्या है?

भारत सर्व धर्मों के परमपिता परमात्म की अवतरण भूमि है और सर्व धर्मों के ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर ब्रह्मा की कर्मभूमि है, इसलिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो बाप-दादा (Grand Father Father) की भूमि पर ड्रामानुसार उनका उत्तराधिकार होना भी स्वभाविक ही था, इसलिए समयानुसार सभी धर्मों का राज्य भारत पर हुआ। सृष्टि-चक्र के अनुसार अब फिर वारी है आदि-

सनातन देवी-देवता धर्म के राज्य करने की।

''बाप समझाते हैं - उन्होंने भारत को ही लूटा है, अब फिर रिटर्न दे रहे हैं। पिछाड़ी तक देते रहेंगे। ... हिस्ट्री मस्ट रिपीट। भारत ही हेविन बनेंगा। ... वे खुद भी कहते हैं - क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था।''

सा.बाबा 26.2.04 रिवा.

Q. क्या भारत या विश्व प्रजातन्त्र में सुखी-शान्त रह सकता है?

नहीं, क्योंकि परमपिता परमात्मा ने कल्प की आदि में विश्व में राजाई की स्थापना की थी, जहाँ धर्म और राज्य सत्ता एक के हाथ में थी और राजशाही में ही ये विश्व स्वर्ग था, सुख-शान्ति में था। प्रजातन्त्र तो कलियुग की प्रथा है।

''भारत का प्राचीन योग नामीग्रामी है, जिस योगबल से तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो। ... बेहद की बादशाही बाप से मिलती है। शिव जयन्ति बाप की मनाते हैं। जरूर शिवबाबा भारत में आकर विश्व का मालिक बनाकर गये हैं।''

सा.बाबा 7.4.04 रिवा.

Q. स्वर्ग भारत में ही होता है, इसका अर्थ क्या है?

जब दुनिया में स्वर्ग होता है तब विश्व में धर्म और देश के आधार पर कोई विभाजन नहीं होता है, इसलिए सारी दुनिया ही एक होती है और सारे विश्व का राज्य एक चक्रवर्ती राजा के अधीन होता है, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्त अर्थात् दिल्ली होती है, जो वर्तमान भारत में है और विश्व में जो अन्य राज्य होते हैं, वे चक्रवर्ती राजा के सहयोगी के रूप में होते हैं।

Q. भारतीय सभ्यता और भारतवासियों में इतनी सहिष्णुता, दया-भाव, दान-भावना, त्याग क्यों है, जो अन्य धर्मों और सभ्यताओं में देखने में नहीं आता है?

उदाहरणार्थ द्वापर-कलयुग में भी अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान ने अफगानिस्तान के मुसलमान आक्रमणकारी शासक मोहम्मद गौरी को 16 बार हराने और कैद करने के बाद क्षमादान दिया, जबकि मोहम्मद गौरी ने एक ही बार पृथ्वीराज को हराया और कैद करके उसकी आंखे फोड़ दी। ब्रह्मा बाबा ने भी सर्व धर्म की आत्माओं के कल्याणार्थ आदि से ही आवाह्न किया, निर्भयता से देश के विभाजन के समय और बाद में भी मुसलमानों का दिल जीतकर पाकिस्तान में रहे। विभाजन के बाद देश का जो संविधान बना, वह धर्म-निर्पेक्ष बनाया। इसके अतिरिक्त महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि के भी अन्य धर्मों के प्रति धर्मनिष्ठा के अनेक उदाहरण हैं। इन सब बातों पर विचार करें तो देखेंगे कि हम भारतवासी ही परमात्मा, जो सर्व आत्माओं के पिता हैं, उनके प्रत्यक्ष में बच्चे बनते हैं। परमात्मा ने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्मों का ज्ञान कूट-कूट

कर हमारे में भरा है। कल्प-वृक्ष में हम सारे वृक्ष के आदि पूर्वज हैं, वे पूर्वजपन के संस्कार भी परमात्मा ने हमारे में कूट-कूट कर भरे हैं, हमारे में सर्व आत्माओं के प्रति भाई-भाई की भावना जाग्रत की है, जो भावना और संस्कार अन्त तक चलते रहते हैं। इसलिए विश्व-बन्धुत्व की भावना भारतीय सभ्यता का प्राण है।

Q. भारत पर विभिन्न सभ्यताओं और धर्म वालों ने राज्य किया है, तो क्या हमारा दृष्टिकोण उनके प्रति शत्रुता या घृणा का होना चाहिए ? क्या उनका वह राज्य करना अनाधिकार था ?

Q. भारत देश में प्राय: सभी धर्म वालों ने शासन किया, यहाँ की धन-सम्पत्ति को लूटा, उनके प्रति घृणा की भावना लाना उचित है ? यदि है तो क्यों और यदि नहीं है तो क्यों ?

परमात्मा सर्व आत्माओं के पिता है, भारत उनकी अवतरण भूमि है, जिसको उन्होंने स्वर्ग बनाया, तो पिता के नाते सर्वात्माओं का अधिकार भी बनता है, जो उनको लेना ही था और ड्रामा में पार्ट भी है, जो उनको बजाना ही था, इसलिए हमारे अन्दर किसी के प्रति घृणा या शत्रुता का भाव पैदा हो नहीं सकता और पैदा होना नहीं चाहिए। विश्व-नाटक की यथार्थता और कल्प-वृक्ष के ज्ञान को ध्यान में रखें तो किसी के प्रति घृणा या शत्रुता का भाव पैदा हो नहीं सकता।

भारत में प्राय: सभी धर्मों ने राज्य किया, यहाँ की प्रकृति का उपभोग और उपयोग किया। भारत में स्थापित सन्यास धर्म वालों ने भी सारे विश्व पर प्रभाव जमाया और अभी भी वह प्रभाव है।

Q. देवताओं को अपना वह स्वरूप कैसे भूल गया ? क्या द्वापर तक आते-आते देवतायें इतने गिर गये कि उनको अपना देवताई स्वरूप ही भूल गया या भूकम्प आदि की उथल-पुथल में अपना अस्तित्व भूल गया ?

प्रकृति के नियमानुसार अवश्य ही सतयुग से त्रेता के अन्त तक आते-आते अधिकांश देवताई स्वरूप, देवताई स्वभाव-संस्कार, सभ्यता खत्म हो गयी होगी और रहा-सहा स्वरूप भी त्रेतायुग के अन्त और द्वापरयुग के संगम पर हुए भूकम्प आदि में भूल गया होगा।

Q. भारत का धर्म कौन सा है ?

भारत का मूल धर्म है आदि सनातन देवी-देवता धर्म है परन्तु बौध धर्म, सन्यास धर्म, सिक्ख धर्म की स्थापना विशेषकर वर्तमान भारत में ही होती है, इसलिए वे धर्म भी भारत के ही हैं परन्तु भारत का मूलधर्म आदि सनातन देवी-देवता ही है, जो अभी अपने को हिन्दू कहलाते हैं। प्राय: सभी मुख्य धर्मों की स्थापना भी प्राचीन भारत में ही हुई है क्योंकि उस समय सारा विश्व ही भारत था। बाद में उनका विस्तार भारत के बाहर हुआ।

''भारत का प्राचीन योग और ज्ञान तो बाप ही देते हैं, कोई मनुष्य यह ज्ञान दे न सके। ... सब

धर्मपिताओं को भी सलाम तो भरना ही है। क्यामत का समय है, हिसाब-किताब चुक्तू होने वाला है। नम्बरवन सलाम करने वाला भी यहाँ बैठा है, तो वे भी आयेंगे।''

सा.बाबा 2.1.07 रिवा.

''गॉडेस ऑफ नॉलेज सरस्वती है। ... जगदम्बा सबकी माता ठहरी तो सबको उनके आगे माथा झुकाना पड़े। माता समझा सकती है - यह भ्रष्टाचारी दुनिया श्रेष्ठाचारी कैसे बने वा इस भारत में शान्ति कैसे स्थापन हो।''

सा.बाबा 3.1.07 रिवा.

''भारत ही सचखण्ड और झूठ खण्ड बनता है। ... झूठ खण्ड में झूठ ही झूठ है। जब तक तुमको सच बात न मिले तो तुम जज कैसे कर सकते हो। बाप कहते हैं - अब तुम जज करो कि मैं तुमको राइट समझाता हूँ या वे राइट समझाते हैं।''

सा.बाबा 1.1.07 रिवा.

''भारतवासियों को स्वराज्य था। बाप ने भारतवासियों पर रहम किया था, फिर रहम मांगते हैं। ... अखबार में भी डालते हैं कि क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत परिस्तान था।''

सा.बाबा 2.1.07 रिवा.

अन्य धर्म वाले मानते हैं कि दुनिया बनाई गई है परन्तु भारतवासी मानते हैं कि दुनिया अनादि-अविनाशी है अर्थात् विनाश के समय भी कुछ आत्मायें बचती हैं, जिनसे नई दुनिया की कलम लगती है। इसलिए आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है। शास्त्रों में भी कै कि विनाश के समय मनु, सत्यरूपा और सप्त ऋषि बचे थे।

''बाबा के पास ऐसे-ऐसे बच्चे भी हैं, जो कहते बाबा जब जरूरत पड़े तो मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाज़िर हैं। ... बाबा कहते - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं, हम आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे।''

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

''भारतवासी अपने धर्म की ग्लानि करते हैं, कहते हैं - ईश्वर सर्वव्यापी है ... यह ग्लानि भी ड्रामा में नूँधी हुई थी, तब तो पापात्मा बनते हैं।''

सा.बाबा 1.2.07 रिवा.

''देहाभिमान में आना पहले नम्बर की भूल है, जिससे फिर और भूलें भी होती है। ... भारतवासी रावण को दुश्मन समझकर जलाते हैं। ... आधा कल्प बाद फिर ये रावण जिन्दाबाद होगा। रामराज्य और रावणराज्य आधा-आधा कल्प चलता है।''

सा.बाबा 4.2.07 रिवा.

''शिवबाबा कहते हैं - मैं भारतवासियों को राज्य भाग्य देता हूँ ... मैं भारत को हेविन-पैराडाइज़ बनाता हूँ, फिर तुम ही सर्वव्यापी कहकर मेरी ग्लानि करते हो।''

सा.बाबा 9.2.07 रिवा.

''यही भारत शिवालय था, देवी-देवताओं का राज्य था, जिनके मन्दिर बनाये हुए हैं। ... फिर तुमको नीचे उतरना ही था, कला कमती होनी ही थी। उस समय कोई ऊपर चढ़ न सके क्योंकि वह है ही गिरती कला का समय।''

सा.बाबा 9.2.07 रिवा.

''ब्राह्मण ही त्रिकालदर्शी हैं। ब्राह्मणों से ही नई रचना होती है। तुम ब्राह्मण हो सबसे उत्तम। तुम बाप की श्रीमत पर भारत को श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाते हो। ... तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो। ... विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हैं।''

सा.बाबा 10.2.07 रिवा.

''भारत पर तो बाप सदा प्रसन्न है, तब तो भारत में आये हैं और आप सबको भी भारतवासी बना दिया है। इस समय आप सभी विदेशी हो या भारतवासी हो। भारतवासी में भी मधुवन वासी। ... सारी विदेश में जल्दी-जल्दी सन्देश देकर पूरा करो। ... एक ही समय मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही संकल्प हो तब है सेवा की तीव्र गति। मन्सा द्वारा पॉवरफुल, वाणी द्वारा नॉलेजफुल और सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म द्वारा लवफुल।''

अ.बापदादा 17.3.91

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। यह सब राज़ शिवबाबा ही समझाते हैं, ब्रह्मा नहीं। ... अभी तुम जानते हो कि यह बेहद का बड़ा खेल है। सेकेण्ड-सेकेण्ड जो पास होता है, मनुष्य जो एक्ट करता है, वह ड्रामा के आधार पर एक्ट करता है।''

सा.बाबा 12.2.07 रिवा.

''जैसे शिवबाबा की महिमा अपरमअपार है, वैसे रचना की महिमा भी अपरमअपार है, वैसे ही भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत में हीरे-जवाहरों के महल थे।''

सा.बाबा 12.2.07 रिवा.

''अभी तुम सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। भारत ही पहले नम्बर में विश्व का मालिक था, उस समय और कोई धर्म था ही नहीं। ... भारत ही अविनाशी खण्ड है। भारत ही कितना साहूकार था।''

सा.बाबा 14.2.07 रिवा.

''युग भी भारतवासियों के लिए ही हैं। भारतवासियों से फिर और सब सुनते हैं कि सतयुग-त्रेता होकर गये हैं क्योंकि वे आते ही हैं द्वापर से। तो औरों से सुनते हैं कि भारत प्राचीन खण्ड था, उसमें देवी-देवतायें राज्य करते थे।''

सा.बाबा 23.2.07 रिवा.

''यह नाटक है सुख और दुख का। ... बाप आकर अनाथ से सनाथ बनाते हैं। बाप ने भारत को अनाथ से सनाथ बनाया था, उनको जानते हैं। भारत ही सनाथ, सदा सुखी था। ... भारत महान पवित्र था।''

सा.बाबा 27.2.07 रिवा.

''अभी है रावण राज्य, भारत में ही रामराज्य था। भारत सबसे प्राचीन था। पहले नम्बर में सृष्टि पर सूर्यवंशी देवी-देवताओं का झण्डा बुलन्द था। उस समय चन्द्रवंशी भी नहीं थे।''

सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

''श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत कहती है - अच्छी रीति धारणा करो और कराओ। अगर ईश्वरीय डायरेक्शन पर नहीं चलेंगे तो ऊंच पद भी नहीं पायेंगे। अपनी दिल से आपही पूछो - हम श्रीमत पर चल रहे हैं?''

सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

''नये विश्व में नया भारत। जो भारत नया था सो अब पुराना हो गया है। सिवाए भारत के और कोई खण्ड को नया नहीं कहेंगे। अगर नया कहेंगे तो फिर पुराना भी कहना पड़ेगा। हम फुल नये भारत खण्ड में जाते हैं। भारत ही 16 कला सम्पूर्ण बनता है। और कोई खण्ड फुल मून हो न सके। ... भारत पहले फुल मून होता है, पीछे तो अंधियारा हो जाता है।''

सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

''परमात्मा के लिए मात-पिता का गायन भारत में ही होता है। ... मात-पिता अब दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ... कलियुग के अन्त में राजाई है नहीं। यह है पढ़ाई से राजाई। ... यह है पढ़ाई से राजाओं का राजा बनना। एक बाप ही है, जो राजाई पद के लिए राजयोग सिखाते हैं। ... गीता से तो राजाई पद मिलता है। ... जरूर भगवान ने विनाश के पहले पढ़ाया है, उसके बाद ही विनाश हुआ होगा, फिर राजयोग से सतयुग में राज्य पद पाया। यह है संगम।''

सा.बाबा 1.3.07 रिवा.

''ये बहुत गुप्त और गुह्य बातें हैं। गॉड फादर एडम और ईव के द्वारा कैसे सृष्टि रचते हैं। ... भारत को ही मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। ... जिस समय जिसका सेपलिंग लगना है, उसका लगता रहता है। ... भारत में देवी-देवतायें थे, अभी नहीं हैं, फिर जरूर देवी-देवतायें होंगे।''

सा.बाबा 1.3.07 रिवा.

''भारत पवित्र था तो सब सुखी थे, अभी तो सब दुखी हैं। नर्क में गोते खाते रहते हैं। ... स्वदर्शन चक्र अर्थात् ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानना। ... भारत का ही यह चक्र है। आदि से अन्त तक भारतवासियों का ही पार्ट है। भारत के दो युग पूरे होते हैं तब और धर्म आते हैं।''

सा.बाबा 5.3.07 रिवा.

''जितनी स्वयं में धारणा होगी, उतना औरों को भी करायेंगे। ... मुख से सदैव ज्ञान रतन निकालो। कोई भी संसार समाचार की बातें नहीं निकालो। नहीं तो मुख कडुवा हो जायेगा। ... भारत को महादानी कहा जाता है।''

सा.बाबा 12.3.07 रिवा.

''भारत का प्राचीन राजयोग तो मशहूर है। ... भारत का प्राचीन ज्ञान और योग तो सब चाहते हैं, जिससे भारत स्वर्ग बनता है। ... वह ज्ञान योग प्राय: लोप हो गया है। अगर लोप न हो तो परमात्मा फिर सुनाये कैसे ? मनुष्य पतित न बनें तो पतित-पावन बाप कैसे आये ?''

सा.बाबा 13.3.07 रिवा.

''भारत हीरे जैसा था, वह अब कौड़ी जैसा बन गया है। ... भारत ही असुल में प्राचीन खण्ड है, जहाँ केवल देवी-देवताओं का ही राज्य होता है, इसलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है।''

सा.बाबा 15.3.07 रिवा.

''बाप को सत्य कहा जाता है। वह सच खण्ड स्थापन करने वाला है। भारत ही सच-खण्ड था। उस समय भारत के सिवाए और कोई खण्ड नहीं था। ... इससे ही भारत स्वर्ग बनता है।''

सा.बाबा 16.3.07 रिवा.

''भारत का प्राचीन राजयोग तो मशहूर है। ... भारत का प्राचीन ज्ञान और योग तो सब चाहते हैं, जिससे भारत स्वर्ग बनता है। ... वह ज्ञान योग प्राय: लोप हो गया है। अगर लोप न हो तो परमात्मा फिर सुनाये कैसे ? मनुष्य पतित न बनें तो पतित-पावन बाप कैसे आये ?''

सा.बाबा 13.3.07 रिवा.

''भारत हीरे जैसा था, वह अब कौड़ी जैसा बन गया है। ... भारत ही असुल में प्राचीन खण्ड है, जहाँ केवल देवी-देवताओं का ही राज्य होता है, इसलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है।''

सा.बाबा 15.3.07 रिवा.

''बाप को सत्य कहा जाता है। वह सच खण्ड स्थापन करने वाला है। भारत ही सच-खण्ड था। उस समय भारत के सिवाए और कोई खण्ड नहीं था। ... इससे ही भारत स्वर्ग बनता है।''

सा.बाबा 16.3.07 रिवा.

''और धर्म वालों को स्वर्ग के सुख का मालूम नहीं है क्योंकि वे आते ही बाद में हैं। स्वर्ग में होते ही हैं भारतवासी। जो कल्प पहले देवता बनें होंगे, वे ही बनेंगे। ... हिन्दू कोई धर्म नहीं है। ... यह है ईश्वरीय मिशन। भारत के डूबे हुए बेड़े को सेलवेज़ करना है। भारत का बेड़ा रावण ने ड़बोया है, राम आकर पार करते हैं।''

सा.बाबा 18.3.07 रिवा.

''ब्रह्मा का पद विष्णु से ऊंचा है। जैसे ब्राह्मणों का पद देवताओं से भी ऊंचा है क्योंकि इस समय तुम रुहानी सोशल वर्कर हो। मनुष्य की रूह को पवित्रता, ज्ञान-योग का इन्जेक्शन लगाते हो। तुम ही इस भारत को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए बनाने वालों की महिमा जास्ती है।''

सा.बाबा 18.3.07 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। वर्ण भी भारत पर ही हैं। ... यह दिलवाला मन्दिर हू-ब-हू यादगार है। मम्मा भी है, बाबा भी है और बच्चे भी तपस्या कर रहे हैं। ... भारत को हेविन बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.3.07 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। वर्ण भी भारत पर ही हैं। ... यह दिलवाला मन्दिर हू-ब-हू यादगार है। मम्मा भी है, बाबा भी है और बच्चे भी तपस्या कर रहे हैं। ... भारत को हेविन बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.3.07 रिवा.

''भल क्रिश्चियन्स कितने भी पॉवरफुल हैं परन्तु वे विश्व के मालिक बनें - यह हो नहीं सकता। टुकड़े-टुकड़े पर राज्य है। पहले-पहले एक भारत ही सारे विश्व का मालिक था। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है कि भारतवासी ही विश्व के मालिक बनते हैं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। ... सब विनाश हो जायेगा। अभी तुम श्रीमत से राजाई ले रहे हो।''

सा.बाबा 20.3.07 रिवा.

''बापदादा अवतरित भी भारत में होते हैं और साथ-साथ अगर मिलने आते हैं तो भारत में ही आते हैं। तो डबल नशा है ना। भारत ने विदेश में भी अपने परिवार को ढूँढकर एक परिवार बना दिया, इसलिए भारतवासी बच्चों का सदा महत्व है और भारत का महत्व बढ़ना है तो भारतवासियों का महत्व तो है ही।''

अ.बापदादा 21.11.98

''भारतवासी तो हैं ही भाग्यवान क्योंकि भारत की धरनी ही भाग्यवान है। इसलिए चाहे विदेशी, चाहे भारतवासी दोनों ही भाग्य विधाता के बच्चे हैं।''

अ.बापदादा 31.12.98

''एशिया के कई भाग नई दुनिया में मिल जायेंगे, इसलिए आपकी धरनी एशिया की भाग्यवान है। ... ऐसे कोई माइक निकालो, जो आप माइट बन लाइट दो और वे लोग माइक बन भाषण करें, परिचय दें, अनुभव सुनायें। ... बेधड़क बनकर भाषण करे।''

अ.बापदादा 31.12.98

''भारतवासी बाप को भूल गये, जिस कारण आधा कल्प दुख भोगना पड़ा है। भूल निमित्त बनी है दुख भोगवाने के लिए। यह भी ड्रामा का पार्ट नूँधा हुआ है। ... ज्ञान को समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। ... जो किसको भी अच्छी रीति सिद्ध कर हिसाब-किताब बता सके।''

सा.बाबा 22.3.07 रिवा.

''अभी यह भारत कितना कंगाल है, देवाला मारा हुआ है। बाप कहते हैं - जब भारत की ऐसी हालत हो जाती है तब मैं आकर भारत को सोने की चिड़िया बनाता हूँ। ... तुम बच्चे श्रीमत पर स्वर्ग की राजधानी स्थापन कर रहे हो।''

सा.बाबा 23.3.07 रिवा.

''भारत का सबसे बड़ा दुश्मन रावण है। खेल ही सारा भारत पर बना हुआ है। सतयुग में रामराज्य और कलियुग में रावणराज्य होता है। ... यह भारत श्रेष्ठाचारी पावन था, जहाँ देवी-देवतायें राज्य करते थे। लक्ष्मी-नारायण और राम-सीता दोनों का राज्य था। ... कल्प पहले भारतवासियों ने राजाई ली थी, अब फिर से भारतवासियों को ही लेनी है।''

सा.बाबा 30.3.07 रिवा.

''भल जानते हैं भारत प्राचीन है परन्तु यथार्थ रीति तो भारतवासी खुद ही नहीं जानते तो औरों को क्या बतायेंगे। तुम बतला सकते हो - भारत जैसा पवित्र और मालामाल खण्ड और कोई हो नहीं सकता। ... भारत ही सर्व धर्मों का तीर्थ स्थान है। ... रुद्र ज्ञान यज्ञ मशहूर है, रुद्र की और सालिग्रामों की पूजा होती है। ... शिवबाबा और तुम बच्चों की पूजा होती है क्योंकि तुम सारी दुनिया को लिबरेट करते हो।''

सा.बाबा 6.4.07 रिवा.

''तुम जानते हो अभी तो भारत का बेड़ा डूबा हुआ है, बाप सेलवेज़ करने आये हैं। ... यह ड्रामा का चक्र है, जिसको अच्छी रीति समझना है। ... तुम जानते हो बाबा भारत में आया है, भारत को स्वर्ग बनाने।''

सा.बाबा 6.4.07 रिवा.

''यहाँ जो पूज्य बनते हैं, उनको ही पुजारी बनना है। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ... अब फिर ब्राह्मण बने हैं। यह वर्ण भारत के ही हैं और कोई तो इन वर्णों में नहीं आ सकते। तुम ही इन 5

वर्णों में चक्कर लगाते हो। ... यह ज्ञान मा तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों का ही खुलता है, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

''गीता में भगवानुवाच शब्द लिखा है, वह सत्य है परन्तु भगवान का नाम बदली कर दिया है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। ... भारत स्वर्ग था तो सच खण्ड था, सो अब झूठ खण्ड बना है। बाप समझाते हैं - ड्रामा अनुसार दिन प्रतिदिन दुख बढ़ता ही जायेगा।''

सा.बाबा 10.4.07 रिवा.

''मनुष्य भल कितनी भी घोर तपस्या करें, सिर काट कर रख दे, तो भी कुछ फायदा हो न सके। हर एक मनुष्य मात्र को तमोप्रधान जरूर बनना है। उसमें भी खास भारतवासी देवी-देवता धर्म वाले ही सबसे नीचे गिरे हुए हैं। ... भारत शिवालय था, देवी-देवताओं का राज्य था ... अब तो वेश्यालय में असुर विकारियों का राज्य है।''

सा.बाबा 12.4.07 रिवा.

''भारत शिवालय था, देवी-देवताओं का राज्य था ... ड्रामा अनुसार फिर इनको वेश्यालय से शिवालय बनना ही है। बाप समझाते हैं - सबसे जास्ती भारतवासी ही गिरे हैं ... अजामिल जैसे पापात्मा भी भारत में ही हैं ... मैं आकर उनको सम्पूर्ण सतोप्रधान बनाता हूँ।''

सा.बाबा 12.4.07 रिवा.

''वहाँ भी यह साइन्स सारी काम में आती है। ऐसे नहीं कि जमीन से कोई बैकुण्ठ निकल आयेगा। ... जो चीज समुद्र के नीचे जायेगी, वह तो गलकर खत्म हो जायेगी। सब कुछ नये सिर बनना है। ... प्राचीन ज्ञान और योग से भारत स्वर्ग बना था।''

सा.बाबा 18.4.07 रिवा.

''भारत पुण्यात्माओं, श्रेष्ठाचारियों की दुनिया थी, जिनके चित्र भी हैं। भारत सतयुग आदि में बहुत साहूकार था। ... सतयुग आदि में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। भारत महान ऊंच था, जब श्रेष्ठाचारी था। ... मैं कल्प-कल्प तुमको 100 परसेन्ट सालवेन्ट बनाता हूँ, फिर रावण तुमको इन्सालवेन्ट बना देते हैं।''

सा.बाबा 19.4.07 रिवा.

''दुनिया एक ही है, वही नई से पुरानी बनती है, फिर बाप आकर पुरानी को नई बनाते हैं। भारत ही स्वर्ग था, भारत ही नर्क है। ऐसे नहीं कि बौद्धी खण्ड, क्रिश्चियन खण्ड कोई स्वर्ग बनते हैं। ... मुख्य हीरो-हीरोइन का पार्ट तुम्हारा है।''

सा.बाबा 21.4.07 रिवा.

सारांश

भारत महान है और विश्व का आदि स्थान है। भारत की महानता का राज़ है कि परमपिता परमात्मा ने जो कल्प वृक्ष के बीजरूप हैं, उनका अवतरण भारत में होता है। परमात्मा अविनाशी हैं तो उनकी अवतरण भूमि भारत भी अविनाशी है अर्थात् इसका कभी भी पूर्ण विनाश नहीं होता अर्थात् भारत-भूमि पूरी जल-मग्न नहीं होती है। भारत में अवतरित होकर परमात्मा के द्वारा दी गई दिव्य शिक्षायें से ही सारे विश्व का कल्याण होता है। उनके द्वारा जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है, वह सभी धर्मों का आधार स्तम्भ है अर्थात् इस कल्प वृक्ष का तना है। परमपिता परमात्मा ने आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश की आत्माओं में श्रेष्ठ चरित्र का प्रत्यारोपण किया और उनमें पूर्वजपन की भावना जाग्रत की है, जिससे सारे कल्प-वृक्ष की पालना होती है। अन्य सभी धर्म पिताओं ने भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मा के शरीर में प्रवेश करके ही अपने धर्म की स्थापना की और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं ने उस धर्म में परिवर्तित होकर उस धर्म की वृद्धि में सहयोग दिया। वास्तव में हर धर्म की आदि भारत देश और आदि सनातन देवी-देवता धर्म से ही हुई। कल्प-वृक्ष को देखें तो कल्प वृक्ष के आदि सनातन देवी-देवता धर्म रूपी तने से ही अन्य सभी धर्म रूपी शाखायें निकली हैं।
जब परमात्मा भारत को स्वर्ग बनाता है तो भारत में प्रकृति द्वारा सर्व प्राप्तियां होना स्वभाविक हैं। इसलिए प्रकृति दासी बन जाती है।

अन्य देश-धर्मों में जन्मी आत्मायें जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की हैं, वे सभी अन्त समय में इसी देह के साथ या ये देह त्याग कर पुनर्जन्म में भारत में आनी ही हैं।

भारत के लोगों के समान चरित्र, आध्यात्मिकता, व्यवहार, सामाजिकता अन्य किसी देश-धर्म के लोगों में न है और न ही हो सकती है और भला हो भी कैसे सकती है क्योंकि भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा ने की और भारत ही आदि सभ्यता का मूल है, भारत के लोग ही सर्व मानव जाति के पूर्वज हैं और ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है तो विविधता अवश्य सम्भावी है। भारत ही स्वर्ग बनता है, जहाँ आदि में सभी मनुष्यात्मायें भी सतोप्रधान होंगी और प्रकृति भी सतोप्रधान होगी। फिर भारत ही पूरा नर्क भी बनता है अर्थात् आत्मिक गुणों का ह्रास भी यहाँ की आत्माओं में ही होता है।

इस वरदानी भूमि में जन्म लेना महान सौभाग्य और गौरव की बात है। ये एक विशेष स्वमान है, शान है। किसी भी देश में जन्म लिया हो परन्तु परमात्मा को पहचान कर संगम युग पर परमात्मा के इस दिव्य कार्य में सहयोग करके इस वरदानी भूमि में जन्म लेने अधिकार प्राप्त कर

लेना भी बड़ा भाग्य है, आत्माओं का स्वमान है। वे आत्मायें भी परमात्मा की अनुकम्पा के पात्र हैं।

भारत सर्व धर्म वालों के लिए अविनाशी तीर्थ है क्योंकि सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की जन्मभूमि है, जहाँ अवतरित होकर परमात्मा ने सर्व आत्माओं का कल्याण किया।

''पोप कभी बाहर नहीं निकला था, अभी आया। सब धर्म वाले आयेंगे क्योंकि यह भारत सभी धर्म वालों का बहुत बड़े ते बड़ा तीर्थ है। ... ये त्योहार आदि भी सब भारत के हैं। यह किसके और कब के हैं - यह कोई जानते नहीं।''

सा.बाबा 6.11.03 रिवा.

''भारत की महिमा की जाती है कि भारत अविनाशी तीर्थ है। कैसे ? तीर्थ तो भक्ति मार्ग में होते हैं तो इनको अविनाशी तीर्थ कैसे कह सकते हैं ? ... सतयुग-त्रेता में भी तीर्थ है, जहाँ चेतन्य देवी-देवता रहते हैं। ... भारत है अविनाशी खण्ड। बाकी सब खण्ड विनाश हो जाते हैं। ... शिवबाबा अभी है। अभी की ही सारी महिमा है। शिवबाबा का यह बर्थप्लेस है। ब्रह्मा का भी बर्थप्लेस हो गया।''

सा.बाबा 3.11.03 रिवा.

देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर, ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा के साथ साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो तो ये विश्व-नाटक परम अद्भुत, परम सुखमय अनुभव होगा और ये संगमयुगी जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा। ये परम सौभाग्य भारतवासी बच्चों अर्थात् आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं को ही प्राप्त होता है, जो अभी प्राप्त है।

''ज्ञान सागर और ज्ञान गंगायें इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं। बस, एक ही समय पर होते हैं। ज्ञान सागर आते ही हैं कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। ज्ञान सागर है निराकार परमपिता परमात्मा शिव। ... भारत हीरे मिसल था, अभी फिर क्या हुआ है। भारत तो वो ही होगा ना। इस संगम को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है।''

सा.बाबा 7.2.04 रिवा.

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org